BPSC-105

तुलनात्मक सरकार और राजनीति का परिचय

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विषेषज्ञ समिति

प्रो. दरवेश गोपाल **(अध्यक्ष)** राजनीति विज्ञान संकाय सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली	प्रो. अब्दुल नफे (अव. प्रा.) अमेरिका, लैटिन अमेरिका और कनाडा अध्ययन केन्द्र, अर्न्तराष्ट्रीय अध्ययन विद्यापीठ, जे एन यू, नई दिल्ली	प्रो. आर. एस. यादव (अव. प्रा.) राजनीति विज्ञान संकाय कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा
प्रो. ए. पी. बीजापुर (अव. प्रा.) राजनीति विज्ञान संकाय अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश	प्रो. पी. सहदेवन दक्षिण एशिया अध्ययन केन्द्र, अर्न्तराष्ट्रीय अध्ययन विद्यापीठ, जे एन यू, नई दिल्ली	प्रो. अनुराग जोशी राजनीति विज्ञान संकाय सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली
प्रो. जगपाल सिंह राजनीति विज्ञान संकाय सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली		प्रो. एस. विजयशेखर रेड्डी **(पाठ्यक्रम संयोजक)** राजनीति विज्ञान संकाय सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल

इकाई 1	राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की प्रकृति, क्षेत्र और उपयोगिता*	प्रो. उज्जवल कुमार सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 2	तुलनात्मक विधि और तुलना की कार्यनीतिया*	प्रो. अनुपमा रॉय, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, जे एन यू, नई दिल्ली
इकाई 3	संस्थागत दृष्टिकोण*	प्रो. अनुपमा रॉय, राजनीतिक अध्ययन केन्द्र, जे एन यू, नई दिल्ली
इकाई 4	व्यवस्थागत दृष्टिकोण *	डॉ. एन. ऊी. अरोरा, डी ए वी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 5	राजनीतिक अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण *	प्रो. उज्जवल कुमार सिंह, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 6	पूँजीवाद और उदार लोकतंत्र का विचार	डॉ संहिता जोशी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति और नागरिकशास्त्र विभाग, मुंबई विश्वविद्याालय, विद्यानगरी परिसर, मुंबई
इकाई 7	समाजवाद और समाजवादी राज्य की कार्यप्रणाली	डॉ. किशोरचन्द नौंइगथम, कंसन्लटेन्ट,राजनीति विज्ञान संकाय,सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली
इकाई 8	उपनिवेशवाद और विकासशील विश्व में राज्य**	प्रो. रमा मलकोटी, राजनीति विज्ञान संकाय, ओसमानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना
इकाई 9	यूनाइटेड किंगडम में संसदीय वर्चस्व और कानून का शासन	डॉ. अनामिका अस्थाना, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जीसस एंड मैरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 10	ब्राजील में निर्भरता और विकास	डॉ अतुल कुमार वर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जूभैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज, यू.पी. और डॉ. विकास चन्द्रा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, यू. पी.
इकाई 11	संघवाद पर तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य – ब्राजील और नाइजीरिया	सुश्री सुरभि राव, सीनियर रिसर्च फैलो, (वरिष्ट शोध अध्येता) राजनीति विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली
इकाई 12	चीन में साम्यवादी पार्टी की भूमिका	डॉ. किशोरचन्द नौंइगथम, कंसन्लटेन्ट,राजनीति विज्ञान संकाय,सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

* मूलतः EPS-09 तुलनात्मक सरकार और राजनीति के लिए लिखित।

** मूलतः EPS-07 अर्न्तराष्ट्रीय संबंध के लिए लिखित।

पाठ्यक्रम संयोजक और संपादक

प्रो. एस. विजयशेखर रेड्डी
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू,
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

पुनरीक्षण :
डॉ सौरभ,
दक्षिण एशिया अध्ययन केन्द्र,
अर्न्तराष्ट्रीय अध्ययन विद्यापीठ,
जे एन यू, नई दिल्ली

अनुवादक मंडल
डॉ. योगम दत्ता
(इकाई 1 से 2),
डॉ. प्रदीप टंडन (इकाई 3 से 9),
डॉ आकांक्षा बंसल (इकाई 10 से 12)

मुद्रण सहयोग
सुश्री पूनम चढ़्ढ़ा, अनुभाग अधिकारी,
कार्यपालक (डीपी),
सा.वि.वि., इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

कार्यालयी सहयोग
श्री राकेश चन्द्र जोशी, सहायक
सा.वि.वि., इग्नू,
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री राजीव गिरधर
सहायक कुल सचिव (प्रकाशन)
सा.नि. एवं वि. प्र. इग्नू, नई दिल्ली

श्री हेमन्त परीदा
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
सा.नि. एवं वि. प्र. इग्नू, नई दिल्ली

जून,, 2021

©इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021

ISBN-

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

मानविकी विद्यापीठ एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कंम्प्यूटर्स, सी–206, शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली

मुद्रक :

पाठ्यक्रम का परिचय

'तुलनात्मक सरकार और राजनीति' राजनीति विज्ञान के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उप–क्षेत्र है। इस उप–क्षेत्र को राजनीतिक सिद्धांत या अंतर्राष्ट्रीय संबंधों जैसे अन्य विषय क्षेत्रो से क्या बातें अलग करती है, इसके तुलनात्मक अध्ययन पर जोर दिया जाता है। लेकिन एक विधि के रूप में इसकी तुलना न तो नई है (जैसा कि अरस्तू के समय से यह पाठ्य विषय–वस्तु के केंद्र में रहा है) और न ही राजनीति विज्ञान के लिए अद्वितीय है (जैसा कि सामाजिक विज्ञान और मानविकी में कई अध्ययन के विषयों में इस पद्धति को अपनाया गया है)। तुलनात्मक अध्ययनों में विशेषज्ञता रखने वाले इस बात पर जोर देते है कि तुलना करना मानव विचार के लिए मौलिक है तथा यह कि किसी भी चीज की तुलना के बिना वर्णन या व्याख्या करना बहुत मुश्किल है। तुलना के स्पर्श–सूत्रों को बचाना मुश्किल है–अन्य समान राजनीतिक अभिनेताओं, संरचनाओं, संस्थानों, विचारों आदि या उनके अतीत के साथ तुलना करना। इस पाठ्यक्रम की परिचयात्मक इकाईयां राजनीति और सरकार के तुलनात्मक अध्ययन करने में अस्पष्टताएं, चूकों और चुनौतियों को लाती है। लेकिन इससे हमें तुलना करने से नहीं रूकना चाहिए। आखिरकार, स्वयं का ज्ञान दूसरों के ज्ञान के माध्यम से प्राप्त होता है। तुलनात्मक सरकार एवं राजनीति के इस परिचयात्मक पाठ्यक्रम में सरकार और राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन में इसके कुछ प्रमुख मुद्दों, कार्यप्रणाली और तुलनात्मक विश्लेषण के क्षेत्रों को स्पर्श करेगा। यह आपको तुलनात्मक राजनीति में कुड महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों और तरीकों से परिचित कराएगा। दूसरे, राजनीतिक और आथिक प्रणालियों के बढ़ते एकीकरण को देखते हुए, उस संदर्भ को समझना महत्वपूर्ण हो जाता है जिसमे आधुनिक सरकारें कार्य करती है। इस पहलू का दूसरा खंड, पूंजीवादी, समाजवादी और विकासशील दुनिया में राज्यों के कार्यो से संबंधित है। तीसरे खंड में, हम आधुनिक सरकारों के विशिष्ट संस्थानों और संरचनाओं की जांच करते है, जिन्हें आमतौर पर संविधान की प्रकृति, राज्य के अंतर्गत शक्ति के केंद्रीयकरण एवं वितरण की स्थिति, कार्यपालिका के साथ विधायिका के संबंध, नागरिकों की स्वतंत्रता की प्रकृति, सीमाएं और विस्तार, एक राजनीतिक प्रणाली के अंतर्गत मौजूदा राजनीतिक दलों की संख्या और नागरिकों की सहभागिता। यह पाठ्यक्रम एक पूंजीवादी लोकतंत्र प्रणाली (यूनाइटेड किंगडम), एक केंद्रीय रूप से नियोजित समाजवादी प्रणाली (पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना), एक औद्योगिकृत समाज (ब्राजील) और एक विकासशील देश (नाइजीरिया) के प्रकरण अध्ययन के साथ वर्गीकरण के प्रत्येक विषय को जोड़ता है।

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के पश्चात, आपको तुलनात्मक राजनीति की प्रमुख अवधारणाओं, सिद्धांतो और विधियों को समझने में सक्षम होना चाहिए, इन अवधारणाओं, सिद्धांतो एवं विधियों का तुलनात्मक राजनीति में उपयोग करते हुए राजनीतिक सत्ताओं, सरकारो, राजनीतिक संस्थानों और राज्यों का विश्लेषण करें।

इस पाठ्यक्रम की सभी इकाइयों में एक समान संरचना है। प्रत्येक इकाई उद्देश्यों से आरम्भ होती है, जो आपको यह जानने में मद्द करती है कि आपसे प्रत्येक इकाई से क्या सीखने की उम्मीद की जाती है। कृपया इन उद्देश्यों को ध्यान से पढ़े। उन्हें इकाई के प्रत्येक अनुभाग को पढ़ने के बाद प्रतिबिंबित और जांचते रहें। प्रत्येक इकाई अच्छे से समझी जा सके इसलिए उसे वर्गो और उप–वर्गो में विभाजित किया गया है। इन वर्गो के बीच में, आपकी प्रगति की जांच हेतु कुछ अभ्यास दिए गए है। हम आपको सलाह देते है कि जब आप उन तक पहुंचे, तो उसे करने का प्रयास करें। इससे आपको अध्ययन करने में और अध्ययन किए गए विषय में आपकी समझ का परीक्षण करने में मद्द मिलेगी। हालांकि, इस पाठ्यक्रम में इकाईयों को सावधानीपूर्वक रूपांकित (डिज़ाइन) किया गया है और विशेषज्ञों द्वारा लिखा गया हैं, लेकिन फिर भी हमारा कहना है कि इकाईयां व्यापक नहीं है। इसलिए इस पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों की गहन समझ के लिए, आपको इस पाठ्यक्रम की पुस्तक के अंत में सुझाई गई पुस्तकों, अध्यायों और लेखों को पढ़ने की सलाह दी जाती है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्य–सामाग्री

खण्ड 1	**तुलनात्मक राजनीति का समझ**	**9**
इकाई 1	राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की प्रकृति, क्षेत्र और उपयोगिता	13
इकाई 2	तुलनात्मक विधि और तुलना की कार्यनीतियाँ	32
इकाई 3	संस्थागत दृष्टिकोण	47
इकाई 4	व्यवस्थागत दृष्टिकोण	62
इकाई 5	राजनीतिक अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण	78
खण्ड 2	**आधुनिक सरकारों का संदर्भ**	**85**
इकाई 6	पूंजीवाद और उदार लोकतंत्र का विचार	97
इकाई 7	समाजवाद और समाजवादी राज्य की कार्यप्रणाली	111
इकाई 8	उपनिवेशवाद और विकासशील दुनिया में राज्य	127
खण्ड 3	**तुलनात्मक विश्लेषण की विषय वस्तु**	**141**
इकाई 9	यूनिइटेड किगंडम में संसदीय बर्चस्व और कानून का शासन	143
इकाई 10	ब्राजील में निर्भरता और विकास	159
इकाई 11	संघवाद पर तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य – ब्राजील और नाईजीरिया	174
इकाई 12	चीन में साम्यवादी पार्टी की भूमिका	190
अध्ययन सामाग्री		207

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खण्ड 1

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

तुलनात्मक राजनीति का समझ

किसी भी परिघटना के बारे में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करने के लिए तुलना संभवतः सबसे पुरानी और व्यापक रूप से उपयोग में लाई जानेवाली प्रविधि है। हम अपने रोजमर्रा के जीवन में भी इसका प्रयोग हर समय करते है। उदाहरण के लिए जब हम यह कहते है कि अमेरिका भारत से ज्यादा विकसित है या अमेरिका का राष्ट्रपति भारत के राष्ट्रपति से ज्यादा शक्तिशाली है या पाकिस्तान भारत की अपेक्षा कम जनतांत्रिक तथा कम धर्म निरपेक्ष है या ब्रिटिश दलीय व्यवस्था, फ्रांसीसी दलीय व्यवस्था से भिन्न है तो वस्तुतः हम तुलनात्मक प्रविधि ही अपना रहे होते है। इसी प्रकार जब हम अमेरिका की राष्ट्रपति प्रणाली सरकार और ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली सरकार का अंतर बताते हैं तो उसमें भी तुलनात्मक प्रविधि का ही उपयोग कर रहे होते है। इस प्रविधि का प्रयोग सबसे पहले अरस्तु ने किया था जिन्होंने लगभग 2300 वर्ष पहले अपने समय के राज्यों (सरकारों) का तुलनात्मक अध्ययन कर सर्वोत्तम या आदर्श राज्य का पता लगाने की कोशिश की थी। उसके बाद से तुलनात्मक प्रविधि लगातार व्यापक और परिष्कृत होती चली गई। वस्तुतः समय के साथ–साथ नए–नए तरीके सामने आए और राजनैतिक व्यवस्थाओं की तुलना करने के अधिक परिष्कृत तरीके सामने आए। मोटे तौर पर तुलनात्मक राजनीति में तुलनात्मक प्रविधि के उपयोग के तीन प्रमुख घटक हैं जो एक दूसरे से जुड़े हैंः क) हम किस चीज की तुलना करते हैं ? ख) हम किस प्रकार तुलना करते है ? ग) हम क्यों तुलना करते हैं ? इस खंड की 5 इकाइयों में इन तीन प्रश्नों या तुलनात्मक राजनीति में तुलनात्मक प्रविधि के आयामों पर विचार किया गया है।

पहले प्रश्न, हम तुलना क्यों करते हैं ? में आपको तुलनात्मक राजनीति के कार्य क्षेत्र और तुलनात्मक प्रविधि की प्रकृति और कार्य क्षेत्र की जानकारी प्राप्त होगी। खंड की पहली दो इकाइयों में इसी पक्ष पर विचार किया गया है।

दूसरे प्रश्न, हम किस प्रकार करते है? में विभिन्न दृष्टिकोणों की चर्चा की गई है। उदाहरण के लिए हम दो या दो से अधिक देशों के सविधानों या पद्धतियों और उनकी सरकारों की तुलना कर सकते हैं या हम उनकी राजनैतिक संस्थाओं (विधायिका, कार्यकारी और न्यायपालिका आदि) की तुलना कर सकते है या उनकी राजनैतिक प्रक्रियाओं और राजनैतिक व्यवहारों की तुलना कर सकते हैं और यह देख सकते है कि उनकी राजनैतिक संस्थाएं वस्तुतः किस तरह काम करती हैं। हम उनकी दलीय व्यवस्थाओं और उनके दबाव समूहों की प्रकृति और भूमिका की भी चर्चा कर सकते हैं। विभिन्न राजनैतिक व्यवस्थाओं के बीच होनेवाले सम्पर्कों की पहचान कर हम विभिन्न राजनैतिक व्यवस्थाओं की तुलना भी कर सकते हैं। हम उनकी राजनैतिक संस्कृतियों, राजनैतिक समाजीकरण के तत्वों, उनके हितों की पूर्ति के तरीकों और राजनैतिक नियुक्ति की उनकी शैलियों और निर्णय लेने के उनके तरीकों की भी तुलना कर सकते हैं। इसी प्रकार हम विभिन्न देशों के समाजों के वर्गीय ढांचे का विश्लेषण कर उन देशों की राजनीति की तुलना कर सकते हैं। हम उत्पादन के तरीकों

(सामंती, पूंजीवादी आदि) की भी तुलना कर सकते हैं। इससे हमें उनके राजनैतिक संभ्रांतों (शासक) की वर्गीय प्रकृति और राजनीतिक व्यवस्थाओं के प्रति समर्पित उनकी राजनैतिक विचारधारा (रूढ़िवादी, उदारवादी या परिवर्तनवादी) की जानकारी भी मिल सकती है।

इकाई 3, 4 और 5 में इन्हीं प्रश्नों पर विचार किया गया है।

इकाई 3 में संस्थागत दृष्टिकोण, इकाई 4 में व्यवस्था दृष्टिकोण और इकाई 5 में राजनैतिक अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण की चर्चा की गई है। इन तीनों दृष्टिकोणों में अलग अलग विषयों की तुलना की गई है। संस्थागत दृष्टिकोण में जहां राजनैतिक संस्थाओं की तुलना की गई है वहीं व्यवस्था दृष्टिकोण में प्रक्रियाओं और अन्तर्कियाओं पर बल दिया गया है तथा राजनैतिक अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण में आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था के सम्पर्क सूत्रों को तलाशने की कोशिश की गई है। दूसरे शब्दों में यहां यह बताया गया है कि उत्पादन के तरीके और समाज का वर्गीय चरित्र किस प्रकार सरकार चलाने के तरीकों को प्रभावित करता है। तुलनात्मक प्रविधि में तीसरा प्रश्न यह आता है कि हम तुलना क्यों करते है ? इस प्रश्न पर विचार करते समय हमारे सामने यह बात आएगी कि कैसे प्रत्येक दृष्टिकोण हमारी समझ को विकसित करने में मदद करता है। इसी के साथ हमे प्रत्येक दृष्टिकोण की उपयोगिता और इसकी सीमाओं के बारे में भी पता चलता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की प्रकृति, विषय क्षेत्र और उपयोगिता

संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 राजनीति का तुलनात्मक अध्ययनः प्रकृति और विषय -क्षेत्र

1.2.1 तुलनाएँ : संबंधों की पहचान

1.2.2 तुलनात्मक राजनीति और तुलनात्मक सरकार

1.3 तुलनात्मक राजनीति : एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन

1.3.1 राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की उत्पत्ति

1.3.2 उन्नीसवीं सदी का अन्त और बीसवीं सदी का प्रारंभ

1.3.3 द्वितीय विश्व युद्ध और उसके पश्चात्

1.3.4 1970 का दशक और विकासवाद की चुनौतियाँ

1.3.5 1980 का दशक : राज्य की वापसी

1.3.6 बीसवीं सदी का अंत : वैश्वीकरण और उभरती प्रवृत्तियाँ/संभावनाएँ

1.4 राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन : उपयोगिता

1.4.1 सैद्धांतिक सूत्रीकरण के लिए तुलना

1.4.2 वैज्ञानिक कठोरता के लिए तुलनाएँ

1.4.3 तुलनाएँ जो संबंधों में व्याख्याओं की ओर ले जाएँ

1.5 सारांश

1.6 मुख्य शब्द

1.7 संदर्भ

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

हम अक्सर जाने-अनजाने, अपनी तुलना दूसरों से करते हैं ; दूसरे क्या सोचते हैं, वे क्या करते हैं या कैसे जीते हैं इत्यादि। दूसरों के साथ-तुलना और अपने चारों ओर की वस्तुओं की तुलना करना हमें दूसरों के व्यवहार के संदर्भ में अपने खुद के व्यवहार को और गहराई से समझने में सक्षम बनाता है। इस प्रकार की तुलना की प्रक्रिया काफी हद तक हमारी निजता को रुप देती है। इस प्रकार की तुलना की प्रक्रिया सामूहिक स्तर पर भी घटित होती है। राजनीति विज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत, राष्ट्रों के आर-पार विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों, संस्थाओं, प्रक्रियाओं, गतिविधियों आदि की तुलना के क्रियाकलाप में हम हिस्सा लेते है।

इस प्रारंभिक इकाई को इस उद्देश्य से बनाया गया कि हम राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के बारे में सैद्धांतिक और विधि-तांत्रिक दृष्टि से जानकारी प्राप्त कर सकें। इस इकाई में हम राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के प्रधान

पहलुओं –प्रकृति, विषय क्षेत्र और उपयोगिता – पर ध्यान केंद्रित करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे

- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के अर्थ और विषय क्षेत्र की व्याख्या
- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की प्रमुख अवधारणाओं की परिभाषा और वर्णन
- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के उद्देश्य की व्याख्या
- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के महत्व/लाभ और प्रासंगिकता की व्याख्या
- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि/विकास का वर्णन
- राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन में प्रयोग की जाने वाली मुख्य अवधारणाओं की पहचान और व्याख्या

1.1 प्रस्तावना

राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन का संबंध राजनीतिक परिघटनाओं की तुलना से है। तुलनात्मक राजनीति का मूल उद्देश्य विश्व के देशों के बीच मुख्य राजनीतिक समानताओं और भिन्नताओं को सम्मिलित करना है। बल इस बात पर दिया जा रहा है किस प्रकार विभिन्न समाज दूसरों के साथ तुलना के माध्यम से विविध समस्याओं का सामना करते हैं। यद्यपि 'तुलनात्मक पद्धतियाँ' और 'तुलनाओं की विधियाँ' अन्य विषयों में भी व्यापक रुप से प्रयोग की जाती हैं, उदाहरण के लिए, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र इत्यादि, परन्तु तुलनात्मक राजनीति का तत्व है – अर्थात् उसकी विषय -वस्तु, शब्दावली, परिप्रेक्ष्य, और अवधारणाएँ – जो तुलनात्मक राजनीति को दोनों प्रकार से उसकी विशिष्टता प्रदान करता है, एक 'पद्धति' के रुप में भी और 'तुलनात्मक राजनीति' के अध्ययन के एक रुप उप-क्षेत्र के रुप में भी।

तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति और विषय -क्षेत्र का ऐतिहासिक दृष्टि से निर्धारण (क) विषय -वस्तु (ख) शब्दावली और (ग) राजनीति परिप्रेक्ष्य में परिवर्तनों द्वारा हुआ है। ये समझने के लिए कि ये परिवर्तन कहाँ, क्यों और कैसे हुए, हमें ये देखना होगा कि एक निश्चित ऐतिहासिक काल में, अध्ययन का केन्द्र क्या है, अध्ययन के लिए किन उपकरणों, भाषाओं या अवधारणाओं का प्रयोग हो रहा है और अन्वेषण का प्रेक्षण स्थल, परिप्रेक्ष्य और उद्देश्य क्या है। अतः आगामी खंडों में, हम तुलनात्मक राजनीति के विकास के तरीके, इस विकास को अनुप्राणित करने वाली निरंतरताओं और विछिन्नताओं, जिन तरीकों से विशिष्ट ऐतिहासिक संदर्भों में और सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक बलों द्वारा इस विकास का निर्धारण हुआ है, और किस प्रकार बीसवीं सदी के अन्त के प्रसगं में, अर्थात् वैश्वीकरण के प्रसंग में, तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र के बारे में अब तक किए गए विचारों के तरीके में आमूल परिवर्तन लाए गए हैं, इन सब पर विचार करेंगे।

1.2 राजनीति का तुलनात्मक अध्ययनः प्रकृति और विशय -क्षेत्र

राजनीति का तुलात्मक अध्ययन : प्रकृति और विषय क्षेत्र जैसा कि हमने देखा, तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग सामान्य रुप से अन्य विषयों में भी किया जाता है और तुलनात्मक राजनीति की विशिष्ट विषय-वस्तु, भाषा और परिप्रेक्ष्य वो तत्व हैं जो उसे उन अन्य विषयों से स्पष्टतया अलग करते हैं जो तुलनात्मक पद्धतियों का प्रयोग करते है। ऐसी स्थिति में, ये प्रश्न पूछा जा सकता है कि क्या तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण का एक विशिष्ट क्षेत्र है या वह राजनीति विज्ञान के विस्तृत अध्ययन विषय में शामिल किया गया एक उप-अध्ययन विषय है। हमें यह याद रखना होगा कि विषय -वस्तु के तीन पहलू, भाषा, शब्दावली और परिप्रेक्ष्य राजनीति विज्ञान के व्यापक अध्ययन विषय के अन्तर्गत तुलनात्मक राजनीति की विशिष्टता को स्थापित करने के लिए अपर्याप्त हैं, मुख्यतः इसलिए क्योंकि तुलनात्मक राजनीति, राजनीति शास्त्र के विषय -वस्तु और चिंताओं में भागीदार है, जैसे, लोकतंत्र, संविधान, राजनीतिक दल, सामाजिक आन्दोलन इत्यादि। इस प्रकार, राजनीति विज्ञान के अध्ययन विषय के अन्तर्गत, तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण की विशिष्टता निर्दिष्ट होती है उसके द्वारा सचेत रुप से तुलनात्मक पद्धति के प्रयोग द्वारा उन प्रश्नों का उत्तर देने में जिनमें राजनीति वैज्ञानिकों की सामान्य दिलचस्पी हो सकती है।

1.2.1 तुलनाएँ : संबंधों की पहचान

तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण के चरित्र और विषय क्षेत्र को परिभाषित करने में तुलनात्मक पद्धति पर कुछ विद्वानों द्वारा यह बल दिया जाना, इस दृष्टि से कायम रखा गया है ताकि 'बाहरी देशों' या 'विदेशों' के अध्ययन के रुप में तुलनात्मक राजनीति से संबंधित लगातार गलतफहमियों को दूर किया जा सके। इस प्रकार की व्याख्या के अन्दर, यदि आप अपने से अलग किसी अन्य देश का अध्ययन कर रहे हों (उदाहरण के लिए, एक अमेरिकन ब्राज़ील की राजनीति का अध्ययन कर रहा हो अथवा एक भारतीय श्रीलंका की राजनीति का अध्ययन कर रहा हो) तो आपको एक तुलनावादी कहा जाएगा। आमतौर पर, इस गलतफहमी का अर्थ केवल व्यक्तिगत राष्ट्रों के बारे में सूचना एकत्रित करना होता है जिसमें तुलना थोड़ी ही मात्रा में या अधिक से अधिक अंतर्निहित होती है। अधिकांश तुलनावादी ये तर्क देंगे कि तुलनात्मक राजनीति की विशिष्टता उसके द्वारा दो या अधिक राष्ट्रों के अध्ययन के लिए तुलनाओं के एक सचेत और व्यवस्थित प्रयोग में है, जिसका उद्देश्य विश्लेषण की जा रही निश्चित परिघटनाओं के संबंध में उनके बीच भिन्नताओं या समानताओं की पहचान करना और अंततः उनकी व्याख्या करना है। एक लम्बे समय तक तुलनात्मक राजनीति मात्र समानताओं और भिन्नताओं को खोजती नज़र आई, और इसे उसने राजनीतिक परिघटनाओं का वर्गीकरण करने, द्विभाजित करने और ध्रुवित करने की ओर संचालित किया। परन्तु तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण केवल समानताओं और भिन्नताओं की पहचान करना नहीं है। अनेक विद्वानों का मानना है कि तुलनाओं के प्रयोग का उद्देश्य समानताओं और भिन्नताओं अथवा तुलना और विषमता उपागम के पार जाते हुए, अन्त में संबंधों के एक विस्तृत ढाँचे में राजनीतिक परिघटनाओं का अध्ययन करना है। ऐसा माना जाता है कि यह हमारी समझ की और गहन

करने में मदद करेगा और राजनीतिक परिघटनाओं का उत्तर देने और व्याख्या करने के स्तरों का विस्तार करेगा (मोहन्ती, 1975)।

1.2.2 तुलनात्मक राजनीति और तुलनात्मक सरकार

रॉनल्ड चिलकॉट का दावा है कि संकल्पनात्मक उलझन के कारण, इस धारणा का अक्सर, सामना करना पड़ता है कि तुलनात्मक राजनीति का संबंध सरकारों के अध्ययन से है। तुलनात्मक सरकार से भिन्न, जिसका क्षेत्र सरकारों के तुलनात्मक अध्ययन तक सीमित है, तुलनात्मक राजनीति का संबध सभी प्रकार की राजनीतिक गतिविधि के अध्ययन से है, सरकारी और गैर-सरकारी भी। तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र की एक 'सर्व-सम्मिलित' प्रकृति है और तुलनात्मक राजनीति के विशेषज्ञ, वह सब कुछ जो राजनीतिक है, उसके अध्ययन के रुप में इसे देखते हैं। तुलनात्मक राजनीति की इससे लघु संकल्पना, इस क्षेत्र के अन्तर्गत अध्ययन से संबंधित चयन और अपवर्जन के मानदंडों को धुंधला कर देगी। (चिलकॉट, 1994 :4)

ये फिर भी कहा जा सकता है कि एक लंबे समय तक तुलनात्मक राजनीति ने अपने आपको सरकारों और शासन प्रणालियों के प्रकार से संबंधित रखा और पश्चिमी देशों के अध्ययन तक सीमित रखा। विउपनिवेशीकरण की प्रक्रिया ने, विशेष रुप से द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरुप, 'नए राष्ट्रों' के अध्ययन में रूचि उत्पन्न की। तुलना के संम्पूर्ण विस्तार के अन्दर जिन इकाइयों/केस को लाया जा सकता था, उनकी संख्या और विविधता में वृद्धि के साथ-साथ सभी इकाइयों में राजनीतिक परिघटनाओं और प्रक्रियाओं की व्याख्या करने वाले भावात्मक सर्वदेशीय प्रतिमानों को सूत्रबद्ध करने का आग्रह भी जुडा। लगभग इसी समय, अध्ययन के मामलों में वृद्धि और विविधता के साथ, राजनीति के क्षेत्र में भी एक विस्तार हुआ, जिसने एक सम्पूर्ण प्रणाली के रुप में राजनीति के परीक्षण का प्रबन्ध किया जिसमें न केवल राज्य और उसकी संस्थाएँ, बल्कि व्यक्ति, सामाजिक समूहीकरण, राजनीतिक दल, हित समूह, सामाजिक आन्दोलन इत्यादि भी शामिल किए गए। राजनीतिक प्रक्रियाओं की व्याख्या के कुछ पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया गया, उदाहरण के लिए, राजनीतिक सामाजीकरण, राजनीतिक संस्कृति के प्रतिरुप, हित अभिव्यक्ति की क्रियाविधियाँ और हित सामूहीकरण, राजनीतिक भर्ती की शैलियाँ, राजनीतिक प्रभावोत्पादकता और राजनीतिक उदासीनता की सीमा, सत्तारूढ़ अभिजातवर्ग इत्यादि। इप व्यवस्थित अध्ययनों का निर्माण अवसर राष्ट्र-निर्माण की चिन्ता के इर्द-गिर्द किया जाता था, अर्थात् एक जनता के लिए राजनीतिक-सांस्कृतिक पहचान की उपलब्धि करना, राज्य -निर्माण, अर्थात् राजनीति के लिए संस्थात्मक ढाँचे और प्रक्रियाओं की उपलब्धि करना और आधुनिकीकरण अर्थात् विकास के पाश्चात्य मार्ग की दिशा में परिवर्तन की एक प्रक्रिया को प्रवर्तित करना। विश्व राजनीति में विचारधाराओं के भिन्न ध्रुवों नव-स्वतंत्रता प्राप्त राष्ट्रों द्वारा पश्चिमी साम्राज्यवाद की अस्वीकृति, इन राष्ट्रों की अपनी विशिष्ट पहचान को कायम रखने की चिन्ता (जो गुट-निरपेक्ष आन्दोलन के उदय में सुस्पष्ट रुप से प्रतिबिंबित है) और विकास के समाजवादी मार्ग के प्रति अधिकांश राष्ट्रों में सहानुभूति ने धीरे-धीरे वैश्विक/व्यापक स्तरीय तुलनाओं के उद्देश्यों के लिए अधिकांश आधुनिकीकरण प्रतिमानों को अप्रासंगिक बना दिया। जहाँ एक ओर

पचास (1950) और आठ (1960) का दशक वो काल था जहाँ बड़े पैमाने के प्रतिमानों के निर्माण द्वारा राजनीतिक यथार्थ की व्याख्या करने का प्रयास किया गया, वहीं, सत्तर (1970) के दशक ने तृत्तीय विश्ववाद के दावे और इन प्रतिमानों के पीछे हटने को देखा। फिर अस्सी (1980) के दशक में हमने संकीर्ण और छोटी इकाइयों में तुलना के स्तर में संकुचन को देखा। परन्तु, वैश्वीकरण के साथ, व्यापक स्तरीय तुलनाओं की अनिवार्यताओं में वृद्धि हुई और गैर-राज्कीय, गैर-सरकारी पात्रों के फैलाव और आर्थिक संयोजन और सूचना टेक्नॉलजी क्राँति के साथ राष्ट्रों के बीच अंतःसंबंधों में वृद्धि के साथ तुलनाओं का क्षेत्र विविधतापूर्ण हो गया है।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें।

1. तुलनात्मक सरकार किस प्रकार तुलनात्मक राजनीति से भिन्न है?

....

....

....

....

....

1.3 तुलनात्मक राजनीति :एक ऐतिहासिक सिंहावलोकन

ऐतिहासिक दृष्टि से उसकी विषय -वस्तु में परिवर्तनों के साथ तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति और विषय क्षेत्र में बदलाव आया है। तुलनात्मक राजनीति की विषय वस्तु का निर्धारण भौगोलिक स्थान (अर्थात् राष्ट्र, क्षेत्र) जिसने क्षेत्र को संस्थापित किया है और साथ-साथ सामाजिक यथार्थ और परिवर्तन से संबंधित प्रधान विचारों, जिन्होंने तुलनात्मक अध्ययन के उपागमों (पूँजीवादी, समाजवादी, मिश्रित और देशज) को आकार दिया है,इन दोनों के द्वारा किया गया है। उसी प्रकार, भिन्न-भिन्न ऐतिहासिक परिस्थितियों में, अध्ययन का दबाव या प्राथमिक चिन्ता बदलती रही है।

1.3.1 राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की उत्पत्ति

तुलनात्मक राजनीति की एक लम्बी बौद्धिक वंशावली है, अरस्तू तक पीछे जाते हुए और निक्कोलो मेक्यावली, जॉन लॉक, मैक्स वेबर इत्यादि जैसे चिंतकों द्वारा जारी रखी गई। अपने सबसे प्रारंभिक अवतार में, राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन हमारे पास यूनानी दार्शनिक अरस्तू के द्वारा किए गए अध्ययनों के रुप में आता है। अरस्तू ने 150 राज्यों के संविधानों का अध्ययन किया और उनका शासन प्रणालियों के प्रारुप में वर्गीकरण किया। उसका वर्गीकरण वर्णनात्मक और मानकीय, दोनों श्रेणियों में प्रस्तुत किया गया, अर्थात् उसने न केवल शासन प्रणालियों और राजनीतिक प्रणालियों का वर्णन और वर्गीकरण उनके प्रकार के अनुसार किया, उदाहरण के लिए, लोकतंत्र, कुलीनतंत्र, राजतंत्र इत्यादि बल्कि

सुशासन के कुछ निश्चित मानकों के आधार पर उन्हें श्रेणीबद्ध भी किया। इस तुलना के आधर पर, उसने शासन प्रणालियों को अच्छे और बुरे–आदर्श और विकृत में विभाजित किया। इन अरस्तूवादी श्रेणियों को पॉलिबियस (201–120 ई. पूर्व) और सिसेरो (106–43 ई.पूर्व) जैसे प्राचीन रोमन चिंतकों इनपर औपचारिक और कानूनी आधारों पर विचार करते हुए इन्हें स्वीकृति दी और आगे बढ़ाया। शासन प्रणालियों के तुलनात्मक अध्ययन में दिलचस्पी 15 वीं सदी में मेक्यावली (1469–1527) के साथ पुनः प्रकट हुई जिसने विभिन्न प्रकार की जागीरों (वंशानुगत, नई, मिश्रित और गिरजे-संबंधी) और गणराज्यों की तुलना की ताकि उन्हें शासित करने के सबसे सफल तरीकों तक पहुँचा जा सके।

1.3.2 उन्नीसवीं सदी का अन्त और बीसवीं सदी का प्रारंभ

उन्नीसवीं सदी के अन्त और बीसवीं सदी के प्रारंभ के तुलनात्मक अध्ययनों में 'उत्तम व्यवस्था' या 'आदर्श राज्य' से संबंधित दार्शनिक और काल्पनिक प्रश्नों के साथ ध्यानमग्नता और इस प्रक्रिया में भावात्मक और मानकीय शब्दावली का प्रयोग कायम रहा। ये वो समय था जब उदारवाद सबसे प्रबल विचारधारा थी और यूरोपीय राष्ट्र विश्व राजनीति पर अपरिहार्य प्रभुत्व का आनन्द ले रहे थे। एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका की शेष दुनिया या तो यूरोपीय उपनिवेश थी या भूतपूर्व उपनिवेशों के रुप में उनके प्रभाव क्षेत्र में थी। इस काल के दौरान अपनाए गए तुलनात्मक अध्ययनों, जैसे जेम्स ब्राइस का मॉडर्न डेमोक्रेसीज़ (1921), हर्मन फाइनर का थियोरी एंड प्रैक्टिस ऑफ मॉडर्न गवर्नमेंट्स (1932) और कार्ल जे. फ्राइडरिक का कॉंस्टिटयूशनल गवर्नमेंट एंड डेमोक्रेसी (1937), रॉबेर्नो निकेल्स का पोलिटिकल पार्टीज़ (1915) की दिलचस्पी प्रधान रुप से संस्थाओं के तुलनात्मक अध्ययन, शक्ति का वितरण, और सरकार की विभिन्न परतों के बीच संबंध में थी। ये अध्ययन 'यूरो-केंद्रित' थे, अर्थात् ब्रिटेन, फ्राँस और जर्मनी जैसे यूरोपीय राष्ट्रों में संस्थाओं, सरकारों और शासन प्रणाली के प्रकारों के अध्ययन तक सीमित थे। अतः ये कहा जा सकता है कि ये अध्ययन वास्तव में इस दृष्टि से विशुद्ध रुप से तुलनात्मक नहीं थे कि इन्होंने बड़ी संख्या में राष्ट्रों को अपने विश्लेषण से बहिष्कृत किया। कुछ ही राष्ट्रों तक सीमित अध्ययन से प्राप्त किया गया सामान्यीकरण बाकी के विश्व के लिए मान्यता का वैध दावा नहीं कर सकता था। यहाँ इस बात पर बल दिया जाना चाहिए कि बाकी के विश्व का बहिष्कार, विश्व राजनीति में यूरोप का प्रभुत्व का सूचक था। सभी समकालीन इतिहास के केन्द्र में यूरोप रहा, बाकी के विश्व का अभिलोपन (मिटाते) करते हुए (उपनिवेशित या उपनिवेशवाद से मुक्त) (क) 'बिना इतिहास के जन' के रुप में या (ख) जिनके इतिहास पश्चिम के उन्नत देशों से जुड़े थे और उन प्रक्षेप- पंथों का अनुसरण करने के लिए नियत थे जिन्हें पश्चिम के उन्नत देशों ने पहले से अपना रखा था। इस प्रकार उपरोक्त कृतियाँ पश्चिमी उदारवादी लोकतंत्र के मानक मूल्यों में अपने दृढ आधार को अभिव्यक्त करती हैं जिसने अपने साथ नृजातीय और सभ्यतागत श्रेष्ठता का सामान ढोया, और उपनिवेशों/भूतपूर्व उपनिवेशों के लिए एक आदेशात्मक चरित्र धारण किया।

1.3.3 द्वितीय विश्व युद्ध और उसके पश्चात्

उन्नीससौतीस के दशक में विश्व की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुआ। सन् 1917 में रूस में बोल्शेविक क्राँति ने विश्व में समाजवाद को

उत्पीड़ितों की एक विचारधारा के रुप में और पश्चिमी उदारवाद और पूँजीवाद के एक आलोचनात्मक विकल्प के रुप में उत्पन्न किया। द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त के साथ, तक महत्वपूर्ण घटनाएँ घट चुकी थीं, जिनमें यूरोपीय (ब्रिटीश) वर्चस्व का पतन, विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था में संयुक्त राज्य अमेरिका का 'नए अधिपति' के रुप में उत्थान और मोर्चाबंदी, और विश्व का विचारधारा की दृष्टि से दो गुटों में बंटवारा अर्थात् (पश्चिमी) पूंजीवाद और (पूर्वी) समाजवाद शामिल थे। जब तक द्वितीय विश्व युद्ध का अन्त हुआ, 'बाकी के विश्व' के अधिकांश हिस्से ने अपने को यूरोपीय साम्राज्यवाद से मुक्त कर लिया था। विउपनिवेशीकरण की एक अवधि के पश्चात् विकास, आधुनिकीकरण, राष्ट्र निर्माण, राज्य -निर्माण इत्यादि विचारों ने 'राष्ट्रीय नारों' के रुप में 'नए राष्ट्रों' के राजनीतिक अभिजनों के बीच वैधता के एक स्तर और यहाँ तक कि लोकप्रियता को भी प्रदर्शित किया। परन्तु वैचारिक दृष्टि से ये 'नए राष्ट्र' विकास के पश्चिमी पूंजीवाद मार्ग को अपनाने के लिए अब मजबूर नहीं थे। जहाँ एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के नए सत्ताधारी अभिजनों के बीच समाजवाद के अपने हिस्से के समर्थक थे, वहीं नव-स्वतंत्रता प्रापत देशों ने दोनों शक्ति गुटों से निरपेक्ष रहते हुए, अपने को उनसे दूर रखने का चेतनापूर्ण निर्णय लिया। इनमें से अनेक देशों ने, समाजवाद से मिलते-जुलते, विकास के अपने विशिष्ट मार्ग को विकसित किया जैसा कि तांज़ानिया में उज्जामा के मामले में और भारत में मिश्रित-अर्थव्यवस्था का मॉडल, जो पूँजीवाद और समाजवाद का मिश्रण था।

यह याद रखने योग्य है कि 1940 के दशक तक सरकारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रधान रुप से संस्थाओं, उन्हें नियमित करने वाले कानूनी-संवैधानिक सिद्धांतों, और पश्चिमी (यूरोपीय) उदारवादी लोकतंत्रों में उनकी कार्य शैली का अध्ययन था। उपराक्त गतिविधियों के संदर्भ में, 1950 के दशक के मध्य में, संस्थात्मक उपागम की एक सशक्त समालोचना की उत्पत्ति हुई। इस समालोचना की जड़ें व्यवहारवाद में थीं जिसका उदय राजनीति के विषय में एक नए आन्दोलन के रुप में हुआ, जिसका उद्देश्य विश्व को वैज्ञानिक कठोरता उपलब्ध कराना और राजनीति के एक विज्ञान को विकसित करना था। 'व्यवहारवादी आन्दोलन' के नाम से प्रसिद्ध, इसकी दिलचस्पी एक अन्वेषण को विकसित करना था जो परिमाणात्मक हो और जो मूल्यों से पृथक अनुभाविक तथ्यों के परीक्षण के लिए सर्वेक्षण तकनीकों पर आधारित हो ताकि मूल्य -तटस्थ, गैर-आदेशात्मक, वस्तुनिष्ठ टिप्पणियाँ और व्याख्याएँ उपलब्ध की जा सकें। व्यवहारवादियों ने 'लोग राजनीतिक दृष्टि से व्यवहार क्यों करते हैं, जैसा कि वे करते हैं और क्यों उसके परिणामस्वरुप राजनीतिक प्रक्रियाएँ और प्रणालियाँ वैसे कार्य करती हैं, जैसा ि कवे करती हैं जैसे प्रश्नों के उत्तर की खोज करते हुए सामाजिक यथार्थ के अध्ययन का प्रयास किया। लोगों के व्यवहारों में भिन्नताओं और राजनीति प्रक्रियाओं और राजनीतिक प्रणालियों के लिए उनके निहितार्थों के संबंध में इन 'क्यों' प्रश्नों ने संस्थाओं के कानूनी-औपचारिक पहलुओं से तुलनात्मक अध्ययन के केन्द्रबिन्दु को बदल दिया। इस प्रकार, 1955 में रॉय मेकरिडिस ने गैर-औपचारिक राजनीतिक प्रक्रियाओं से अधिक, औपचारिक संस्थाओं का विशेषाधिकरण करने, विश्लेषणात्मक होने के स्थान पर केस-स्टडी उन्मुख होने के लिए मौजूदा तुलनात्मक अध्ययनों की आलोचना की (मेकरिडिस, 1955) हेरी एक्स्टीन इस ओर ध्यान दिलाता है कि इस अवधि के दौरान

तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति और विषय क्षेत्र में परिवर्तन राजनीति की धारणा की पुनर्संकल्पना और व्यापक पैमाने पर तुलनाओं के विकास की आवश्यकता का आग्रह करते हुए बदलती हुई विश्व राजनीति के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाते हैं (एक्स्टीन, 1963) तत्कालीन पारम्परिक और पश्चिमी विश्व पर लगभग अनन्य बल तथा इतनी सीमित तुलनाओं को ध्यान में रखते हुए जिस संकल्पनात्मक भाषा को विकसित किया गया था, इन सबको अस्वीकार करते हुए गैब्रील आमंड और अमेरिकन सोशल साईन्स रिसर्च काऊंसिल की कमिटी ऑन कंपेरेटिव पॉलिटिक्स (1954 में स्थापित) में उनके सहकर्मियों ने एक सिद्धांत और एक पद्धति को विकसित करना चाहा जो सभी प्रकार की राजनीतिक प्रणालियों को सम्मिलित करते हुए उनकी तुलना कर सके–आदिम या उन्नत, लोकतांत्रिक या गैर-लोकतांत्रिक, पश्चिमी या गैर-पश्चिमी।

एक भौगोलिक या प्रादेशिक दृष्टि से मामलों के विस्तार के साथ स्वयं राजनीति के बोध का भी विस्तार हुआ और विशेष रुप से उसकी अस्वीकृति द्वारा जिसे उस समय औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन में पारंपरिक और संकीर्ण रुप से परिभाषित बलाघात के रुप में देखा गया था। मात्र 'विधिवादिता' से भिन्न 'यथार्थवाद' या 'व्यवहार में' राजनीति पर बल द्वारा राजनीति की धारणा का विस्तार किया गया। इसने, इसके विषय क्षेत्र में औपचारिक दृष्टि से कम मात्रा में संरचनाबद्ध अभिकरणों, व्यवहारों और प्रक्रियाओं की कार्यप्रणाली को शामिल किया, उदाहरण के लिए, राजनीतिक दल, हित समूह, चुनाव, मतदान व्यवहार, मनोवृति इत्यादि। औपचारिक संस्थाओं के अध्ययन से ध्यान हटने के साथ, समानांतर रुप से स्वयं राज्य की धारणा की केन्द्रीयता का पतन हुआ। हमने इससे पूर्व उल्लेख किया था कि विश्व मंच पर बडी संख्या में राष्ट्रों के उदय ने ढ़ाँचों के विकास को अनिवार्य बना दिया जो व्यापक पैमाने पर तुलनाओं को सरल बनाएँगे। इसके फलस्वरुप राजनीतिक प्रणाली जैसी समावेशी और भावात्मक धारणाओं का उदय हुआ। 'प्रणाली' की इस धारणा ने राज्य की धारणा का स्थान ले लिया और विद्वानों को 'विधि-तर', 'सामाजिक' और 'सांस्कृतिक' संस्थाओं पर विचार करने में सक्षम बनाया, जो गैर-पश्चिमी राजनीति को समझने के लिए अत्यन्त आवश्यक थे। इस धारणा का अतिरिक्त लाभ ये था कि इसके विषय -क्षेत्र में 'राज्य से पूर्व'/गैर-राज्कीय समाजों को और साथ ही भूमिकाओं और पदों को शामिल किया गया जिन्हें प्रत्यक्ष रुप से राज्य से संबंधित नहीं देखा गया। इसके अतिरिक्त, संस्थाओं के वास्तविक व्यवहारों और कार्यों पर बल दिए जाने में परिवर्तन के साथ, अनुसंधान की समस्याओं को इन संस्थाओं की कानूनी शक्तियों की दृष्टि से परिभाषित नहीं किया गया,बल्कि इस दृष्टि से कि वे वास्तव में क्या करते थे, वे एक-दूसरे से कैसे संबंधित थे और लोकनीति के निर्माण और कार्यान्वयन में उनकी क्या भूमिकाएँ थीं। इसके परिणामस्वरुप, संरचनात्मक-कार्यात्मक उपागम का उदय हुआ जिसमें कुछ निश्चित कार्यों को सभी समाजों के लिए अनिवार्य बताया गया और इन कार्यों के कार्यान्वयन और अनुपालन की तब तुलना विभिन्न प्रकार के औपचारिक और अनौपचारिक ढ़ाँचों के आर-पार की जानी थी। यद्यपि प्रणालियों के सार्वभौमिक ढ़ाँचों और संरचनाओं-कार्यों ने पश्चिमी विद्वानों को राजनीतिक प्रणालियों, संरचनाओं और व्यवहारों की एक विस्तृत श्रेणी का एक एकल प्रतिमान के अन्तर्गत अध्ययन करने में सक्षम बनाया, 'नए राष्ट्रों' के आगमन ने पश्चिमी तुलनावादियों को उस

वस्तु का अध्ययन करने का अवसर दिया जिसे उन्होंने आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन के रुप में देखा। वियार्ड ध्यान दिलाता है कि साठ के दशक (1960) की इस अवधि में ही तुलनात्मक राजनीति के अधिकांश समकालीन विद्वान विकास की पराकाष्ठा तक पहुँचे। इनमें से अधिकांश विद्वानों के लिए (व्यंगात्मक रुप से) 'नए राष्ट्र', सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के अध्ययन के लिए 'जीवित प्रयोगशालाएँ' बन गए। वियार्ड उन 'उत्तेजक दिनों' का वर्णन करता है जिन्होंने राजनीतिक परिवर्तन के अध्ययन के लिए अनोखे अवसर प्रदान किए और नई पद्धतियों और उनके अध्ययन के उपागमों के विकास को देखा। इस अवधि के दौरान ही तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में कुछ सर्वाधिक अभिनव और उत्तेजक सैद्धांतिक और संकल्पनात्मक उपागमों को प्रस्तुत किया गया : राजनीतिक संस्कृति का अध्ययन, राजनीतिक सामाजीकरण, विकासवाद, पराश्रितता और परस्पर निर्भरता, कॉरपोरेटवाद (सामूहिक नियंत्रणवाद), नौकरशाही-अधिनायकवाद और लोकतंत्र की दिशा में बाद के परिवर्तन इत्यादि (वियार्ड, 1998) इस अवधि में सार्वभौमवादी मॉडल (प्रतिमानों) की बाढ़ लग गई जैसे डेविड ईस्टन का 'पोलिटिकल सिस्टम', कार्ल ड्यूश का 'सोशल मोबिलाइज़ेशन' और एडवर्ड शिल का 'सेन्टर एंड पेरिफेरी'। ऐंप्टर, रोक्कन, आइज़ेनस्टाड्ट और वॉर्ड के आधुनिकीकरण के सिद्धांत और आमंड, कोल्मेन, पइ और बर्बा के राजनीतिक विकास के सिद्धांत ने भी सार्वभौमिक प्रासंगिकता का दावा किया। इन सिद्धांतों का सांस्कृतिक और विचारधारा की सीमाओं के आर-पार लागू होने और इनके द्वारा सर्वत्र राजनीतिक प्रक्रिया की व्याख्या करने का दावा किया गया। इस अवस्था में, तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण के विकास ने सैनिक संधियों और विदेशी सहायता के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका के अन्तर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप से मेल खाया। इस अवधि के दौरान का अधिकांश अध्ययन न केवल अनुसंधान संस्थान द्वारा वित्तपोषित किया गया बल्कि उसे अमेरिकी विदेश नीति के उद्देश्यों के अनुकूल भी बनाया गया। इनमें से सबसे प्रतीकात्मक थे लैटिन अमेरिका में 'प्रॉजेक्ट केमलॉट' और भारत में 'हिमालयन प्रॉजेक्ट'। इस अवधि की घोषणा धाना पर ऐप्टर के अध्ययन जैसी कृतियों के प्रकाशन द्वारा हुई। 1960 में प्रकाशित आमंड और कोल्मेन की 'पॉलिटिक्स ऑफ डेवेलपिंग एरियास' ने नए तुलनात्मक राजनीति आन्दोलन' के चरित्र को परिभाषित किया। 1969 में अमेरिका में 'कंपेरेटिव पॉलिटिक्स' शीर्षक से प्रकाशित एक नई पत्रिका ने इस प्रवृत्ति की पराकाष्ठा को प्रतिबिंबित किया (मोहन्ती, 1975)। 'विकासवाद' शायद इस समय का प्रधान संकल्पनात्मक प्रतिमान था। काफी हद तक, विकासवाद में दिलचस्पी 'विकासशील राष्ट्रों' में अमेरिकी विदेश नीति के हितों से उत्पन्न हुई ताकि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आकर्षणों का विरोध हो सके और उन्हें विकास के एक गैर-साम्यवादी पथ की ओर अभिमुख किया जा सके (वियार्ड, 1998)।

उत्तर-व्यवहारवाद

व्यवहारवादी क्राँति के समर्थक जो राजनीति विज्ञान में वैज्ञानिक कठोरता लाना चाहते थे, इस बात से निराश हुए कि ये विषय उस समय के सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल के बारे में न तो पूर्वानुमान कर पाया और न ही अध्ययन : उसके नए पर्यावरणीय और नारीवादी आन्दोलन, उसका युद्ध -विरोधी परिप्रेक्ष्य, नागरिक अधिकारों से संबंधित उसकी चिंताएँ इत्यादि। उनके द्वारा दो बलों के बीच सामंजस्य स्थापित

करने के प्रयास : राजनीति विज्ञान को और कठोर और अधिक प्रासंगिक बनाने के परिणामस्वरुप उत्तर-व्यवहारवादी आन्दोलन हुआ। 1969 में डेविड ईस्टन का अमेरिकन पोलिटिकल स्टडीज़ एसोसियेशन्स का अध्यक्षीय अभिभाषण इस आन्दोलन की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति करता है। ईस्टन ने 'प्रासंगिकता के सिद्धांत' की रुपरेखा निम्नलिखित सात मूल सूत्रों के साथ प्रस्तुत की जो उत्तर-व्यवहारवादी आन्दोलन का प्रमाण-चिन्ह बन गए।

- तत्व का तकनीक पर प्रभुत्व होना चाहिए। क्या अध्ययन किया जाता है, ये इससे अधिक महत्वपूर्ण है कि उसका कैसे अध्ययन किय जाता है।
- राजनीति जैसी है, उनका अनुभाविक अध्ययन मात्र करने का दावा एक रूढ़िवादी दृष्टिकोण का समर्थन करना है क्योंकि वह जो है, उसपर ध्यान केंद्रित करता है, न कि उस पर जो संभव है।
- पद्धति में अत्यधिक कृत्रिमता अधिकांश राजनीति के क्रर यर्थाथ को धुंधला कर देती है और राजनीति विज्ञान को अत्यावश्यक मानवीय जरुरतों को संबोधित करने से रोकती है।
- विज्ञान निरपेक्ष नहीं हो सकता : आप किस विषय के अध्ययन का चयन करते हैं, यह मतावलोकन द्वारा संचालित होता है और उस कार्य का प्रयोग किस प्रकार किया जाना चाहिए वह मूल्यों द्वारा परिचालित होना चाहिए।
- बुद्धि जीवियों की भूमिका 'सभ्यता के मानवोचित मूल्यों' को प्रोत्साहित करना है।
- जानने का अर्थ है, करने के दायित्व को निभाना ; अपने ज्ञान को कार्यान्वित करना वैज्ञानिकों का एक विशेष कर्तव्य है।
- संलग्न होने की यह प्रतिबद्धता संस्थागत होनी चाहिए और विद्वानों और विश्वविद्यालयों के संघों के माध्यम से अभिव्यक्त होनी चाहिए। वे अलग खडे नहीं रह सकते : व्यवसायों का राजनीतिकरण अपरिहार्य है और वांछनीय भी।

1.3.4 1970 के दशक और विकासवाद की चुनौतियाँ

1970 के आसपास भावात्मक प्रतिमानों का पक्ष लेने के कारण विकासवाद की आलोचना हुई उसने विशिष्ट राजनीतिक/सामाजिक/सांस्कृतिक प्रणालियों के बीच भिन्नताओं को दबाया ताकि उनका अध्ययन एक एकल सार्वभौमवादी संरचना के अन्तर्गत किया जा सके। इन आलोचनाओं ने इन प्रतिमानों की 'नृजातीयता' पर बल दिया और अल्पविकास के एक सिद्धांत को कार्यान्वित करने के लिए तृतीय विश्व पर ध्यान केंद्रित किया। इन्होंने विकासशील राष्ट्रों के पिछडेपन के समाधान पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर बल दिया। 1970 के दशक के प्रारंभिक काल में विकासवाद के लिए जो दो मुख्य चुनौतियाँ उत्पन्न हुई और जिन्होंने व्यापक ध्यान आकर्षित किया, वे भी (क) पराश्रितता और (ख) कॉर्पोरेटवाद। पराश्रितता के सिद्धांत ने विकास में घरेलू वर्ग कारकों और (ख) अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार और शक्ति कारकों की अनदेखी के लिए विकासवाद के प्रधान मॉडल (प्रतिमान) की आलोचना की। इसने अमेरिकी विदेश नीति और बहुराष्ट्रीय निगमों की विशेष रुप से आलोचना की और जिसे विकासवाद में सत्य माना गया था, उसके विपरीत, ये सुझाव दिया कि पहले से ही औद्योगीकृत राष्ट्रों का और विकासशील राष्ट्रों का विकास एक साथ नहीं हो सकता। इसके स्थान पर, पराश्रितता के सिद्धांत ने तर्क दिया कि पश्चिम का

विकास, गैर-पश्चिम के कंधों पर और उनके विकास की कीमत पर हुआ था। इस विचार को कि पूँजीवाद का प्रसार विश्व के अनेक हिस्सों में, विकास को नहीं, अल्पविकास को प्रोत्साहित करता है, आंद्रे गुंडर फ्रैंक के 'केपिटलिज़्म एंड अंडर-डेवलपमेंट इन लैटिन अमेरिका' (1967), वॉल्टर रॉडनी के 'हाऊ यूरोप अंडरडेवलप्ड़ आफ्रीका' (1972) और मॉल्कम कैल्डवैल के 'द वेल्थ ऑफ सम नेशन्स' (1979) में सम्मिलित किया गया। परन्तु पराश्रितता के सिद्धांत के मार्क्सवादी आलोचकों ने इस ओर ध्यान दिलाया कि अधिशेष निष्कर्षण के माध्यम से शोषण की प्रकृति को केवल राष्ट्रीय स्तर पर न देखकर, केन्द्र के महानगरीय बुर्जुआ आश्रैर परिधि के देशज बुर्जुआ द्वारा विश्व-व्यापी पूँजीवादी प्रणाली में क्रियाशीलता के दौरान, उनके बीच गठबंधनों के एक अधिक जटिल प्रतिमान के हिस्से के रुप में देखा जाना चाहिए। कॉर्पोरेटवादी उपागम ने विकासवाद की उसकी यूरो-अमेरिकन नृजातिकेंद्रण के लिए आलोचना की और ये संकेत दिया कि राज्य और राज्य -समाज संबंधों को संगठित करने के वैकल्पिक जैविक, कॉर्पोरेटवादी, अक्सर सत्तावादी तरीके हैं। (चिलकॉट, 1994 : 16)

1.3.5 1980 के दशक : राज्य की वापसी

1970 के दशक के अन्त और 1980 के दशक के प्रारंभिक काल के दौरान, विकासवाद के विरुद्ध तीखी प्रतिक्रिया को प्रतिबिंबित करते हुए, तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में अनेक सिद्धांतों और विषय वस्तुओं का उदय हुआ। इनमें नौकरशाही-सत्तावाद, परिवर्तन की देशज अवधारणाएँ, लोकतंत्र की दिशा में परिवर्तन, संरचनात्मक समायोजन की राजनीति, नव-उदारवाद और निजीकरण शामिल थे। जहाँ कुछ विद्वानों ने इन गतिविधियों को उस क्षेत्र की एकता को दुर्बल बनाने और तोडने के रुप में देखा, जिस पर विकासवाद का प्रभुत्व था, वहीं दूसरों ने इन्हें स्वस्थ विविधता को जोडने, वैकल्पिक उपागमों को उपलब्ध करने और नए विषय क्षेत्रों का प्रतिपादन करने के रुप में देखा। आमंड, जिसने 1950 के दशक के अन्त में ये तर्क दिया था कि राज्य की धारणा का स्थान राजनीतिक प्रणाली को मिलना चाहिए जो वैज्ञानिक अन्वेषण के अनुकूलनीय थी, और ईस्टन, जिसने एक राजनीतिक प्रणाली के मानदंडों और अवधारणाओं के निर्माण का दायित्व लिया था, 1980 के दशक के मध्य तक भी राजनीकि अध्ययन के केन्द्र के रुप में राजनीतिक प्रणाली के महत्व पर उसने तर्क प्रस्तुत किया। फिर भी साठ और सत्तर के दशकों में लैटिन अमेरिका में नौकरशाही सत्तावाद की कृतियों में राज्य को अपने हिस्से की मान्यता मिली विशेष रुप से आर्जेंटीना में ग्वियेर्मो ओ 'डॉनल की कृतियों में, उदाहरण के लिए 'इकोनॉमिक मॉडर्नाइज़ेशन एंड ब्यूरोक्रैटिक अथॉरिटेरियनिज़्म' (1973)। रैल्फ मिलिबैंड की 'द स्टेट इन कैपिटलिस्ट सोसाइटी' (1969) ने भी दिलचस्पी को कायम रखा। निकोस पूलांट्ज़ास की 'स्टेट, पावर, सोशलिज़्म' (1978) और राजनीतिक समाजवादियों पीटर एवन्स, थेडा स्कोक्पॉल एवं अन्य की 'ब्रिंगिंग द स्टेट बैक इन' (1985) के साथ राज्य पर फिर से ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया गया।

1.3.6 बीसवीं सदी का अंत : वैष्वीकरण और उभरती हुई प्रवृत्तियाँ/संभावनाएँ

क) प्रणालियों का अवश्रणियन : 1960 से 1980 की अवधि में तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण के अधिकांश विकास को केस के रुप में देखा जा सकता है, जिसमें और चरों को मॉडल (प्रतिमानों) से जोडा गया जैसे नीति, विचारधारा, शासनकार्य का अनुभव इत्यादि। फिर भी, 1980 के दशक में, सामान्य सिद्धांत से हटकर, संदर्भ की प्रासंगिकता पर बल देने की दिशा में परिवर्तन हुआ। आंशिक रुप से, ये प्रवृत्ति सामाजिक विज्ञानों में ऐतिहासिक अन्वेषण के नवीकृत प्रभाव को प्रतिबिंबित करती है, और विशेष रुप से एक 'ऐतिहासिक समाजशास्त्र' की उत्पत्ति को जो परिघटनाओं को उस अत्यन्त विस्तृत या 'समग्र' संदर्भ में समझने का प्रयास करता है जिसमे वे घटित होती हैं (थेडा स्कोक्पॉल और एम. सॉमर्स, 1980)। मॉडल्स से दूर हटने हटते हुए निश्चित राष्ट्रों और केस की और गहन समझ की ओर परिवर्तन हुआ है जहाँ अधिक गुणवतात्मक और संद्र्भित डेटा (आँकडों) का मूल्यांकन किया जा सकता है और जहाँ विशिष्ट संस्थात्मक परिस्थितियों या निश्चित राजनीतिक संस्कृतियों का ध्यान रखा जा सकता है। अतः हम सांस्कृतिक दृष्टि से अधिक विशिष्ट अध्ययनों (उदाहरण के लिए, अंग्रेजी बोलने वाले राष्ट्र, इस्लामी राष्ट्र), और राष्ट्रीय दृष्टि से विशिष्ट राष्ट्रों (उदाहरण के लिए इंग्लैंड, भारत), और यहाँ तक कि संस्थात्मक दृष्टि से विशिष्ट राष्ट्रों (उदाहरण के लिए एक विशिष्ट शासन प्रणाली के अधीन भारत) पर नया जोर देखते हैं। जहाँ 'भव्य प्रणालियों' और मॉडल निर्माण पर बल घटा, वहीं विशिष्ट संदर्भों और संस्कृतियों पर बल देने का अर्थ ये रहा है कि तुलनाओं के पैमाने को नीचे लाया गया। 'छोटी प्रणालियों' या क्षेत्रों के स्तर पर तुलनाएँ कायम रहीं, उदाहरण के लिए, इस्लामी विश्व, लैटिन अमेरिका के राष्ट्र, उप-सहारा आफ्रीका, दक्षिणी एशियया इत्यादि।

ख) नागरिक समाज और लोकतांत्रीकरण उपागम : सोवियत संघ के विघटन ने 'इतिहास का अन्त' धारणा का प्रचलन किया। अपने लेख "द एंड ऑफ हिस्ट्री?" (1989), जिसे आगे चलकर 'द एंड ऑफ हिस्ट्री एण्ड द लास्ट मैन' (1992) शीर्षक से पुस्तक के रुप में विकसित किया गया, फ्रॉसिस फुकुयामा ने तर्क दिया कि' मानव सरकार के अंतिम रुप' में उदारवादी लोकतंत्र की मान्यता और विजय के साथ, विचारों का इतिहास समाप्त हो चुका था। पश्चिमी उदारवादी लोकतंत्र की प्रधानता पर बल देने के लिए 'इतिहास का अंत' निबन्ध का प्रयोग, एक प्रकार से 1950 के दशक की 'विचारधारा का अंत' बहस की याद दिलाता है शीत युद्ध की पराकाष्ठा के दौरान और पश्चिम में साम्यवाद के पतन के संदर्भ में उत्पन्न हुई थी। पश्चिमी उदारवादी विद्वानों ने प्रस्तावित किया कि पश्चिम के औद्योगीकृत समाजों में हुई आर्थिक उन्नति ने उन कल्पित राजनीतिक समस्याओं का हल कर दिया था जो औद्योगीकरण के साथ चलते हैं, उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता के मुद्दे और राज्य शक्ति, श्रमिकों के अधिकार इत्यादि। विशिष्ट रुप से, अमेरिकी समाजशास्त्री, डैनियल बेल ने अपनी कृति 'द एंड ऑफ आइडियॉलजी? : ऑन द एग्ज़ॉशन ऑफ पोलिटिकल

आइडियास इन द 1950 ज़', (1960) में ध्यान दिलाया कि इस गतिविधि के कारण एक वैचारिक सर्वसम्मति थीं, या राजनीतिक व्यवहार के मुद्दों के संबंध में विचारधारात्मक मतभेदों की आवश्यकता के स्थगन की थी। नब्बे के दशक के पूर्वार्ध में 'एंड ऑफ हिस्ट्री' के विचार को अस्सी के दशक की एक अन्य परिघटना से जोडा गया, 'वैश्वीकरण'। वैश्वीकरण परिस्थितियों के एक समूह से संबंध रखता है, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीय, आर्थिक और राजनीतिक, जिन्होंने विश्व को इस तरह जोड़ दिया है कि विश्व के एक हिस्से की घटनाएँ, एक अन्य हिस्से की घटनाओं को निश्चित रुप से प्रभावित कर सकती हैं या उनके द्वारा प्रभावित हो सकती हैं। ये उल्लेख किया जा सकता है कि वैश्विक विश्व में वह केन्द्रबिन्दु या केन्द्र जिसके चारों ओर घटनाएँ विश्व भर में घटित होती हैं, वह अभी भी पश्चिमी पूँजीवाद है। तथाकथित पूँजीवाद के विजय के संदर्भ में, नागरिक समाज और लोकतंत्रीकरण के अध्ययन के जिन उपागमों को लोकप्रियता प्राप्त हुई है, वे नागरिक समाज को महत्व देते हैं जिसे आधुनिक पूँजीवादी विश्व में प्रवेश के लिए व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा के संबंध में परिभाषित किया गया है।

डपागम में, फिर भी एक अन्य महत्वपूर्ण प्रवृत्ति पाई जाती है जो नागरिक समाज और लोकतंत्रीकरण के प्रश्नों को अपना प्राथमिक केन्द्रबिंदु बनाना चाहती है। यदि एक ओर बाज़ारी लोकतंत्र के विकास में जुटे पश्चिमी पूँजीवाद की समकालीन दिलचस्पी के अनुकूल अध्ययन पाए जाते हैं तो वहीं दूसरी ओर ऐसे अनेक अध्ययन भी पाए जाते हैं जो स्वायत्तता की माँग, देशज संस्कृति के अधिकार से जुड़े जन आन्दोलनों, जनजातियों, दलितों, निम्न जातियों के आन्दोलनों, और नारी आन्दोलन और पर्यावरण आन्दोलन के पुनरुत्थान पर विचार करते हैं, जहाँ पूँजी के हित, जनता के हितों के विरोध में होते हैं और वैश्विक पूँजी के दौर में परिवर्तन और मुक्ति की भाषा का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः पहचान, पर्यावरण, नृजातीयता, लैंगिकता, जाति इत्यादि के मुद्दों से संबंधित चिन्ताओं ने तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण को एक नया आयाम दिया है।

ग) **सूचना संकलन और प्रसार** : सूचना एवं संचार टैक्नॉलजी वैश्वीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू और कारका रहा है। इसने डेटा (आँकडों) के उत्पादन, संकलन और विश्लेषण को और सरल बना दिया है और विश्वभर में उनके अधिक तेज और विस्तृत प्रसार को सुनिश्चित कर दिया है। इन परिवर्तनों ने न केवल डेटा की उपलब्धि में वृद्धि की है, बल्कि नए मुद्दों और प्रकरणों की उत्पत्ति को संभव बनाया है जो राष्ट्र-राज्य के दायरे के पार विस्तृत होते हैं। बदले में नए प्रकरण समकालीन वैश्वीकृत विश्व के राजनीतिक पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण/प्रभावशाली पहलू बनते हैं। सामाजिक आन्दोलन संगठनों का वैश्विक तंत्र, सक्रियतावादियों का वैश्विक तंत्र इस प्रकार का एक महत्वपूर्ण पहलू है। लोकतंत्रीकरण के विचारों का प्रसार ऐसे तंत्रीकरण का एक महत्वपूर्ण परिणाम है। मेक्सिको के दक्षिणी प्राँत कियापास में ज़पास्तिस्ना विद्रोह ने अधिकारों, सामाजिक इंटरनेट और वैश्विक मीडिया का प्रयोग किया। मानव अधिकारों के

प्रोत्साहन और संरक्षण से जुडे मुद्दों के संबंध में चिन्ता, जो समकालीन विश्व में प्रासंगिक बन गई है।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें।

1) क्या ये कहना संभव है कि तुलनात्मक राजनीति का संबंध केवल सरकारों के अध्ययन की एक पद्धति से है?

....

....

....

....

....

2) तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति, क्षेत्र और विषय -क्षेत्र का विकास विभिन्न ऐतिहासिक अवधियों में बदलती हुई सामाजिक-राजनीतिक चिंताओं की प्रतिक्रिया के रुप में हुआ है। टिप्पणी करें।

....

....

....

....

....

1.4 राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन : उपयोगिता

तुलनात्मक राजनीति की उपयोगिता का प्रश्न राजनीतिक यथार्थ के संबंध में हमारी समझ को बढ़ाने में इसकी उपयोगिता और प्रासंगिकता से है। इसका उद्देश्य ये जानकारी प्राप्त करना है कि इस यर्थाथ को समझने के लिए तुलनात्मक अध्ययन हमारी किस प्रकार सहायता करता है। प्रथम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण हमें ये ध्यान में रखना होगा कि राजनीतिक व्यवहार सभी मनुष्यों के लिए सामान्य है और विश्व भर में इसकी अभिव्यक्ति अनेक विधियों से और अनेक सामाजिक और संस्थात्मक व्यवस्थाओं में होती है। ये कहा जा सकता है कि इन संबंधित और समानांतर रुप से भिन्न राजनीतिक व्यवहारों और प्रतिमानों की समझ स्वयं राजनीति के बारे में हमारी समझ का एक अभिन्न हिस्सा है। सामान्य तौर पर, एक ठोस और विस्तृत समझ तुलनाओं का रुप लेगी।

1.4.1 सैद्धांतिक सूत्रीकरण के लिए तुलना

यद्यपि तुलनाएँ हमारी सारी तर्क बुद्धि और चिंतन का अंतर्निहित हिस्सा हैं, वहीं अधिकांश तुलनावादी ये तर्क देंगे कि राजनीति का एक तुलनात्मक अध्ययन चेतनापूर्ण तुलनाएँ करने का प्रयास करता है ताकि ऐसे निष्कर्षों तक पहुँचा जा

सके जिनका सामान्यीकरण किया जा सकता है, अर्थात् अनेक मामलों के लिए ये सत्य हों। ऐसे सामान्यीकरणों को करने के लिए, राष्ट्रों के बारे में केवल सूचना एकत्रित करना पर्याप्त नहीं है। तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण में सिद्धांत-निर्माण परीक्षण पर बल है जिसमें राष्ट्र इकाइयों या अध्ययन मामले के केस का काम करते हैं। अतः तुलनात्मक अनुसंधान कैसे किया जाना चाहिए, इस संबंध में नियमों और मानदंडों को विकसित करने पर काफी बल दिया जाता है और जोरदार प्रयास किए जाते हैं। एक तुलनात्मक अध्ययन ये सुनिश्चित करता है कि सभी सामान्यीकरण एक से अधिक परिघटना के निरीक्षण या अनेक परिघटनाओं के बीच संबंधों के निरीक्षण पर आधरित है।

1.4.2 वैज्ञानिक कठोरता के लिए तुलनाएँ

जैसा कि अगली इकाई में व्याख्या की जाएगी, तुलनात्मक पद्धति इन सिद्धांतों को वैज्ञानिक आधार और कठोरता प्रदान करती है। जो सामाजिक वैज्ञानिक परिशुद्धता मान्यता और विश्वसनीयता पर बल देते हैं, वे सामाजिक विज्ञानों में तुलनाओं को अपरिहार्य मानते हैं क्योंकि ये सामाजिक परिघटनाओं के अध्ययन में 'नियंत्रण' का अद्वितीय अवसर प्रस्तुत करते हैं। (सारटोरी, 1994)।

1.4.3 तुलनाएँ जो संबंधों में व्याख्याओं की ओर ले जाएँ

एक लम्बे समय तक तुलनात्मक राजनीति केवल समानताओं और भिन्नताओं को ढूँढती हुई नज़र आई और उसने इस प्रयास को राजनीतिक परिघटनाओं के वर्गीकरण, द्वि भागीकरण या ध्रुवीकरण की ओर निर्देशित किया। फिर भी, तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण समानताओं और भिन्नताओं की पहचान करना मात्र नहीं है। अनेक विद्वानों का मानना है कि तुलनाओं का उद्देश्य "समानताओं और भिन्नताओं को पहचाने" या तथाकथित "तुलना और विषमता उपागम" से परे जाते हुए अंत में संबंधों के एक विस्तृत ढाँचें के अन्तर्गत राजनीतिक परिघटनाओं का अध्ययन करना है। ऐसा माना जाता है कि ये हमारी समझ को गहन बनाने में मदद करेगा और राजनीतिक परिघटनाओं का उत्तर देने और व्याख्या करने के स्तरों का विस्तार करेगा। दूसरे शब्दों में, तुलनात्मक राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य केवल दूसरों के बारे में अविश्वासपूर्ण होना नहीं है बल्कि नए प्रमाण और तर्कों के प्रकाश में अपनी खुद की प्रणाली और धारणाओं से सवाल करना है।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें।

1. आपके अनुसार राजनीति के एक तुलनात्मक अध्ययन की क्या उपयोगिता है?

....

....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

वे कौन सी विशेषताएँ हैं जो तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति और विषय-क्षेत्र का निर्धारण करते हैं?

....

....

....

....

....

2. बीसवीं सदी में तुलनात्मक राजनीति के विकास की रुपरेखा का वर्णन प्रस्तुत करें जिसमें स्पष्ट करें (क) द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व और उसके पश्चात् की अवधि की विशिष्टताएँ (ख) विकासवाद और उसकी समालोचना (ग) बीसवीं सदी के उत्तरार्ध की गतिविधियाँ

....

....

....

....

....

1.5 सारांश

राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की प्रकृति और विषयक्षेत्र का संबंध उसकी विषय -वस्तु, उसके अध्ययन क्षेत्र, जिस अनुकूल अवस्थिति से अध्ययन किया जाता है और जिस उद्देश्य की ओर अध्ययन निर्दिष्ट होता है, इन सब से है। परन्तु ये स्थिर नहीं रहे हैं और समय के साथ-साथ इनमें बदलाव आया है। जहाँ सबसे प्रारंभिक अध्ययनों की दिलचस्पी सरकारों और शासन व्यवस्थाओं के वर्गीकरण और निरीक्षण में थी, वहीं उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के प्रारंभ में तुलनात्मक राजनीति की दिलचस्पी पश्चिमी देशों की संस्थाओं की औपचारिक कानूनी संरचनाओं के अध्ययन मे थी। द्वितीय विश्व युद्ध के अन्त में विश्व मंच पर अनेक 'नए राष्ट्रों' का उदय हुआ जिन्होंने औपनिवेशिक प्रभुता से अपने को स्वतंत्र कर लिया था। उदारवाद के प्रभुत्व को साम्यवाद के उदय और विश्व मंच पर सोवियत संघ की सशक्त उपस्थिति द्वारा चुनौती दी गई। इस मोड़ पर तुलनावादियों के बीच सोच में बदलाव आया। वे अब उभरते हुए राजनीतिक व्यवहारों और प्रक्रियाओं की विविधता का अध्ययन करने लगे परन्तु, एक एकल व्यापक ढाँचे के अन्तर्गत। इसके साथ, 'प्रणालियाँ' और ' संरचनाएँ-कार्य' की अवधारणा का प्रचलन हुआ। इन ढाँचों का प्रयोग पश्चिमी विद्वानों, विशेष रुप से अमेरिका के विद्वानों द्वारा विकासवाद, आधुनिकीकरण इत्यादि जैसी एक ओर नवोदित राष्ट्रों के राजनीतिक अभिजनों को विकास, राष्ट्र-निर्माण और राज्य -निर्माण की अवधारणाएँ आकर्षक लगी, कई मामलों में उन्होंने अपने स्वयं के वैचारिक दृष्टिकोणों को विकसित किया और दोनों वैचारिक गुटों से निरपेक्ष रहने का निर्णय लिया। 1980 के दशक के उत्तरार्ध में 'प्रणाली' के एक व्यापक ढाँचे के अन्तर्गत, राजनीति का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन पर से

केन्द्रण हटने लगा और क्षेत्रीय प्रणालीगत अध्ययनों का महत्व बढ़ने लगा। इन अध्ययनों में राज्य पर केन्द्रण ने नागरिक समाज के भीतर शक्ति संरचनाओं और उसके राजनीतिक स्वरुपों के अध्ययन के पुनरुत्थान को सूचित किया, जिसे, तुलनात्मक राजनीति में प्रणालियों और संरचनाओं-कार्यों के आगमन से हानि पहुँची थी। इस दौर में, सोवियत संघ के विघटन ने उदारवाद और पूँजीवाद की विजय को चिन्हित करते हुए पश्चिमी विद्वानों को 'इतिहास का अंत' की घोषणा करने के लिए उत्तेजित किया। पूँजी का वैश्वीकरण, 1980 के दशक के उत्तरार्ध की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, जो अब तक कायम है और विश्व के देशों के बीच अपने आपको तकनीकी, आर्थिक और सूचना अनुबंधों में अभिव्यक्त करता है, उसने तुलनावादियों को भी 'लोकतंत्र की ओर संक्रमण', 'वैश्विक बाज़ार' और 'नागरिक समाज' जैसी सार्वभौमवादी, समांगीकरणीय अभिव्यक्तियों को अपनाने के लिए प्रभावित किया है। ऐसी अभिव्यक्तियाँ हमें ये विश्वास दिलाना चाहती हैं कि वास्तव में कोई भिन्नताएँ, अनिश्चय और संघर्ष नहीं बचे हैं जिनकी तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य से व्याख्या की आवश्यकता है। फिर भी परिघटनाओं को परखने का एक अन्य तरीका है और अनेक विद्वान नागरिक समाज के पुनरुत्थान को वैश्विक पूँजीवाद के लिए चुनौतियों की दृष्टि से देखते हैं जो विश्व भर में जन-आन्दोलनों और मज़दूर संघ सक्रियवाद से निकलते हैं।

1.6 मुख्य शब्द

नागरिक समाज : इस शब्द के विवादस्पद अर्थ हैं। कुल मिलाकर इसे एक देश के जीवन का हिस्सा माना जाता है जो न तो सरकार है और न ही अर्थव्यवस्था, बल्कि वह क्षेत्र है जिसके भीतर हित समूह, राजनीतिक दल और व्यक्ति, राजनीतिक रुप से उन्मुख तरीकों में एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

नियंत्रण : वैज्ञानिक अनुसंधान में नियंत्रण एक मानक व्यवस्था या स्थिति को उपलब्ध करने के लिए परीक्षण के दौरान नियमन और जाँचने की एक महत्वपूर्ण कार्यविधि या यंत्रावली है।

यूरोकेंद्रित : इसका संबंध उन पक्षपातपूर्ण (और विकृत) दृष्टिकोणों से है जो अन्य संस्कृतियों और समाजों पर यूरोपीय विचारों, मूल्यों, धारणाओं और सिद्धांतों के लागू किए जाने से प्रकट होते हैं।

प्रणालीविज्ञान : अनुसंधान के विभिन्न तरीकों का अध्ययन, जिसमें अनुसंधान प्रश्नों की पहचान, निश्चित घटनाओं और राजनीतिक परिणामों की व्याख्या के लिए सिद्धांतों का सूत्रीकरण, और अनुसंधान परिकल्पना का विकास भी शामिल है।

नव-उदारवाद : शास्त्रीय उदारवाद का एक उन्नत रुप जिसमें राजनीतिक अर्थव्यवस्था बाज़ारी व्यक्तिवाद और न्यूनतम राज्यनियंत्रणवाद पर संकेंद्रित होती है।

मानकीय : व्यवहार के मूल्यों और मानदंडों का निर्धारण जो 'क्या है' से नहीं बल्कि' क्या होना चाहिए' से संबंधित प्रश्नों पर विचार करना है।

सिद्धांत : एक सिद्धांत व्यवस्थित रुप से परस्पर संबंधित विचारों, रचनाओं या प्रस्तावों का एक समूह/सेट है जिसका अभिप्राय एक निश्चित परिघटना, घटनाओं या व्यवहार की व्यवस्थित व्याख्या करना है। सामाजिक विज्ञान में सिद्धांत, सामाजिक व्यवहारों, घटनाओं और परिघटनाओं के लिए व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

1.7 संदर्भ

चिलकॉट, रॉनल्ड एच., 1994. "भाग 1 : परिचय", रॉनल्ड एच. चिलकॉट, थ्योरीज़ ऑफ कंपेरेटिव पॉलिटिक्स : द सर्च फॉर ए पेराडाइम रीकंसिडर्ड, वेस्टव्यू प्रेस, बोल्डर, (द्वितीय संस्करण)

लैंडमैन, टॉड, 2000. इश्यूज़ एंड मेथड्स इन कंपेरेटिव पॉलिटिक्स : एन इंट्रोडक्शन, राउटलेज, लंदन.

लिम, टिमोथी सी., 2006 डूइंग कंपेरेटिव पॉलिटिक्स : एन इंट्रोडक्शन टू एप्रोचस एंड इश्यूज़, बोल्डर, सीओ : लिन्न रिएन्नर.

मेर, पीटर, 1996. "कंपेरेटिव पॉलिटिक्स : एन आवरव्यू", आर.ई. गाडिनेंड एच. क्लिंगमैन (सं0), द न्यू हैंडबुक ऑफ पोलिटिकल साइन्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड.

मोहन्ती, मनोरंजन, 2000. 'मूविंग द सेंटर इन द स्टडी ऑफ पोलिटिकल थॉट एंड पोलिटिकल थ्योरी', मनोरंजन मोहन्ती, कंटेम्प्रेरी इंडियन पोलिटिकल थ्योरी, संस्कृति, नई दिल्ली

मोहन्ती, मनोरंजन, 1975" कंपेरेटिव पोलिटिकल थ्योरी एंड थर्ड वर्ल्ड सेंसिटिविटी", टीचिंग पॉलिटिक्स, नंम्बर्स. 1 एंड 2

सारटोरी, जियोवान्नी, 1994. "कम्पेर, व्हाई एंड हाऊ", मात्तेइ दोगन एंड अली कज़न्सिगिल (सं0), कम्पेरिंग नेशन्स, कॉन्सेप्ट्स, स्ट्रैटजीज़, ब्लैकवेल, ऑक्सफोर्ड.

थेडा स्कोक्पॉल एंड एम. सॉमर्स, 1980. "द यूज़ ऑफ कंपेरेटिव हिस्ट्री इन मैक्रो सोशल इनक्वाइरी", कंपेरेटिव स्टडीज़ इन सोसाइटी एंड हिस्ट्री, ग्रंथ 22, अंक 2

वियार्ड, रॉवर्ड जे 1998. "इज कंपेरेटिव पॉलिटिक्स डेड. रीथिंकिंग द फील्ड इन द पोस्ट- कोल्ड वॉर ईरा", थर्ड वर्ल्ड क्वॉटर्ली, ग्रंथ 19, नं 0 5.

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) तुलनात्मक सरकार, व्यवस्थित तुलना के तरीकों के माध्यम से विभिन्न सरकारों का अध्ययन है। जबकि, तुलनात्मक राजनीति से विभिन्न सरकारों का पहलुओं का अध्ययन है, सरकारी और गैर-सरकारी भी। दूसरे शब्दों में, तुलनात्मक सरकार का विषय क्षेत्र सरकार के अध्ययन तक ही सीमित है, परन्तु तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र की प्रकृति व्यापक है जिसका विस्तार राजनीतिक जीवन के लगभग प्रत्येक पहलू तक है। अतः तुलनात्मक राजनीति का वर्णन अक्सर हर राजनीतिक वस्तु के अध्ययन के रूप में किया जाता है जिसमें राज्य, संस्थाएँ, व्यक्ति, समूह, राजनीतिक दल, हित समूह और सामाजिक आन्दोलन इत्यादि सम्मिलित हैं।

बोध प्रश्न 2

1) नहीं, ये मात्र सरकारों के अध्ययन की एक पद्धति नहीं है, ये कहीं अधिक व्यापक है। तुलनात्मक राजनीति का विषय क्षेत्र अपने में शासन, नीति सूत्रीकरणों, राजनीतिक प्रक्रिया, संस्थाओं और शासन प्रणालियों इत्यादि से जुडे मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को सम्मिलित करता है। ये हर राजनीतिक वस्तु का अध्ययन है जिसमें सभी प्रकार की राजनीतिक परिघटनाएँ शामिल हैं – सरकारी और गैर-सरकारी भी।

2) तुलनात्मक राजनीति के विषय-वस्तु, योजना और विषय क्षेत्र का विकास विभिन्न ऐतिहासिक युगों में, उस समय के बदलते हुए सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ के अनुसार होता रहा है। तुलनात्मक राजनीति के उद्भव और विकास को भौगोलिक स्थल के रुप में ही नहीं बल्कि विचारों और सिद्धांतों की दृष्टि से देखा जा सकता है। इतिहास के विभिन्न युगों के दौरान तुलनात्मक राजनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

बोध प्रश्न 3

1) राजनीति शास्त्र के अध्ययन में राजनीति का तुलनात्मक अध्ययन अनेक कारणों से उपयोगी है। तुलना के माध्यम से, दो या अधिक राजनीतिक प्रणालियों की विभिन्न राजनीतिक प्रक्रियाओं, संस्थाओं और परिघटनाओं के बीच भिन्नताओं और समानताओं की पहचान और व्याख्या की जा सकती है। ये दो या अधिक राजनीतिक प्रणालियों की विभिन्न राजनीतिक प्रक्रियाओं, संस्थाओं और परिघटनाओं के संबंध में हमारी समझ को गहन करने में भी मदद करती है। एक विस्तृत दृष्टिकोण से तुलनात्मक राजनीति, विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों के बारे में हमारी विवेकबुद्धि और सोच का हिस्सा है और सिद्धांतों के निर्माण, विभिन्न राजनीतिक मुद्दों, समस्याओं या परिघटनाओं के वैज्ञानिक विश्लेषण में हमारी सहायता करती है।

2) राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन की प्रकृति और विषय -क्षेत्र का निर्धारण उसकी विशिष्ट विषय -वस्तु, भाषा, शब्दावली द्वारा होती है और उसके परिप्रेक्ष्यों का संबंध राजनीति शास्त्र के विषय से है जैसे लोकतंत्र, संस्थाएँ, चुनाव, संविधान, राजनीतिक दल, शक्ति का वितरण इत्यादि।

3) एक स्पष्ट-परिभाषित और व्यवस्थित अध्ययन के रुप में तुलनात्मक राजनीति की उत्पत्ति उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में हुई। परन्तु द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व, यह अत्यधिक 'यूरोकेंद्रित' थी, अर्थात्, ब्रिटेन, जर्मनी और फ्राँस इत्यादि जैसे यूरोपीय देशों के अध्ययन तक सीमित। परन्तु द्वितीय विश्व युद्धोत्तर काल में नवोदित राज्यों की उत्पत्ति के साथ विद्वानों ने विश्व के अन्य भागों की राजनीतिक प्रणालियों का अध्ययन प्रारंभ किया। 1990 के दशक में वैश्वीकरण के कारण राजनीति के तुलनात्मक अध्ययन के विषय-क्षेत्र और ज्ञान-क्षेत्र में कमाल का विस्तार हुआ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 2 तुलनात्मक विधि और तुलना की कार्यनीतियाँ

संरचना

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना : तुलना क्या है

2.2 पद्धति पर कुछ विचार

2.3 तुलनात्मक पद्धति : तुलना क्यों

2.3.1 सामाजिक-वैज्ञानिक अनुसंधान

2.3.2 समाकलनात्मक चिंतन

2.4 तुलना की पद्धतियाँ

2.4.1 प्रयोगात्मक पद्धति

2.4.2 केस स्टडी

2.4.3 सांख्यिकीय पद्धति

2.4.5 ध्यान-केंद्रित तुलनाएँ

2.5 सारांश

2.6 मुख्य शब्द

2.7 संदर्भ

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

हम के लिए तुलना एक परिचित अभ्यास है। हमारे दैनिक जीवन के अधिकांश निर्णयों में, चाहे विक्रेता से फल और सब्ज़ियाँ खरीदना हो या एक पुस्तक या एक उपयुक्त महाविद्यालय और कैरियार का चयन करना हो, तुलना करना शामिल है। परन्तु, जब तुलना का प्रयोग सामाजिक और राजनीतिक परिघटनाओं के अध्ययन के लिए किया जाता है, तो 'पद्धति' के रुप में 'तुलना' में कुछ ऐसा होना चाहिए जो उसे, उस लक्ष्य के लिए, अन्य पद्धतियों से अधिक उपयुक्त बनाती है। इस उपयुक्तता का मूल्यांकन करने के लिए हमें सबसे पहले यह जानने की आवश्यकता है कि तुलनात्मक पद्धति क्या है और इसे अन्य पद्धतियों से कैसे अलग किया जा सकता है, जिनमें से कुछ तुलना भी करते है; उदाहरण के लिए, प्रयोगात्मक और सांख्यिकीय पद्धतियाँ। हमें तुलनात्मक पद्धति का ही प्रयोग क्यों करना चाहिए। हसे ध्यान में रखना भी महत्वपूर्ण है कि तुलना कैसे की जानी चाहिए या तुलना के लिए रणनीतियों की योजना कैसे बनाई जानी चाहिए। इस इकाई में हम इन मुद्दों की चर्चा करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित की व्याख्या में सक्षम होंगे :

- तुलनात्मक पद्धति और अन्य पद्धतियों से वह किस प्रकार से भिन्न है।
- अन्य पद्धतियों के मुकाबले में तुलनात्मक पद्धति के सापेक्ष लाभ और असुविधाएँ।

- तुलना की विभिन्न पद्धतियाँ
- किस प्रकार तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग सामाजिक और राजनीतिक परिघटनाओं की व्याख्या में किया जाता है।
- तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में तुलनात्मक पद्धति के महत्व की व्याख्या।

2.1 प्रस्तावना

पिछले भाग में हमने देखा कि किस प्रकार तुलनाएँ हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा हैं। परन्तु हममें से कोई भी एक शून्यस्थान में नहीं जीता। हमारे दैनिक जीवन को असंख्य अन्य जीवन आडे-तिरछे काटते हैं। हमारे परिवेश के बारे में हमारे अपने अनुभव और पर्यवेक्षण, दूसरों के अनुभव और पर्यवेक्षण द्वारा कई तरीकों से निर्मित और प्रभावित होते हैं। दूसरे शब्दों में, हमारे द्वारा समीप के विश्व का पर्यवेक्षण यह दर्शाएगा कि लोग और घटनाएँ, संबंधो के एक जालतंत्र में जुडे हुए हैं। ये संबंध घनिष्ट या भावनात्मक रुप से जुडे हो सकते हैं, जैसे, एक परिवार के भीतर या हमारे दैनिक जीवन के दौरान जैसे जालतंत्र का विस्तार होता है, तो व्यावसायिक (जैसे हमारे कार्य के स्थल पर) या अव्यक्तिगत (जैसे हम जिस बस में यात्रा करते हैं, उसमें हमारे सह-यात्रियों के साथ)। परन्तु ये संबंध या अंतर्संयोजनात्मकता, एक नियमितता, एक प्रतिमान या एक दैनिकता को दर्शा सकते हैं, उदाहरण के लिए, बस का दैनिक मार्ग, उसके प्रस्थान और आगमन के समय इत्यादि। यहाँ उद्देश्य ये दर्शाना है कि हालांकि प्रत्येक व्यक्ति को एक विशिष्ट दिनचर्या को अपनाते हुए देखा जा सकता है, वहीं समानान्तर रुप से, एक संचया या समुद्रित प्रभाव है, जहाँ ऐसे अनेक व्यक्तियों को इससे मिलती-जुलती दिनचर्या को अपनाने हुए देखा जा सकता है। हम ये कह सकते हैं कि इन व्यक्तियों के जीवन में नियमितता का एक प्रतिमान है, जो उनकी समानता की दृष्टि से तुलनीय है। अब, अगर समानताओं को संयोजित किया जा सकता है, तो अनियमितताओं या विषमताओं को भी आसानी से पहचाना जा सकता है। उनके जीवन की परिस्थितियों में समानताओं और विभिन्नताओं की छान-बीन करने के बाद समानताओं और विषमताओं, दोनों की व्याख्याएँ की जा सकती हैं। इसे उदाहरण द्वारा स्पष्ट करने के लिए, आइए हम एक आवासीय कॉलोनी की कल्पना करें जिसके अधिकांश पुरुष निवासी प्रातः 8 बजे एक चार्टर्ड बस में काम पर जाते हैं और शाम 6 बजे लौटते हैं। और शाम 5 बजे लौटते हैं। इस प्रकार मोटे तौर पर, कॉलोनी के निवासियों के दो समूह हैं जो व्यवहार के दो प्रकार के प्रतिमानों का प्रदर्शन करते हैं। प्रत्येक समूह के भीतर समानताओं और दोनों समूहों के बीच विषमताओं, इन दोनों के लिए व्याख्याएँ पाई जा सकती हैं। जबकि स्थितियों की समानताओं में समरुपता के लिए व्याख्याएँ मिलती हैं, समूहों के बीच अनियमितता या विषमताओं की व्याख्याएँ उन परिस्थितियों की अनुपस्थिति के रुप में की जा सकती हैं जो एक समूह में समानता की अनुमति देती हैं, उदाहरण के लिए, ये पाया जा सकता है कि व्यक्ति बस से यात्रा करते हैं, उनके बीच चार्टर्ड बस में अपने दफ्तरों को जाने के अलावा और भी कई सामान्य बातें हैं, जैसे, एक ही दफ्तर में कार्य, निजी वाहनों का अभाव, दफ्तर में लगभग एक जैसे पद/ओहदा, एक ही मार्ग पर दफ्तरों का ठिकाना इत्यादि। जो अपनी कारों से यात्रा करते हैं, वे भी अपने

समूह के अन्दर स्थितियों की समानताओं का प्रदर्शन करेंगे। समूहों के बीच भिन्न प्रतिमानों की व्याख्या, उन परिस्थितियों की अनुपस्थिति के रुप में की जा सकती है जो दो समूहों में समानताओ की अनुमति देती हैं, उदाहरण के लिए, कार समूह वाले निवासी भिन्न दफ्तरों को जा रहे होंगे जो उसी बस मार्ग पर नहीं आते; वे एकमात्र लोग हो सकते हैं जिनके पास कारें हैं, उनके दफ्तरों में उनका और ऊँचा ओहदा हो सकता है, इत्यादि। व्याख्याएँ अनेक हो सकती हैं और अनेक अन्य चरों पर आधारित भी, जैसे जाति, लिंग, राजनीतिक विचार इत्यादि। समानताओं और विषमताओं के इस पर्यवेक्षण के आधार पर एक कारणात्मक संबंध के रुप में प्रस्ताव रखे जा सकते हैं, उदाहरण के लिए, वाहन चलाकर काम पर जाने वाले पुरुष/महिलाएँ ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि उनके कार्य के स्थान के लिए चार्टर्ड बसें कार्य के लिए वाहन चलाकर जाने की संभावना उनसे अधिक है जो वाहनों के मालिक नहीं हैं या उच्चवर्गीय महिलाओं की अपने कार्यस्थान तक वाहन चलाकर जाने की संभावना अधिक है इत्यादि। आइए, इस अतिसरलीकृत उदाहरण से उन जटिल तरीकों की ओर बढें जिनमें समाजशास्त्री तुलनाओं का प्रयोग करते हैं।

2.2 पद्धति पर कुछ विचार

तुलनात्मक पद्धति का अध्ययन करने से पहले, आइए हम ये देखें कि यथार्थ में एक 'पद्धति' क्या है; और उसे क्यों इतना महत्वपूर्ण माना जाता है। जैसा कि हमें अपने अनुभवों से पता है कि पद्धति किसी वस्तु को सहजता से निष्पादित करने का एक उपयोगी, सहायक और शिक्षाप्रद तरीका है। उदाहरण के लिए, सिमटने वाले फर्नीचर का एक हिस्सा, एक निर्देशक पुस्तिका के साथ आता है जो उसे खड़ा करने के लिए विभिन्न कदमों के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन करती है। इसी प्रकार एक परिघटना का अध्ययन करते समय पद्धति कार्य को करने के तौर-तरीकों की ओर इशारा करेगी। परन्तु, सिमटने वाले फर्नीचर के हमारे उदाहरण की तरह न होकर, हमें संभवतः आरंभ में ही अपने अन्वेषण के अंतिम स्वरुप या परिणामों के बारे में जानकारी नहीं मिल सकती। हमारे पास शायद अंतिम परिणाम की ओर हमारा मार्गदर्शन करने वाली एक परिशुद्ध निर्देशक पुस्तिका भी न हो। हमारे पास केवल फर्नीचर के हिस्से और उसे खड़ा करने के लिए औज़ार होंगे। दूसरे शब्दों में, "अवधारणाएँ" और "तकनीक"। इन अवधारणाओं (विचार, चिंतन, और धारणाएँ) और तकनीकों (डेटा/आँकडे एकत्रित करने के तरीके) का एक निश्चित परिघटना के बारे में अधिक जानकारी, समझ या व्याख्या के लिए, विशिष्ट तरीकों से प्रयोग करना होगा। इस प्रकार, ये कहा जा सकता है कि डेटा/आंकडों के संबंध में विशिष्ट अवधारणाओं के प्रयोग करने के तरीकों का संगठन ही 'पद्धति' है। निःस्संदेह, स्वयं डेटा/आंकडों को एकत्रित करने की रीति को तैयार करना होगा। जिन अवधारणाओं को कार्यान्वित या जिनका अध्ययन करना है, उनके बारे में विचार करना होगा। अंत में, इन सबको संगठित करना होगा ताकि डेटा/आंकडों की प्रकृति और जिस तरीके से उसे एकत्रित किया जाता है और अवधारणा को प्रयोग में लाना इस प्रकार हो कि हम जिसका अध्ययन करना चाहते हैं, उसका अध्ययन परिशुद्धता के एक स्तर के साथ कर पाते हैं। एक वैज्ञानिक अन्वेषण में पद्धति की परिशुद्धता और यथार्थता पर काफी बल दिया जाता है। परन्तु, अपनी

विषय वस्तु की प्रकृति के कारण, समाजशास्त्रों को ऐसी पद्धतियों के बारे में सोचना पडता है जो प्रयोगशालाओं या अन्य नियंत्रित स्थितियों में हो रहे वैज्ञानिक परीक्षणों की परिशुद्धता के निकट आते हैं। फिर भी अनेक विद्वान ये अनुभव नहीं करते कि तथाकथित "वैज्ञानिक अनुसंधान" के बारे में इतनी पूर्वव्यस्तता होनी चाहिए। इस विषय के बारे में विद्वानों के जो भी विचार हों, सभी अध्ययनों में चिंतन, अन्वेषण और अनुसंधान में फिर भी एक 'पद्धति' होती है। अपने अध्ययन के लिए विद्वानों द्वारा अनेक पद्धतियों-तुलनात्मक, ऐतिहासिक, प्रयोगात्मक, सांख्यिकीय इत्यादि-का प्रयोग किया जाता है। ये कहा जा सकता है कि ये सभी पद्धतियाँ विभिन्न मात्राओं में तुलनाओं का प्रयोग कर सकती हैं क्योंकि तुलनात्मक पद्धति पर तुलनात्मक राजनीति का एकाधिकार नहीं है। इसका प्रयोग ज्ञान के सभी क्षेत्रों में भौतिक, मानवीय और सामाजिक परिघटना के अध्ययन के लिए किया जाता है। समाजशास्त्र, इतिहास, मानव विज्ञान, मनोविज्ञान, साहित्य इत्यादि, इसका प्रयोग समान विश्वास के साथ करते हैं। इन विषयों ने तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग उन अध्ययनों को उत्पन्न करने के लिए किया है जिनका उल्लेख विभिन्न प्रकार से "पार-सांस्कृतिक" (जैसा कि मानव विज्ञान और मनोविज्ञान में) और "पार-राष्ट्रीय" (जैसे कि राजनीति शास्त्र और समाजशास्त्र में) के रुप में किया जाता है, जिससे ये प्रतीत होता है कि वे विभिन्न क्षेत्रों पर बल दे रहे हैं।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें

1) पद्धति क्या है? आपके विचार में पद्धति अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा क्यों है?

....

....

....

....

....

2.3 तुलनात्मक पद्धति : तुलना क्यों

2.3.1 सामाजिक.वैज्ञानिक अनुसंधान

तुलनात्मक पद्धति को, एक "भूमिगत सिद्धांत" को विकसित करने, परिकल्पनाओं के परीक्षण, कारण कार्य संबंधों का अनुमान लगाने और विश्वसनीय सामान्यीकरणों को उत्पन्न करने के आधार के रुप में समानताओं और विषमताओं के अध्ययन के रुप में देखा गया। अनेक सामाजिक वैज्ञानिकों का मानना है कि अनुसंधान वैज्ञानिक रुप से संगठित होना चाहिए। वे मानते हैं कि तुलनात्मक पद्धति उन्हें "वैज्ञानिक" अनुसंधान के संचालन के लिए सर्वोत्तम साधन प्रदान करती है, अर्थात, अनुसंधान जिसकी विशेषताएँ हैं परिशुद्धता,

मान्यता, विश्वसनीयता और सत्यापनीयता और कुछ मात्रा में पूर्वानुमेयता। अमेरिकी राजनीति शास्त्री जेम्स कोलमैन ने, उदाहरण के लिए, अपने विद्यार्थियों को अक्सर याद दिलाया, "आप यदि तुलना नहीं कर रहे तो आप वैज्ञानिक नहीं हो सकते ।"इसी प्रकार, स्वॉनसन ने इस बात पर बल दिया कि बिना तुलनाओं के "वैज्ञानिक चिंतन और समस्त वैज्ञानिक अनुसंधान" के बारे में सोचना "अनिवार्य" था (स्वॉनसन, 1971, पृ. 145)।

जबकि भौतिक विज्ञानों में तुलनाएँ प्रयोगशालाओं में ध्यानपूर्वक नियंत्रित स्थितियों में की जाती हैं, समाजशास्त्रों में उन स्थितियों में, जो प्रयोगशाला की स्थितियों को दोहरा सकें, परिशुद्ध परीक्षण संभव नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि एक समाजशास्त्री निर्वाचन प्रणालियों और राजनीतिक दलों की संख्या के बीच संबंध का अध्ययन करना चाहे तो वह अपनी निर्वाचन प्रणाली को बदलने का निर्देश दे सकता है और न ही जनता को एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने का आदेश दे सकता है। और न ही एक सामाजिक या राजनीतिक परिघटना को एक प्रयोगशाला में दोहरा सकता है जहाँ परीक्षण किए जा सकते हैं। अतः जहाँ एक समाजशास्त्री एक वैज्ञानिक तरीके से कार्य करने के लिए अपने को विवश महसूस कर सकता है, वहीं, जिसे "वैज्ञानिक" अन्वेषण के रुप में स्वीकार किया जाता है, उसे सामाजिक परिघटनाएँ शायद अनुमति न दें। इसके बावजूद वह "मामलों" (केस) का अध्ययन कर सकता है, अर्थात् वास्तव में मौजूद राजनीतिक दलों का, और उनकी तुलना कर सकता है, अर्थात् उनके संबंध के अध्ययन का एक तरीका निकाल कर जैसे कि परिकल्पना में हल किया गया है, निष्कर्ष निकाल कर और सामान्यीकरणों की प्रस्तुती द्वारा।

इस प्रकार, वैज्ञानिक दृष्टि से प्रयोगात्मक पद्धति से कमज़ोर होने के बावजूद, तुलनात्मक पद्धति को एक वैज्ञानिक पद्धति के सबसे निकट माना जाता है, जो सामाजिक परिघटनाओं की व्याख्याएँ खोजने के लिए और सैद्धांतिक प्रस्तावों और सामान्यीकरण प्रस्तुत करने के लिए सर्वश्रेष्ठ संभव अवसर प्रदान करती है। अब आप ये प्रश्न पूछ सकते हैं कि तुलनात्मक पद्धति को क्या वैज्ञानिक बनाती है। सारटोरी ने दावा किया कि "नियंत्रण प्रकार्य" या जाँच को प्रणाली, जो वैज्ञानिक अनुसंधान का अभिन्न हिस्सा है, और प्रयोगशाला प्रयोग का अनिवार्य अंग, समाजशास्त्रों में उसे केवल तुलनाओं के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। आगे बढते हुए उसका यह प्रस्ताव है कि चूंकि "नियंत्रण प्रकार्य" का प्रयोग केवल तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से हो सकता है, समाहशास्त्रों में तुलनाएँ अपरिहार्य हैं। अपने नियंत्रणकारी/सैद्धांतिक प्रस्तावों को बनाने या भविष्यवाणियाँ करने वाली निश्चित परिघटनाओं की व्याख्या करने वाले सैद्धांतिक कथनों के लिए तुलनाओं का वैज्ञानिक महत्व है। और उसके लिए भी जिसे वह "दूसरों के अनुभव से सीखना" कहता है। इस संदर्भ में यह बताना महत्वपूर्ण है कि तुलनात्मक पद्धति में भविष्यवाणियों की प्रकृति का एक संभाग्य कारण-कार्य संबंध है। इसका अर्थ ये है कि ये अपने परिणामों को केवल संभावनाओं या संभावयताओं के रुप में अभिव्यक्त कर सकते हैं, अर्थात् स्थितियों के एक निश्चित समुच्चय द्वारा एक प्रत्याशित परिणाम दिया जाना संभव है। ये वैज्ञानिक अनुसंधान में निर्धारक कारण-कार्य संबंध से भिन्न है जो निश्चितता पर बल देता है अर्थात् स्थितियों का एक निश्चित समुच्चय प्रत्याशित परिणाम अवश्य उत्पन्न करेगा।

2.3.2 समाकलनात्मक चिंतन

जबकि कुछ सामाजिक वैज्ञानिक एक वैज्ञानिक अन्वेषण के विकास के लिए तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग करते हैं, कुछ अन्य के लिए, परन्तु, तुलनाओं के साथ चिंतन विशिष्ट सामाजिक और राजनीतिक परिघटना के विश्लेषण का एक अभिन्न हिस्सा है। स्वॉनसन, जिसने यह दावा किया है कि "तुलनाओं के बिना चिंतन, अनिवार्य है", इस उपागम का प्रतिनिधि है। उसके अनुसार, "किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि तुलनाएँ, अंतर्निहित और सुव्यक्त, सामाजिक वैज्ञानिकों के कार्य में व्याप्त होती हैं और आरंभ से ऐसा करती आई हैं : भूमिकाओं, संगठनों, समुदायों, संस्थाओं, समाजों और संस्कृतियों में तुलनाएँ" (स्वॉनसन, 1971, पृ0 145)। प्रसिद्ध जर्मन समाजशास्त्री, एमिल दुर्खीम भी पुष्टि करता है कि तुलनात्मक पद्धति अनुसंधान (समाजशास्त्रीय) को केवल वर्णनात्मक रहने से रोकने में सक्षम बनाती हैं (दुर्खीम, 1984, पृ0 139)। स्मेलसर ने भी दावा किया कि बिना तुलनाओं के वर्णन काम नहीं आते। वह प्रमाण देता है कि "साधन रुप से आबाद" और "लोकतांत्रिक" जैसे सरल वर्णनात्मक शब्द, स्थितियों के एक ऐसे जगत की पूर्वकल्पना करते हैं जो अधिक या कम आबाद हैं या अधिक या कम लोकतांत्रिक हैं और एक स्थिति का बयान/वर्णन केवल दूसरी के संबंध/तुलना में किया जा सकता है (स्मेलसर, 1976 : 3)। अनेक विद्वानों का यह मानना है कि इस प्रकार की "एक जगत की परिकल्पना" जिसमें संबंधों के एक समुच्चय (सेट) के अन्तर्गत एक वर्णनात्मक वर्ग को रखा जा सकता है, उसका बेहतर विश्लेषण करने में हमारी मदद करती है। अतः मनोरंजन मोहन्ती, परिघटनाओं में केवल समानताओं और विषमताओं को न देखते हुए, संबंधों पर बल डालने का प्रयास करता है। अवरोक्त या उसके शब्दों में "तुलना और व्यक्तिरेक उपागम" (तुलना करना और अंतर बनाना उपागम) अंततः " द्वि भागीकरण में एक अभ्यास, ध्रुवित करने के लिए एक क्रिया" बन कर रह जाएगा। दूसरे शब्दों में, ऐसा अभ्यास प्रतिरुपों का वर्गीकरण एकाकी कक्षों के समूहों में करेगा, जिसके फलस्वरुप, एक तुलनात्मक अभ्यास केवल समूहों के अन्दर समानताओं और उनके बीच विषमताओं का पता लगाना मात्र बन जाएगा। एकता और विरोध के संबंधों की पहचान करने के लिए हमें अपने प्रश्नों को बदलना होगा। इसका अर्थ ये होगा कि पूछे गए प्रश्न ऐसे नहीं होने चाहिए कि उनके उत्तर केवल समानताओं और विषमताओं को ही नहीं बल्कि" उनके बीच जो संबंध है " उसे भी स्थापित करें। केवल तभी जाकर संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन जैसी राजनीतिक प्रणालियों की तुलनात्मकता को समझा जा सकता है, जो उदाहरण के लिए, अपनी सरकारों के स्वरुप की दृष्टि से भिन्न हैं (क्रमशः, अध्याक्षत्मक और संसदीय स्वरुप)।

केवल समानता और विषमता के संकेतकों को ही न देखते हुए, संबंधों को देखने की आवश्यकता का भी दावा स्मेलसर ने किया है। स्मेलसर का मानना है कि अक्सर एक तुलनात्मक अभ्यास केवल भिन्नताओं या विषमताओं के कारणों को खोजता रह जाता है और ऐसी व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है जो अक्सर "विकृतियाँ" होती हैं। "नवीन" और "अद्वितीय" के साथ दूसरे शब्दों में, वह जो दूसरों से भिन्न या अलग दिखता है, आकर्षण या तन्मयता मानव प्रकृति का हिस्सा हमेशा रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से, एक ऐसा प्रवृत्ति रही है जो या तो एक पूववर्ती युग के 'शुद्ध' अवशेषों के रुप में इन भिन्नताओं की प्रशंसा करती है अथवा

जिसे सामान्य व्यवहार माना जाता है, उसके विचलनों के रुप में देखती है। इस प्रकार समानताओं और भिन्नताओं पर बल दिए जाने के परिणामस्वरुप समानताओं या एकरुपताओं को मानकों के रुप में और विषमताओं और रुपांतरों को मानक के 'विचलन' के रुप में देखे जाने की संभावना हो सकती है। ऐसे विचलनों के लिए प्रस्तुत की गई व्याख्याएँ केवल 'विकृतियाँ' नहीं हो सकती बल्कि अक्सर द्विचर

प्रतियोगों, पदानुक्रमों या यहाँ तक कि आदर्श (अच्छा) और विपथगमी (बुरा) के रुप में वर्गीकरणों या वर्गों के श्रेणीकरणों का कारण बनती हैं। असमान संबंधों की एक प्रणाली में भिन्नताओं और उनके कारणों के आरोपण का परिणाम अक्सर भिन्न समझे जाने वाले समूहों को अधिकारों से वंचित करना होता है। हमने उपनिवेशवाद के इतिहास में देखा है कि उपनिवेशों की जनता को स्वतंत्रता और स्व-शासन के अधिकार से वंचित किया गया था। उपनिवेशवादी राष्ट्र ने इस वंचन को न्यायसंगत ठहराने के लिए पराधीन जनसंख्या को स्व-शासन के लिए असमर्थ बनाया क्योंकि उसकी सामाजिक संरचनाएँ और धार्मिक विश्वास भिन्न थे। भिन्न की स्थिति का निरुपण यहाँ शक्ति के प्रेक्षण स्थल (नज़रिए) से आया-उपनिवेशवादी राष्ट्रों के नज़रिए से। ऐसी स्थितियों में द्विचर प्रतियोग, जैसे पश्चिम और पूर्व, ऐसे राष्ट्रों या लोगों की ओर इशारा कर सकते हैं जिनका वर्णन न केवल भिन्न विशेषताओं (गुणों) से युक्त लोगों के रुप में किया जाता है बल्कि समय की दृष्टि से भी जिनके पृथक अस्तित्व हैं। इस प्रकार, जहाँ एक ओर, उपनिवेशवादी ब्रिटिश को आधुनिकीकरण की एक अवस्था तक पहुँचे हुओं के रुप में देखा जा रहा था, वहीं पराधीन भारतीयों को समयहीनता की एक स्थिति में रहते हुए देखा जाता था, दूसरे शब्दों में, एक पिछडे हुए अतीत में कैद। फिर भी, ऐतिहासिक दृष्टि से, हम एक ऐसे विश्व में रहे हैं, जिसकी विशेषताख एरिक वुल्फ के शब्दों में अंतः संबंध है। इस प्रकार, संबंधों की खोज करने के आग्रह को एरिक वुल्फ द्वारा महत्व दिया जाता है, जिसकी कृति, इस धारणा का सुधार करती है कि राष्ट्रों ने किया है जबकि अन्य राष्ट्र केवल मौन दर्शक थे। वुल्फ यह दर्शाता है कि ऐतिहासिक दृष्टि से अंतः संबंध राज्यों और राष्ट्रों के जीवन का तथ्य रहे हैं और अब भी कायम हैं (वुल्फ, 1982)। इसका अर्थ ये है कि संबंध को खोजना न केवल संभव है ; बल्कि ऐसे अतःसंबंधों की अवहेलना करना वास्तव में, ऐतिहासिक दृष्टि से, अमान्य होगा।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें

1) सामाजिक-वैज्ञानिक अनुसंधान के उद्देश्यों की पूर्ति में तुलनाएँ कैसे सहायता करती हैं?

....

....

....

....

2.4 तुलना की पद्धतियाँ

राजनीति शास्त्र के अध्ययन में, विद्वानों ने अनेक प्रकार की तुलनात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया है। व्यापक रुप से प्रयोग की जाने वाली तुलना की कुछ पद्धतियाँ इस प्रकार है :

2.4.1 प्रयोगात्मक पद्धति

यद्यपि प्रयोगात्मक पद्धति का समाजशास्त्रों में सीमित उपयोग है, फिर भी ये वो मॉडल या प्रतिमान उपलब्ध करती है जिस प्रकार अनेक तुलनावादी अपने अध्ययनों को आधारित करने की अभिलाषा करते हैं। सरल शब्दों में, प्रयोगात्मक पद्धति दो स्थितियों के बीच एक कारणात्मक संबंध स्थापित करना चाहती है। दूसरे शब्दों में, परीक्षण का लक्ष्य यह सिद्ध करना है कि एक स्थिति एक दूसरी स्थिति को उत्पन्न करती है या दूसरी स्थिति को एक निश्चित तरीके से प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई इसका अध्ययन/व्याख्या करना चाहे कि एक विशाल-समूह समायोजन में, बच्चों में, अंग्रेजी में उनकी अभिव्यक्ति की योग्यता की दृष्टि से अंतर क्यों है, तो अनेक कारकों को इस क्षमता को प्रभावित करते हुए देखा जा सकता है, अर्थात् सामाजिक पृष्ठभूमि, भाषा में निपुणता, परिवेश से सुपरिचय इत्यादि। अन्वेषक इन सभी कारकों के प्रभाव का अध्ययन कर सकता है या इनमें से किसी एक का या कारकों के एक सम्मिश्रण का भी। वह फिर उन स्थितियों/कारकों को अलग करता है जिनके प्रभाव का वह अध्ययन करना चाहता है और इसके परिणामस्वरुप प्रत्येक स्थिति की भूमिका को सुनिश्चित करता है। जिस स्थिति के प्रभाव को मापना है और जो अन्वेषक द्वारा संचालित किया जाता है, वह स्वतंत्र चर है, उदाहरण के लिए, सामाजिक पृष्ठभूमि इत्यादि। वह स्थिति, जिस पर प्रभाव का अध्ययन किया जाना है, वह इस प्रकार, अश्रित चर है। अतः अभिव्यक्ति की योग्यता पर सामाजिक पृष्ठभूमि के प्रभाव के अध्ययन के लिए रुपांकित एक प्रयोग में, सामाजिक पृष्ठभूमि स्वतंत्र चर होगा और अभिव्यक्ति की योग्यता अश्रित चर। अन्वेषक एक परिकल्पना तैयार करता है जिसे दो स्थितियों के बीच संबंध के रुप में वर्णित किया जाता है जिसका परीक्षण उस प्रयोग में किया जाता है, अर्थात् उच्चतर सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चे विशाल-समूह समायोजना में अंग्रेजी में अभिव्यक्ति की बेहतर योग्यता का प्रदर्शन करते हैं। प्रयोग के परिणाम अन्वेषक को अपने निष्कर्षों की व्यावहारिता के संबंध में सामान्य पस्ताव प्रस्तुत करने में और अन्य पूर्व अध्ययनों से उनकी तुलना करने में सक्षम बनाएँगे।

2.4.2 केस स्टडी

एक केस स्टडी, जैसा कि इसका नाम संकेत देता है, एक एकल केस (मामले) का गहराई से अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करती है। इस अर्थ में, जबकि पद्धति अपने आम में पूरी तरह से तुलनात्मक नहीं है, यह डेटा (आंकडे) उपलब्ध करती है (एकल केस या मामलों पर) जो सामान्य पर्यवेक्षणों का आधार बन सकता है। इन पर्यवेक्षणों का प्रयोग, अन्य 'केस' के साथ तुलना करने के लिए और सामान्य व्याख्याएँ प्रस्तुत करने के लिए, किया जा सकता है। केस स्टडीज़ फिर भी, एक असंगत तरीके से 'विशिष्टता' या जिन्हे 'विपथगामी' कहा जाता है, या असामान्य केस उन पर बल दे सकता है। उदाहरण के लिए, तुलनावादियों में ये प्रवृति हो

सकती है कि ऐसे प्रश्नों का अनुसंधान करें कि संयुक्त राज्य अमेरिका में एक समाजवादी दल क्यों नहीं है बजाय इसके कि अधिकांश पश्चिमी लोकतंत्रों सहित, स्वीडन में यह दल क्यों है। अलेक्स-डी-टॉकविल के शास्त्रीय अध्ययनों, 18 वीं शताब्दी के फ्राँस (द ओल्ड रेजीम एंड द फ्रेंच रेवल्यूशन, 1856) और 19 वीं शताब्दी के संयुक्त राज्य अमेरिका (डेमॉक्रेसी इन अमेरिका खंड 1, 1835) का हम संक्षेप में अध्ययन करेंगे ये दर्शाने के लिए कि एकल केस पर केंद्रण द्वारा तुलनात्मक व्याख्याएँ कैसे हो सकती हैं। उसके दोनों अध्ययन भिन्न प्रश्न पूछते हुए प्रतीत होते हैं। फ्राँस के संदर्भ में, वह ये स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि 1789 की फ्रेंच क्रांति क्यों हुई और संयुक्त राज्य अमेरिका के संदर्भ में, वह वहाँ सामाजिक समानता की स्थितियों के कारणों और परिणामों पर ध्यान देता हुआ दिखाई देता है। यद्यपि इन दोनोंकृतियों के बीच विषय की आधारभूत एकता है। यह एकता, आंशिक रुप से दोनों में, मिलते- जुलते वैचारिक मुद्दों में टॉकविल की पूर्वव्यस्तता के कारण है, अर्थात् समानता और असमानता तानाशाही और स्वतंत्रता तथा राजनीतिक स्थिरता और अस्थिरता और सामाजिक संरचना तथा सामाजिक परिवर्तन पर उसके विचार। साथ ही, दोनों अध्ययनों की बुनियाद में कुलीनतंत्र और लोकतंत्र, असमानता से समानता की ओर पश्चिमी ऐतिहासिक संक्रमण की निष्ठुरता के संबंध में उसका दृढ़ विश्वास भी है। अन्ततः यह तथ्य है कि इन दोनों अध्ययनों में दूसरा राष्ट्र एक 'अनुपस्थित' केस या प्रतीक निर्देश्य के रुप में कायम रहता है, और यही इन व्यक्तिगत कृतियों को तुलनात्मक बनाते हैं और कुछ लोगों के अनुसार, एक एकल तुलनात्मक अध्ययन बनाते हैं। इस प्रकार, अमेरिकी समाज का उसके द्वारा विश्लेषण, फ्रेंच समाज पर उसके परिप्रेक्ष्य द्वारा प्रभावित हुआ और यही विपरीत क्रम से भी हुआ। अमेरिकी केस को 'जन्म से लोकतंत्र' के एक 'शुद्ध' केस के रुप में देखा गया, जहाँ समानता की दिशा में सामाजिक विकासक्रम 'लगभग अपनी प्राकृतिक सीमाओं' तक पहुँच चुका था, जिसके फलस्वरुप राजनीतिक स्थिरता, उसके विशाल मध्य वर्ग में सापेक्ष वंचन की भावना की क्षीणता और परिवर्तन के प्रति एक रूढ़िवादी दृष्टिकोण की स्थिति उत्पन्न हुई। फ्रेंच केस एक कुलीनतंत्र था (पदानुक्रमिक असमानताओं की एक प्रणाली) जिसने 18 वीं शताब्दी में एक संक्रमण की अवस्था में प्रवेश किया था, जिसमें असमानता के साथ समानता की अपेक्षाओं और इच्छा के मिश्रण की स्थितियाँ थी, जो कुलीनतंत्र और समानता के दो सिद्धांतों के अस्थिर मिश्रण में परिणत हुई, जो तानाशाही की ओर ले गई और जिसका समापन 1789 की क्राँति में हुआ। इस प्रकार, टॉकविल की व्यक्तिगत केस की अद्वितीय केस-स्टडी वास्तव में फ्राँस और संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा अपनाए गए विभिन्न ऐतिहासिक मार्गों की व्याख्या करने के लिए ऐतिहासिक बलों की परस्पर क्रिया के एक जटिल प्रतिमान (मॉडल) के अन्तर्गत राष्ट्रीय विषमताओं और समानताओं का अध्ययन था।

2.4.3 सांख्यिकीय पद्धति

सांख्यिकीय पद्धति वर्गों और चरों का प्रयोग करती है जो मात्रात्मक हैं या जिनका प्रतिनिधित्व अंको/संख्या द्वारा किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, मतदान प्रतिमान, सार्वजनिक व्यय, राजनीतिक दल, कुल मतदान, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि। यह समानान्तर रुप से अनेक चरों के प्रभावों संबंधों के अध्ययन के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करता है। परिशुद्ध डेटा (आंकडों) को एक

सुगठित और दृष्टिगत रुप से प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करने में यह लाभकारी है जिसके कारण समानताएँ और विषमताएँ संख्यात्मक प्रतिनिधित्व के माध्यम से दृष्टिगोचर होते हैं। यह तथ्य कि अनेक चरों का अध्ययन एक साथ किया जा सकता है, संबंध की दृष्टि से जटिल व्याख्याओं को खोजने का भी अद्वितीय अवसर प्रदान करता है। सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग दीर्घकालीन प्रवृत्तियों और प्रतिमानों की व्याख्या और तुलना में तथा भावी प्रवृत्तियों के बारे में भविष्यवाणियों को प्रस्तुत करने में भी सहायक है। उदाहरण के लिए, कुल मतदान और आयु-वर्गों की सांख्यिकीय तालिकाओं के विश्लेषण के माध्यम से आयु और राजनीतिक सहभागिता के बीच संबंध का अध्ययन किया जा सकता है। लम्बी अवधियों में इस डेटा (आंकडों) की तुलना, या अन्य देों/राजनीतिक प्रणालियों में मिलता-जुलता डेटा, या धार्मिक समूहों, सामाजिक वर्ग और आयु की दृष्टि से कुल मतदान को प्रदर्शित करने वाला डेटा, जटिल सामान्यीकरणों के निर्माण में हमारी सहायता कर सकता है, उदाहरण के लिए मध्यवर्गीय हिन्दू, 25 और 30 की आयु के बीच के पुरुष मतदाता सर्वाधिक विपुल मतदाता हैं। पार-राष्ट्रीय तुलनाएँ ऐसे जाँच परिणाम दे सकती हैं जैसे, 25 से 30 की आयु के बीच की मध्यवर्गीय महिलाओं द्वारा भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों की तुलना में, पश्चिमी की उपयोगिता इसकी सापेक्ष सुलभता में है जिसके साथ ये विभिन्न चरों के साथ निपटती है। परन्तु यह संपूर्ण उत्तर देने में या पूरी तस्वीर प्रस्तुत करने में असफल हो जाती है। फिर भी, उन संबंधों और उन व्यापक श्रेणियों के बारे में जिनका प्रयोग सांख्यिकीय पद्धति अपने संख्यात्मक प्रतिनिधित्व को सुगम बनाने के लिए प्रयोग करती है, अधिक व्यापक व्याख्याएँ देने के लिए गुणात्मक विश्लेषण के साथ इस पद्धति का प्रयोग किया जा सकता है।

2.4.4 ध्यान.केंद्रित तुलनाएँ

ये अध्ययन राष्ट्रों की एक छोटी संख्या को लेते हैं, अक्सर केवल दो (युग्मित या द्विआधारी तुलनाएँ) और प्रायः इन राष्ट्रों की राजनीति के निश्चित पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, बजाय सभी पहलुओं पर। विभिन्न राष्ट्रों में इस पद्धति के माध्यम से लोकनीतियों का सफलतापूर्वक तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। लिप्सेट दो प्रकार के द्विआधारी या युग्मित तुलनाओं के बीच अंतर बनाना है—निहित और सुस्पष्ट। निहित द्विआधारी तुलना में, अन्वेषक का अपना राष्ट्र, जैसे टॉकविल द्वारा अमेरिका का अध्ययन, संदर्भ का कार्य कर सकता है। सुस्पष्ट युग्मित तुलनाओं में, तुलना के लिए दो स्पष्ट केस (राष्ट्र) होते हैं। इन दो राष्ट्रों का अध्ययन उनके विशिष्ट पहलुओं के संबंध में किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, भारत और चीन में जनसंख्या नियंत्रण की नीति या दोनों देशों की संपूर्णता में, उदाहरण के लिए, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के संबंध में। अवरोक्त, (बाद वाला अध्ययन) दो केस के समानान्तर अध्ययन की ओर जा सकता है जिसमें संबंध के अध्ययन के लिए बहुत कम गुंजाइश होगी।

2.4.5 ऐतिहासिक पद्धति

ऐतिहासिक पद्धति को अन्य पद्धतियों से इस प्रकार अलग किया जा सकता है कि वह कारणात्मक या कारण संबंधी व्याख्याओं को खोजता है जो ऐतिहासिक दृष्टि से संवेदनशील होते हैं। एरिक वुल्फ इस बात पर बल देता है कि कोई भी अध्ययन जो समाजों और मानवीय क्रिया के कारणों को समझने का प्रयास

करता है, वह केवल समस्याओं के तकनीकी हल जो तकनीकी शब्दावली में प्रस्तुत किए जाने हों, उनकी खोज नहीं कर सकता। महत्व की बात ये थी कि यएक विश्लेषणात्मक इतिहास का प्रयोग किया जाए जो वर्तमान के कारणों को अतीत में खोजता हो। ऐसा विश्लेषणात्मक इतिहास, समय की एक अवधि में, एक एकल संस्कृति या राष्ट्र, एक एकल संस्कृति क्षेत्र या यहाँ तक कि एक एकल महाद्वीप के अध्ययन से विकसित नहीं किया जा सकता था, बल्कि मानव जनसंख्याओं ओर संस्कृतियों के बीच संपर्कों परस्पर क्रियाओं और परस्पर संबंधों के अध्ययन से संभव था।

ऐतिहासिक अध्ययनों ने एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक और राजनीतिक परिघटनाओं की कारणात्मक व्याख्याओं को ढूँढ़ने के लिए एक या अधिक केस पर ध्यान केंद्रित किया है। एकल केस स्टडीज़ (एकल वृत्त अध्ययन) जैसा कि पिछले खंड में उल्लेख किया गया है, सामान्य वक्तव्य उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं जिन्हें अन्य केस पर लागू किया जा सकता है। थेडा स्कोक्पॉल ध्यान दिलाती है कि एक से अधिक केस का प्रयोग करने वाले तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन मोटे तौर पर दो श्रेणियों में आते है 'तुलनात्मक इतिहास' और 'तुलनात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण'। तुलनात्मक इतिहास का सामान्य रुप से, ढीले तरीके से किसी अध्ययन का उल्लेख करने के लिए प्रयोग किया जाता है, जिसमें राष्ट्र राज्यों, संस्थापक संकुलों, या सभ्यताओं के दो या अधिक ऐतिहासिक प्रक्षेप पथों को एक साथ रखा जाता है। कुछ अध्ययन जो इस शैली में आते हैं, जैसे चार्ल्स, लूई और रिचर्ड टिल्ली की 'द रेबेलियस संचुरी 1810–1930, एक विशिष्ट ऐतिहासिक मॉडल की रुपरेखा तैयार करने का प्रयास करते हैं जिन्हें भिन्न राष्ट्रीय संदर्भों के आर-पार लागू किया जा सकता है। अन्य अध्ययन, जैसे राइनहार्ड बेनेडिक्स का 'नेशन बिल्डिंग एंड सिटिज़नशिप' और पैरी एंडरसन का 'लिनिएजस ऑफ द रेब्सल्यूटिस्ट स्टेट', तुलनाओं का प्रयोग, मूलरुप से राष्ट्रों या सभ्यताओं के बीच विषमताओं को उजागर करने के लिए करते हैं जिनकी पृथक समष्टियों के रुप में कल्पना की गई है। स्कोक्पॉल स्वयं द्वितीय पद्धति का अनुमोदन करती है, अर्थात् तुलनात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण का मूल उद्देश्य 'राष्ट्र राज्यों जैसी बृहत् इकाइयों के लिए अनिवार्य घटनाओं या संरचनाओं के बारे में कारणात्मक, व्याख्यात्मक परिकल्पना का विकास, परीक्षण और शोधन का प्रयास करना है' विशिष्ट परिघटना (उदाहरण के लिए क्राँतियाँ) के बारे में कारणात्मक संबंध को विकसित करने और सामान्यीकरणों को प्राप्त करने के लिए, 'राष्ट्रीय ऐतिहासिक प्रक्षेप पथों के चयनित हिस्सों को तुलना की इकाइयों के रुप में' लेकर वह इसे करता है। ऐसे दो विधियाँ हैं जिनके द्वारा जिस परिघटना की व्याख्या करने का प्रयास किया जा रहा है, उसके संभावित कारणों के साथ मान्य संबंध स्थापित किए जा सकते हैं। जॉन स्टअर्ट मिल द्वारा अपनी कृति 'ए सिस्टम ऑफ लॉजिक' में प्रस्तुत की गई ये विधियाँ हैं (क) सहमति की विधि और (ख) अंतर की विधि। सहमति की विधि के अन्तर्गत, अध्ययन के लिए अनेक केस लिए जाते हैं जिनके बीच परिघटना के साथ-साथ परिकल्पना में प्रस्तावित कारणात्मक कारकों का समुच्चय भी साझा होता है। अंतर की विधि, जिसका प्रतिपादन स्कोक्पॉल ने किया था, केस के दो समुच्चय लेती है : (क) सकारात्मक केस, जिनमें परिघटना के साथ परिकल्पनाकृत कारणात्मक संबंध भी उपस्थित है और (ख) नकारात्मक केस, जिनमें परिघटना के साथ-साथ कारण भी अनुपस्थित है परन्तु अन्य प्रकार से ये केस प्रथम

समुच्चय के समान हैं। फ्रैंच, रुसी और चीनी क्राँतियों के अपने तुलनात्मक विश्लेषण में, अपनी कृति स्टेट्स एंड सोशल **रेवोल्यूषन्स** : ए कंपेरेटिव अनैलिसिस ऑफ फ्राँस, एशिया एंड चाइना, स्कोक्पॉल (1979) में स्कोक्पॉल इन तीनों को सफल सामाजिक क्राँति के सकारात्मक केस के रुप में लेती है और दावा करती है कि ये तीनों अनेक अन्य विषमताओं के बावजूद समरुपी कारणात्मक प्रतिमानों को प्रकट करते हैं। प्रथम केस में कारणात्मक संबंध के बारे में तर्कों को मान्य बनाने के लिए वह नकारात्मक केस के एक सेट को, अर्थात् 1905 की असफल क्राँति, और इंग्लिश, जापानी और जर्मन इतिहासों के चयनित पहलुओं को लेती है। ऐतिहासिक पद्धति के आलोचकों का मानना है कि चूंकि अवरोक्त (बाद-वाली) भारी संख्या में केस का अध्ययन नहीं करती, वह एक सच्चे वैज्ञानिक तरीके से एक निश्चित परिघटना के अध्ययन का अवसर प्रदान नहीं करती। हैरी एक्स्टीन ने, उदाहरण के लिए, तर्क दिया है कि छोटी संख्या के केस पर आधारित सामान्यीकरण 'शब्दकोष के अर्थ में निश्चित रुप से एक सामान्यीकरण होगा'। फिर भी 'कार्यप्रणाली विषयक अर्थ में, सामान्यीकरण' को 'केस की एक बड़ी संख्या को, जो इतनी बडी हो कि सांख्यिकीय विश्लेषण जैसे कुछ निश्चित कठोर परीक्षण प्रक्रियाओं के लिए प्रयोग की जा सके, सम्मिलित करना चाहिए' (हैरी एक्स्टीन, इंटर्नल वॉर, 1964)

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें

1) प्रयोगात्मक पद्धति क्या है? एक तुलनात्मक ढाँचे के अन्तर्गत राजनीतिक परिघटना के अध्ययन के लिए यह पद्धति कहाँ तक उपयुक्त है?

....

....

....

....

....

....

2) तुलना की विभिन्न पद्धतियाँ क्या हैं? तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में इनमें से प्रत्येक का सापेक्ष लाभ क्या है?

....

....

....

....

....

....

2.5 सारांश

तुलना एक मौलिक मानवीय प्रयास है। जाने या अनजाने हम अपने चारों ओर अनेक वस्तुओं की तुलना करते रहते हैं। राजनीति शास्त्र के विषय में, तुलनात्मक पद्धतियों का प्रयोग करते हुए, न केवल संस्थाओं, प्रणालियों या परिघटनाओं के सामान्य वर्णन या विशेषताओं की व्याख्या की जा सकती है बल्कि राजनीतिक प्रणाली की एक सूक्ष्म भेद-युक्त समझ भी उपलब्ध की जा सकती है—प्रतिमान, समानताएँ और विषमताएँ।

तुलना को राजनीतिक अन्वेषण की एक पद्धति के रुप में प्रयोग करने की प्रक्रिया में, विद्वानों ने अनेक प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग किया है जैसे प्रयोगात्मक पद्धति, केस-स्टडी पद्धति, सांख्यिकीय पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति इत्यादि। ये पद्धतियाँ वे मौलिक उपकरण और तकनीक हैं जो तुलनावादियों द्वारा आनुभाविक डेटा और परिमाण निर्धारित करने योग्य चरों के माध्यम से राजनीतिक परिघटनाओं के बारे में एक वैज्ञानिक और गहरी व्याख्या की स्थापना के लिए प्रयोग किए जाते हैं। परन्तु, अपने अन्वेषण के लिए उपयुक्त पद्धति की पहचान करना शोधकर्ता (तुलनावादियों) का काम है। यदि एक अकेली पद्धति पर्याप्त न हो, तो एक व्यापक समझ की प्राप्ति के लिए पद्धतियों के सम्मिश्रण का प्रयोग किया जा सकता है।

2.6 मुख्य शब्द

निर्माण : एक निर्माण एक भावात्मक अवधारणा है जिसे एक निश्चित परिघटना की व्याख्या के लिए विशेष रुप से बनाया (या चुना) जाता है। एक निर्माण एक सरल अवधारणा हो सकती है अथवा संबंधित अवधारणाओं के सेट (समुच्चय) का सम्मिश्रण।

कारण-संबंधी (कारणात्मक) व्याख्या : किसी वस्तु को समझने का तरीका, यह मानते हुए कि कुछ तथ्य अन्य तथ्यों के उभरने के कारण बनते हैं, उदाहरण के लिए, अत्यधिक जनसंख्या आवास की समस्या का कारण हो सकती है।

पद्धति : वैज्ञानिक ज्ञान के निर्माण या सिद्धांत प्रस्तुत करने के लिए तकनीकों का एक मानकीकृत और संगठित सेट (समुच्चय)। पद्धतियों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है : (क) तुलनात्मक (एक से अधिक केस का करते हुए), (ख) संरुपात्मक (एक एकल केस-स्टडी का प्रयोग करते हुए) और (ग) ऐतिहासिक (समय और अनुक्रम का प्रयोग करते हुए)। पद्धति मुख्यतः 'चिंतन के बारे में चिंतन' है।

मॉडल (प्रतिमान) : प्रणाली की समष्टि या एक हिस्से का प्रतिरुप जिसका निर्माण प्रणाली के अध्ययन के लिए किया जाता है। प्रणाली या परिघटनाओं के प्रतिनिधित्व द्वारा एक मॉडल यथार्थ को सरल बना देता है।

सांप्लिंग (प्रतिचयन) : पर्यवेक्षण और सांख्यिकीय अनुमान के उद्देश्य से, 'सांपल' (नमूने) के नाम से पुकारे जाने वाले उपसमुच्चय (सबसेट) को चुनने की एक सांख्यिकीय प्रक्रिया है। उदाहरण के लिए, संभावयता/प्रतिबंधों के कारण हम एक देश की समस्त जनसंख्या का अध्ययन नहीं कर सकते ; अतः हम

जनसंख्या में से प्रतिनिधि नमूनों को पर्यवेक्षण और विश्लेषण के लिए चुनते हैं ताकि उस नमूने से प्राप्त अनुमान को जनसंख्या के लिए सामान्यीकृत किया जा सकता है।

सैद्धांतिक प्रस्ताव : एक कथन (एक सामान्यीकरण के समान जो दो चरों के बीच संबंध की पुष्टि या खंडन करता है। कथन से सामान्य अनुप्रयोग की अपेक्षा की जाती है।

2.7 संदर्भ

दुर्खीम, एमिल, 1984. द डिविज़न ऑफ लेबर इन सोसाइटी, मैक्मिल्लन प्रेस।

हेग, रॉड, मार्टिन हैरप, शॉन ब्रेसलिन, 1993. कंपेरेटिव गवर्नमेंट एंड पॉलिटिक्स, मैक्मिल्लन, लंदन, (तृतीय संस्करण)

मोहन्ती, मनोरंजन, 1975. "कंपेरेटिव पोलिटिकल थ्योरी एंड थर्ड वर्ल्ड सेंसिटिविटि" टीचिंग पॉलिटिक्स, संख्या, 1 और 2।

सारटोरी, जियोवान्नी, 1994. "तुलना, क्यों और कैसे", माटेइ दोगन और अली कज़ानसिगिल (सं), कंपेरिंग नेशन्स, कॉन्सेप्टस, स्टैटजीज़, सबस्टेंस, हलैकवेल, ऑक्सफोर्ड।

स्वॉनसन गय ई. , 1971. "फ्रेमवर्क्स फॉर कंपेरेटिव रिसर्च : स्ट्रकचरल ऐंथ्रोपॉलजी एंड द थ्योरी ऑफ ऐक्शन", आइवन वैलियर (सं) कंपेरेटिव मेथड्स इन सोशियॉलजी, बर्कले।

स्मेलसर, नील जे. 1976, कंपेरेटिव मेथड्स इन द सोशल साइन्सेज, प्रेंटिस हॉल, एंगिलवुड़ क्लिफ्स।

स्कोक्पॉल, थेडा, 1979, स्टेट्स एंड सोशल रेवोल्यूशन्स : ए कंपेरेटिव अनैलिसिस ऑफ फ्रॉंस, एंशिया एंड चाइना, केंब्रिज प्रेस।

टॉकविल, अलेक्स-डी, 1835, डेमॉक्रेसी इन अमेरिका : खंड 1, (पुनर्मुद्रण 2002), यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

टॉकविल, अलेक्स-डी, 1856, द ओल्ड रेजीम एंड द रेवोल्यूशन, हार्पर ब्रदर्स, न्यू यॉर्क।

वुल्फ, एरिक आर, 1982. यूरोप एंड द पीपिल विदाउट हिस्ट्री यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) पद्धति आपेक्षिक सुगमता के साथ किसी कार्य को करने या किसी वस्तु को निष्पादित करने का उपयोगी तौर-तरीका है। तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में, सामाजिक और राजनीतिक विश्लेषण के लिए विद्वानों ने अनेक प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग किया है। पद्धतियों का प्रयोग, राजनीतिक प्रक्रिया,

प्रणालियों या परिघटनओं के अध्ययन/अनुसंधान के दौरान परिकल्पनाओं को उत्पन्न करने, संकल्पनात्मक नवाचार और सिद्धांत सूत्रीकरण के लिए किया जाता है।

बोध प्रश्न 2

1) तुलना के साथ अध्ययन सामाजिक.वैज्ञानिक अनुसंधान में विशाल महत्व प्रदान करता है। तुलनावादियों ने हमेशा दावा किया है कि समाज शास्त्रों में तुलनाओं के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसंधान उपार्जित किया जा सकता है। तुलनात्मक राजनी कि विषय में तुलनावादी केवल तुलना नहीं करते बल्कि राजनीतिक जीवन के बारे में परिशुद्ध और यथासंभव जानकारी प्राप्त करने के लिए तुलना करते हैं—राजनीतिक संस्थाओं, प्रणालियों या परिघटनाओं के प्रतिमानों, उनके बीच और उनके मध्य में समानताओं और विषमताओं का।

2) तुलनात्मक राजनीति में प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग दो समतुल्य स्थितियों के बीच कारण.संबंधी या कारणात्मक संबंधों को स्थापित करने के लिए किया जाता है। प्रयोगात्मक पद्धति शोधकर्ता को उन निश्चित स्थितियों या रीति को स्थापित करने में सक्षम बनाती है जिसके अन्तर्गत एक के द्वारा दूसरी उत्पन्न होती है, अथवा दूसरी को प्रभावित करती है। प्रयोगात्मक पद्धति का एक महत्वपूर्ण पहलू ये है कि वैज्ञानिक अन्वेषण के लिए यह लगभग सर्वाधिक आदर्श पद्धति ळें

बोध प्रश्न 3

1) तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में अनेक प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है जैसे प्रयोगात्मक पद्धति, केस.स्टडी पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, सांख्यिकीय पद्धति इत्यादि। इन सभी का लक्ष्य वैज्ञानिक व्याख्या करना है। प्रत्येक का एक अलग प्रसंग में अपना विशेष लाभ है। प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग सामान्य रुप से दो स्थितियों के बीच संबंध की स्थापना के लिए किया जाता है, जबकि केस.स्टडी पद्धति का प्रयोग एक निश्चित केस (मामले) का गहराई से अध्ययन के लिए किया जाता है। दूसरी ओर, सांख्किीय पद्धति उन केस (मामलों) में निश्चित लाभ प्रदान करती है, जिनका संबंध वर्गों और चरों से हो जो मात्रात्मक या मापनीय होते हैं या डेटा (आंकडों) के अंकों के माध्यम से जिनका प्रतिनिधित्व किया जा सकता है। ऐतिहासिक पद्धति एक अन्य पद्धति है जिसे उपरोक्त पद्धतियों से अलग किया जा सकता है जो मूल रुप से उस अध्ययन में महत्वपूर्ण है जिसके लिए ऐतिहासिक व्याख्याओं की आवश्यकता होती है।

इकाई 3 संस्थागत दृष्टिकोण

संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 परिचय

3.2 संस्थागत दृष्टिकोण

3.2.1 संस्थागत दृष्टिकोण : एक ऐतिहासिक अवलोकन

3.2.2 संस्थागत दृष्टिकोण एवं तुलनात्मक सरकार का उद्भव

3.3 संस्थागत दृष्टिकोण : आलोचनात्मक मूल्यांकन

3.4 समकालीन तुलनात्मक अध्ययन में संस्थागत दृष्टिकोण

3.5 सारांश

3.6 संदर्भ

3.7 संदर्भ

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम निम्न बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे–

क) क्या चीजें संस्थागत दृष्टिकोण निर्मित करती है।

ख) तुलनात्मक अध्ययन में इस दृष्टिकोण का महत्व

ग) तुलनात्मकता की इकाईयां

घ) विशिष्ट प्रश्न जिनका उत्तर यह दृष्टिकोण खोजता है या वे कौन से प्रश्न है जिनका उत्तर यह दृष्टिकोण दे सकता है ? और इसकी आकांक्षाएं एवं क्षमताएं क्या है ?

ङ) यह दृष्टिकोण अंतर और समानता को कैसे समझाता है। इस इकाई को समझने के बाद बाद आप निम्न करने में सक्षम होगें :–

- संस्थागत दृष्टिकोण को परिभाषित करें।
- इसकी तुलना के साधन बताएं।
- इस तरह की तुलना के द्वारा दिए जाने वाले उद्देश्यों की व्याख्या करें।
- इस दृष्टिकोण के सहूलियत के बिंदुओं की व्याख्या करें।
- इस दृष्टिकोण के महत्व और सीमाओं की व्याख्या करें।

3.1 परिचय

तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण के लिए संस्थागत दृष्टिकोण, सरल शब्दों में कहे तो संस्थानों का तुलनात्मक अध्ययन है। अध्ययन की प्रकृति (तुलनात्मक) और विषय वस्तु (संस्थान) इस प्रकार काफी स्पष्ट हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी को संसदीय लोकतंत्रों में ऊपरी सदनों के सापेक्ष महत्व का अध्ययन

करना होता था, तो कई संसदीय लोकतंत्रों में ऊपरी सदनों के सापेक्ष महत्व का अध्ययन करना होगा (उदाहरण के लिए, भारत में राज्यसभा और यूनाइटेड किंगडम में हाउस ऑफ लॉर्डस) एवं प्रत्येक मामले में उनके सापेक्ष महत्व का आकलन होता है। तब कोई ऐसे संस्थानों के इस तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर, एक सामान्य निष्कर्ष पर पहुंच सकता है और उनकी प्रांसगिकता या संसदीय लोकतंत्रों में उपयोगिता के बारे में स्पष्टीकरण दे सकता है। उदाहरणार्थ, संसद के ऊपरी सदनों के गठन में प्रतिनिधित्व चरित्र का अभाव होता है, या ऊपरी सदनों का वंशानुगत चरित्र विधायिकाओं के लोकतांत्रिक चरित्र को मिटा देता है। उदाहरण के लिए, यूनाइटेड किंगडम में संसद के दोनों सदनों के विकास के संदर्भो (सामाजिक और आर्थिक) की परख कर सकते हैं कि हाउस ऑफ लॉर्डस ने वंशानुगत चरित्र को क्यों बनाए रखा। तत्पश्चात् एक अन्य संदर्भ को भी समझा जा सकता है, जिसमें वर्तमान दिशा उसके वंशानुगत चरित्र को समाप्त करने की पहल करती है। तब एक व्यक्ति उस संदर्भ को भी समझ सकता है जिसमें उसके वंशानुगत चरित्र को समाप्त करने की वर्तमान पहल सामने आई है। लंबे समय तक, तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण मुख्य रूप से संस्थानों के तुलनात्मक अध्ययन के साथ जुड़ा हुआ था। ऐतिहासिक रूप से, तुलनात्मक पद्धति का उपयोग पहली बार संस्थानों का अध्ययन करने के लिए किया गया था। संस्थानों के अध्ययन ने न केवल तुलनात्मक अध्ययन की शुरूआत को चिंहित किया, बल्कि यह उन्नीस सौ पचास के दशक तक तुलनात्मक राजनीति में कमोबेश प्रमुख दृष्टिकोण रहा। इस प्रकार, कोई यह प्रस्ताव कर सकता है कि पारंपरिक रूप से तुलनात्क राजनीतिक विश्लेषण संस्थानों और उन तरीकों के अध्ययन तक सीमित था, जो इन संस्थानों ने खुद को सत्ता के वितरण एवं सरकार की विभिन्न परतों और अंगो के बीच संबंधों में प्रकट किया था।

3.2 संस्थागत दृष्टिकोण

इस पर आमतौर पर सहमति है कि किसी समस्या के बारे में किसी भी दृष्टिकोण या जांच में निम्न चीजों से संबंधित कुछ विशेषताएं प्रदर्शित होती है– (क) विषय वस्तु (जिसका अध्ययन किया जा रहा है), (ख) शब्दावली (साधन या भाषा) और (ग) राजनीतिक परिपेक्ष्य की पसंद (जो सहूलियत बिंदु निर्धारित करता है और किस दिशा से एवं किस उद्देश्य से जांच का निर्देश दिया जाता है)। यदि इन तीनों के बारे में संस्थागत दृष्टिकोण की विशेषताओं के आधार पर विचार किया जाता है, तो इसे निम्न तरीके से इंगित किया जाता है –(अ) इसका सरोकार सरकार के संस्थानो और शक्ति के वितरण के अध्ययन से होता है अर्थात संविधान, सरकार कानूनी–औपचारिक संस्थाओं का अध्ययन, (ब) यह वृहत स्तर पर कानूनी और अक्सर कल्पनावादी और निदेशात्मक/आदर्शवादी शब्दावली होती है, अभी तक ऐतिहासिक रूप से इसमें 'आदर्श राज्य' और 'अच्छे आदेश' जैसे अमूर्त नियम एवं शर्ते होती है, (स) एक दार्शनिक, ऐतिहासिक या कानूनी परिपेक्ष्य।

इस दृष्टिकोण की एक विशेषता इसकी नृजातिकेंद्रीयता भी रही है। तुलनात्मक राजनीति में संस्थागत दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रमुख कार्य पश्चिमी देशों में केवल सरकारों और संस्थानों के साथ संबंधित है। अतः इस दृष्टिकोण

में निहित पश्चिमी उदारवादी लोकतांत्रिक संस्थानों की प्रधानता में विश्वास है। यह विश्वास न केवल पश्चिमी उदार लोकतंत्र को सरकार के सर्वोत्तम रूप की तरह देखता है, बल्कि यह इसे एक 'सार्वभौमिक' एवं 'मानक चरित्र' भी देता है। पश्चिमी उदार लोकतंत्र का सार्वभौमिक चरित्र मानता है कि सरकार का यह रूप न केवल सबसे अच्छा है, बल्कि यह सार्वभौमिक रूप से भी अनुकूल है। पश्चिमी उदारवाद लोकतांत्रिक देश के 'मानकीय' धारणा से चलता है। यदि यह शासन का सबसे अच्छा रूप है जो सार्वभौमिक रूप से लागू होता है, उदार लोकतंत्र सरकार का वह रूप है जिसे हर जगह अपनाया जाना चाहिए।

इस निर्धारित मानदंड अर्थात उदार लोकतंत्र ने हालांकि एक महत्वपूर्ण अपवाद की भी गुंजाइश दी। यह अपवाद उपनिवेशों के शासन की प्रथाओं और निहितार्थो में सामने आया :– (अ) कि उदार लोकतंत्र की संस्थाएं विशेष रूप से अपने मूल और संदर्भो में पश्चिमी थी और (ब) कि गैर–पश्चिमी देश लोकतांत्रिक देश लोकतांत्रिक स्वशासन के लिए तब तक दुरूस्त नहीं थे जब तक कि उन्हें पश्चिमी साम्राज्यवादी शासन के तहत प्रशिक्षित नहीं किया गया।

निम्नलिखित खंडो में, हम संस्थागत दृष्टिकोण की उत्पत्ति का प्राचीन काल से वतर्मान सदी की पहली तिमाही तक अध्ययन करेंगे जब यह तुलनात्मक अध्ययन की सुविधा हेतु एक प्रमुख दृष्टिकोण बन गया।

3.2.1 संस्थागत दृष्टिकोण : एक ऐतिहासिक अवलोकन

शायद सरकारों का सबसे पुराना तुलनात्मक अध्ययन अरस्तु द्वारा किया गया था, जिन्होंने ग्रीक शहर–राज्यों में संविधान और प्रथाओं का अध्ययन किया था। तथाकथित 'बर्बर' राज्यों की राजनीति का विरोध करते हुए, अरस्तु ने सरकारों को राजतंत्रों, कुलीनतंत्रों और लोकतंत्रों की श्रेणी में विभक्त किया और इनमें 'आदर्श' और 'विकृत' रूप की सरकारों की बीच भेदों के प्रकारो में बांटा। इस स्तर पर तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन को इस तथ्य से चिंहित किया गया था कि तथ्यों और मूल्यों के बीच एक अंतर्सबंध कहा जा सकता है। इसकी उत्पत्ति के इस चरण में, संस्थानों के एक अध्ययन ने सरकार के 'सिद्धांत और व्यवहार' का विश्लेषण करने का प्रयास नहीं किया। इसके बजाय 'आदर्श' राज्यों और सरकारों के रूपों की खोज करने की अत्यधिक इच्छा थीं। दूसरे शब्दों में, कल्पनाशीलता पर अधिक जोर दिया गया था, अर्थात 'क्या होना चाहिए' के प्रश्नों पर जोर दिया बजाय इसका स्पष्टीकरण के विश्लेषण करने कि क्या मौजूद है या जिसका अस्तित्व है।

ठारहवीं शताब्दी के मध्य में मैकियावेली (द प्रिंस) और मॉन्टेस्क्यू(द स्प्रिट ऑफ लाज्स) में मौजूदा मामलों के विषय में अनुभवजन्य विवरण और तथ्यों पर जोर दिया जाने लगा। हालांकि, मॉन्टेस्क्यू का मुख्य रूप से सवैधानिक वकीलों द्वारा अनुकरण किया गया था, जिनके व्यवसाय ने यह निर्धारित किया था कि वे सामग्री पर अधिक ध्यान केंद्रित करते है अर्थात सरकारों के सैद्धांतिक (कानूनी. –संवैधानिक) ढांचे पर अधिक जोर देते है बजाय इस पर कि ये ढांचे कैसे व्यवहार में आएं। कई मायनों में, टोकविले सरकारों के 'सिद्धांत और व्यवहार' के अध्ययन में पथप्रदर्शक थे, जो बाद के वर्षो में तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण का सार बन गया। (इकाई 2 में अमेरिकी और फ्रांसीसी लोकतंत्र के टोकविले के

अध्ययन का संदर्भ लें)। बागेहोट (अंग्रजी संविधान, 1867) ने ब्रिटीश कैबिनेट के अपने अध्ययन में संस्थागत दृष्टिकोण के इस तत्व के विकास में एक और महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो अमेरिकी कार्यपालिका के साथ तुलना के महत्वपूर्ण बिंदुओं को चित्रित करता है।

हांलाकि, यह ब्रायस, लोवेल और ओस्ट्रोगोर्स्की थे, जिन्होंने उन्नीसवीं सदी की अंतिम तिमाही में, संस्थानों के तुलनात्मक अध्ययन में और अध्ययन में एक अलग शाखा के रूप में तुलनात्मक सरकारों के विकास के आशय द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3.2.2 संस्थागत दृष्टिकोण एवं तुलनात्मक सरकार का उभरना

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ब्रायस, लोवेल और ओस्ट्रोगोस्की के काम ने संस्थागत दृष्टिकोण की सामग्री को मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया तथा इस तरह तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति और दायरा बदल गया। उनके योगदान का आकलन करते हुए, जीन ब्लोंडेल जोर देकर कहा कि ब्रायस और लोवेल वास्तव में तुलनात्मक सरकार के सच्चे संस्थापक थे क्योंकि यह उन्नीसवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही में अध्ययन की एक अलग शाखा के रूप में विकसित हुआ।

अमेरिकन कॉमनवेल्थ (1888) और मॉर्डन डेमोक्रेसी (1921) ब्रायस के दो महत्वपूर्ण कार्य थे। मार्डन डेमोक्रेसीज़ में, ब्रायस ने लोकतंत्र के सिद्धांत पर ध्यान केंद्रित किया और विधानसभाओं के काम और उनकी गिरावट की जांच की। लोवेल की रचनाएं गवर्नमेंट एंड पार्टीज़ इन कॉन्टिनेटल यूरोप (1896) और पब्लिक ओपिनियन एंड पॉपुलर गवर्नमेंट (1913) में जहां उन्होनें फ्रांस, जर्मनी, स्विटजरलैंड आदि का अलग–अलग अध्ययन किया और क्रमशः जनमत संग्रह एवं इसके प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन किया, जो समान रूप से महत्वपूर्ण थे। इसी तरह, ओस्ट्रोगोस्की का अध्ययन डेमोक्रेसी एंड द आर्गनाइजेशन ऑफ पोलिटिकल पार्टी (1902), जिसका उद्देश्य परिकल्पना का परीक्षण करना है, इसलिए राजनीतिक दलों के 'लोकतांत्रिक' या 'कुलीनवर्ग' का चरित्र उस समय का अग्रणी कार्य था। अब यह देखना महत्वपूर्ण है कि इन कार्यो में किस तरह वृद्धि हुई और उन तरीकों को कैसे परिवर्तित कर दिया गया, जिनसे अब तक अध्ययन किया जा रहा था।

1) सरकारों का सिद्धांत और व्यवहार : हमने पहले खंड में उल्लेख किया है कि सरकारों का तुलनात्मक अध्ययन दार्शनिक–कल्पनावादी या व्यापक रूप से कानूनी–संवैधानिक रहा, अर्थात वे या तो 'आदर्श राज्य' जैसी अमूर्त धारणाओं से या सरकारों के कानूनी, संवैधानिक ढ़ांचे और संरचनाओं के बारे में तथ्यों से चिंतित थे।

   डदार संवैधानिक सिद्धांत के आधार पर उन्होंने अपनी कानूनी शक्तियों और कार्यो पर जोर देने के साथ औपचारिक संस्थागत संरचनाओं का अध्ययन किया। उन्होंने अपने कार्य में 'तुलनात्मक सरकार' या 'विदेशी संविधानों' पर अध्ययन को हिस्सा बनाया। इन कार्यो को विभिन्न देशों में संस्थागत निर्माण में कुलीनों के प्रयासों के लिए प्रासंगिक देखा गया। यही कारण है कि नए स्वतंत्र देशों में संस्थागतवाद ने कुछ आकर्षण प्राप्त किया। हालांकि ब्रायस

एवं लॉवेल ने जोर दिया कि मौजूदा अध्ययन आंशिक एवं अपूर्ण थे। उनके अनुसार सरकारों का अधिक व्यापक अध्ययन होना चाहिए जिसमं सरकारों के कानूनी–संवैधानिक ढांचे के कार्यो को भी शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने इस तरह के अध्ययन में न केवल सरकारों के सैद्धांतिक आधारो या संदर्भो (यानी कानूनी–संवैधानिक ढांचे एवं सरकारी संस्थानों) के अध्ययन की आवश्यकता है, बल्कि 'सरकार के क्रियाकलापों' के अध्ययन पर समान जोर दिया गया। सिर्फ संविधान पर ध्यान देना, जैसा कि वकील करते है, यह अपर्याप्त था क्योंकि इससे उनके संचालन और कार्यान्वयन की समस्याओं की अनदेखी होगी। दूसरी ओर, अपने सैद्धांतिक (संविधानिक) ढांचे में आधार के बिना अभ्यास पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करने से, फिर से यह एक अधूरा अध्ययन होगा, क्योंकि यह एक संदर्भ में दृष्टि खो सकता है जिसके अंतर्गत कार्यान्वयन की समस्याएं उभरती है। इस प्रकार, मुख्यतः ब्रायस और लोवेल के साथ तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण में संस्थागत दृष्टिकोण की सामग्री को 'सरकार के सिद्धांत और व्यवहार' के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया गया था।

2) 'तथ्यों पर ध्यान दें' :—इन अध्ययनों का एक महत्वपूर्ण घटक सरकारों के कामकाज बारे में 'तथ्यों' के विश्लेषण के माध्यम से 'अभ्यास' का अध्ययन करने की चिंता थी। अभ्यास का अध्ययन करने के लिए तथ्यों की खोज, एकत्र और यहां तक कि वृहत्तर संग्रह की जरूरत है। ब्रायस तथ्यों को किसी विश्लेषण को आधार बनाने की अपनी वकालत में दृढ थे, जिसके बिना उन्होंने कहा कि 'आंकडे केवल कल्पना है' : ''तथ्यों, तथ्यों, तथ्यों, जब तथ्यों की आपूर्ति की जाती है, तब हम में से प्रत्येक उनके साथ तर्क करने की कोशिश करता है''। हालांकि, एक प्रमुख कठिनाई सरकारों के व्यवहार के बारे में आंकडो का संग्रह करना था, क्योंकि इसका खुलासा करने के बजाय सरकारो द्वारा इसे छुपाने की फितरत रही। अतः तथ्य हासिल करना मुश्किल था क्योंकि सरकारे और राजनेता अक्सर तथ्यो को छिपाते थे या स्पष्ट करने के लिए तैयार नहीं थे कि वास्तविक वस्तुस्थिति क्या है। तथापि, इस कठिनाई ने उन्हें राजनीतिक जीवन, राजनीतिक दलों, कार्यपालिकाओं, जनमत संग्रह, विधानसभाओं इत्यादि के बारे में आंकड़े एकत्र करने के महत्व पर जोर देने नहीं रोक नहीं पाया। यह प्रयास बाद में हर्मन फिनर (थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ मॉर्डन गवर्नमेंट, 1932) और कार्ल फ्रेडरिक (कॉसंटूयशनल गवर्नमेंट एंड डेमोक्रेसी, 1932) जैसे तुलनावादियों द्वारा जारी रखा गया था।

3) तकनीकः तथ्यों की खोज ने मात्रात्मक संकेतकों के उपयोग हेतु ब्रायस और लोवेल ने नेतृत्व किया, जो इस एहसास पर आधारित था कि सरकार के अध्ययन में, गुणात्मक और मात्रात्मक प्रकार के साक्ष्य को संतुलित करना होगा। अतं में, हालांकि, ब्रायस और लॉवेल ने महसूस किया कि निष्कर्ष तभी दृढ़ हो सकते है जब वे यथासंभव विस्तृत तथ्यों पर आधारित हों। इसलिए उनके अध्ययन ने भौगोलिक रूप से कई देशों में विस्तार पाया, जो उस समय संवैधानिक या संनिकट–संवैधानिक चरित्र के संस्थान थे। अतः, उन्होंने यूरोप की सरकारों पर अपने अध्ययन को केंद्रित करने का प्रयास किया। हालांकि, ऑस्ट्रोगोर्स्की के काम के साथ तुलनात्मक राजनीतिक

विश्लेषण ने तुलनात्मक आधार पर विशिष्ट संस्थानों के अध्ययन पर ध्यान देना शुरू किया। 1902 में, ऑस्ट्रोगोर्स्की ने ब्रिटेन और अमेरिका में राजनीतिक दलों का एक विस्तृत अध्ययन प्रकाशित किया। बाद में, रॉबर्ट मिशेल (पोलैटिकल पार्टीस् ,1915) और मौरिस डूवरगर (पोलैटिकल पार्टीस् ,1950) द्वारा राजनीतिक दलों की भूमिका पर महत्वपूर्ण कार्य किए गए।

इसके बाद, 1950 के दशक में संस्थागत दृष्टिकोण की बडी आलोचनाएं डेविड ईस्टन और रॉय मैक्रिडिस जैसे 'प्रणाली सिद्धांतकारों के द्वारा की गई, जिन्होंने एक सामान्य/वैश्विक अनुप्रयोग वाले अतिव्यापी मॉडल के निर्माण पर जोर दिया। उन्होंने इन मॉडलों के आधार पर विभिन्न देशों में राजनीतिक प्रक्रियाओं को समझने और समझाने का प्रयास किया। इन आलोचनाओं और संस्थागत लोगों द्वारा प्रस्तुत किए गए बचाव के बारे में अगले भाग में चर्चा की जाएगी।

बोध प्रश्न 1

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की जांच करें।

1) तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में संस्थागत दृष्टिकोण की व्याख्या करें।

....

....

....

....

....

2) उन्नीसवीं सदीं के मोड़ पर संस्थागत दृष्टिकोण की विशेषताओं की जांच करें।

....

....

....

....

....

3.3 संस्थागत दृष्टिकोण : आलोचनात्मक मूल्यांकन

यह दिलचस्प है कि तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण में संस्थागत दृष्टिकोण की आलोचनाएं बीसवीं शताब्दी के शुरूआती दौर में और फिर उन्नीस सौ पचास के दशक में निरंतर हुई। प्रत्येक आलोचना के बाद पुनः निखरे रूप में दृष्टिकोण का पुनरूत्थान हुआ है। इससे पहले कि संस्थानों के अध्ययन ने सदी के मोड़ पर एक तुलनात्मक चरित्र (हालांकि सीमित) हासिल कर लिया, दृष्टिकोण की आलोचना निम्नवत रूप से की गई :– (क) अटकलों के रूप में (ख) मोटे तौर पर निर्धारित और मानदण्ड सम्बंधी (ग) संबंधों को देखे बिना केवल अनियमितताओं और नियमितताओं पर केंद्रित रहा (घ) समावृत्ति और

गैर–तुलनात्मकता पर ध्यान केंद्रित किया जैसा कि उसने वैयक्तिक देशों पर किया था (ड.) जातीयता केंद्रित जैसा यह पश्चिमी यूरोपीय 'लोकतंत्रों' पर केंद्रित था (च) औपचारिक (संवैधानिक और सरकारी) संरचना पर ध्यान केंद्रित किया। जैसा इसने वर्णनात्मक (छ) विश्लेषणात्मक हुए बिना ऐतिहासिक (ज) इस ढांचे के अंतर्गत योगदानकर्ताओं को संस्थानों के अध्ययन के साथ इतना समाहित किया गया था कि सांस्कृतिक व्यवस्था और वैचारिक ढांचे में अंतर की तुलना करते हुए पूर्णतः अनदेखा कर दिया गया था, कहते है कि यूके और यूएसए के ऊपरी सदन, पद्धतिगत रूप से आंशिक/अपूर्ण और होने का आरोप लगाया जाता था और सैद्धांतिक रूप से यह कहा गया था कि वे राजनीतिक जीवन से चूक गए थे। हालांकि, हमने देखा कि ब्रायस और उनके समकालीनों के साथ संस्थागत दृष्टिकोण की प्रकृति और सामग्री में एक परिवर्तन आया, एक सीमित तरीके से एक तुलनात्मक चरित्र प्राप्त किया तथा सरकारों के व्यवहार के साथ सैद्धांतिक संदर्भो को संयोजित करने का प्रयास किया। उन्नीस सौ पचास में संस्थागत दृष्टिकोण ब्रायस, लोवेल और ओस्ट्रोगोर्स्की वे विकसित हुआ, जिसकी फिर से डेविड ईस्टन और रॉय मैक्रिडिस जैसे राजनीतिक वैज्ञानिकों द्वारा आलोचना की जा रही थी। डेविड ईस्टन ने अपनी कृति 'पोलिटिकल सिस्टम' (1953) में ब्रायस के दृष्टिकोण के खिलाफ एक जोरदार हमला किया और इसे 'मात्र तथ्यवाद' कहा। कथित तौर पर ईस्टन के इस दृष्टिकोण से अमेरिकी राजनीति विज्ञान प्रभावित हुआ, जिसे उन्होंने 'अतितथ्यवाद' कहा था। यह स्वीकार करते हैं कि ब्रायस ने 'सिद्धांतों' की उपेक्षा नहीं की है। ब्रायस ने व्याख्यात्मक या सैद्धांतिक मॉडल निर्मित करने के लिए विरोध किया। इससे ईस्टन की दृढता से 'तथ्यो के अतिरेक' का विश्लेषण किया और इसके परिणामस्वरूप 'सैद्धांतिक कुपोषण' प्रेरित हुआ। (आप राजनीतिक घटना का अध्ययन करने के लिए ईस्टन के 'प्रणाली दृष्टिकोण' के आधार के रूप में 'प्रणाली निर्माण' के बारे में अगली इकाई में अध्ययन करेगें। इसलिए, यह समझना मुश्किल नहीं है कि ईस्टन को क्यों लगा कि ब्रायस का दृष्टिकोण अमेरिकी राजनीति विज्ञान को गलत रास्ते पर ले गया।) जीन ब्लोंडेल ने संस्थागत दृष्टिकोण की आलोचनाओं से रक्षा की। जब कि ईस्टन ने तथाकथित बताया 'तथ्यवाद' था। ब्लोंडल पहले तर्क देते है कि 'तथ्यों के प्रतिफल' का परिवर्तन गलत था क्योंकि व्यापक राजनीतिक विश्लेषण के लिए राजनीतिक वैज्ञानिकों के पास बहुत कम तथ्य उपलब्ध थे। वास्तविकता में, अधिकांश देशों के प्रमुख संस्थानों की संरचनाओं और गतिविधियों के बारे में बहुत कम जानकारी थी। विशेष रूप से, कम्युनिस्ट देशों और तथाकथित तीसरी दुनिया के देशों के बारे में। इस प्रकार अधिक तथ्यों को एकत्र करने की आवश्यकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। यह और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि ज्यादातर सरकारें तथ्यों को प्रसारित करने के बजाय उन्हें छिपाने में लगी रहती है। दूसरे, एक वैश्विक या प्रणालीगत दृष्टिकोण के समर्थकों द्वारा संस्थानों और कानूनी व्यवस्थाओं के बारे में तथ्यों की उपयोगिता का अवमूल्यन हुआ, ब्लॉन्डेल का पूर्णतः 'गलत समझा' गया था। संस्थानों और कानूनी ढांचे के अर्न्तगत उन्होनें जो कार्य किया वह पूरे ढांचे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, जिसमें एक राजनीतिक घटना का अध्ययन किया जा सकता था। पहले के बारे में तथ्यों को आंशिक अध्ययन से बचने हेतु राजनीतिक जीवन के अन्य पहलुओं के बारे में तथ्यों की तुलना करना पड़ता था। किसी भी मामलें में, तथ्य किसी

भी प्रभावी विश्लेषण के लिए आवश्यक थे। बिना 'तथ्य' या 'आंकडों' के कोई तर्क नहीं दे दिया जा सकता है। इस युग्मित बिन्दु के साथ कि तथ्यों को हासिल करना मुश्किल था, उन्हें राजनीतिक विश्लेषण के अध्ययन का अभिन्न अंग बना दिया गया। 1955 में रॉय मैक्रिडिस ने सरकार के तुलनात्मक अध्ययन में एक 'पुनर्विन्यास' की आवश्यकता पर ध्यान दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इसके मौजूदा रूप में तुलनात्मक अध्ययन केवल नाम में 'तुलनात्मक' है। मैक्रिडिस ने संस्थागत दृष्टिकोण के उन्मुखीकरण का वर्णन 'गैर—तुलनात्मक', 'पारलौकिक', 'स्थिर' और प्रबंधकीय के रूप में किया। कार्य का एक अच्छा अनुपात अधिक था, उन्होंने कहा 'अनिवार्य रूप से वर्णनात्मक'। ऐसा इसलिए था क्योंकि विश्लेषण ऐतिहासिक या कानूनी था और इसलिए 'बल्कि संकीर्ण' था। (मैक्रिडिस, द स्टडी ऑफ कम्परेटिव गवर्नमेंट, 1955)।

हालांकि, यह 1950 के दशक में महसूस किया गया था और यह चिंता बनी रही कि ऐसे तथ्यों की कमी बनी रही जिनसे वैध सामान्यीकरण किया जा सके। इस प्रकार ब्लोंडेल ने 'तथ्यो के आधिक्य' के बजाय 'मॉडल के आधिक्य' का दावा किया। ब्लोंडल ने इस बात पर जोर दिया कि तथ्यों के आधार पर मॉडल तैयार किए बिना गलत जानकारी दी जाएगी। यह गलत जानकारी, यह देखते हुए कि कुछ देशो के बारे में तथ्यों को जानना मुश्किल था, इसके प्रभावित होने की संभावना थी और कई बार इन देशों के बारे में पूर्व धारणाओ को सुदृढ़ करता है। इस प्रकार, 1971 में लैटिन अमेरिका में विधायिकाओं के बारे में लिखते समय, डब्ल्यू एच अगोर ने टिप्पणी की कि दुनिया के उस हिस्से में विधायिकाओं पर जोर देने की प्रवृत्ति थी जहां वे बहुत कमजोर थी। इन जैसे कथनों से उन्होंने कहा कि वे 'अत्यंत प्रभावकारी साक्ष्य' पर आधारित थे, जो कि अध्ययन के लिए जानबूझकर एकत्र किए 'तथ्यो' के अभाव में थे। इस प्रकार संस्थागत दृष्टिकोण के अनुयायियों द्वारा तथ्यों को एकत्र करने के तरीकों का और विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया था। हालांकि, आलोचनाओं के बाद के कार्यो में तुलनात्मकता पर ध्यान केंद्रित किया गया था और इसमें गैर—पश्चिमी देशों को शामिल किया गया था। इसके अलावा, कानूनी. —संवैधानिक ढांचे द्वारा निर्धारित संरचनाओं की तुलना का अध्ययन करने को प्रयास किया गया था, उदाहरण के लिए जियोवानी सार्तोरी का 'पार्टी एंड पार्टी सिस्टम'(1976) पर कार्य, जिसमें एक सीमित तरीके से कम्यूनिस्ट देशों और तीसरी दुनिया के देशों को शामिल किया और 'फ्रांसीसी कैस्टल्स स्टडी ऑफ प्रेशर ग्रुपस एंड पोलिटिकल क्लचर' (1967) पर कार्य, जिसमें यूरोप, अमेरिका साथ ही उभरते हुए देशों के दबाव समूहों से कैसे निपटा जाए के बारे में अवगत कराना सम्मिलित था।

बोध प्रश्न 2

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) ईस्टन और मैक्रिडिस के अनुसार संस्थागत दृष्टिकोण की सीमाएं क्या है ?

....

....

2) संस्थागत दृष्टिकोण की रक्षा में ब्लोंडल एक प्रकरण को कैसे निर्मित करते है?

....

....

....

....

....

3.4 समसामयिक तुलनात्मक अध्ययन में संस्थागत दृष्टिकोण

1950 के दशक तक तुलनात्मक राजनीति में संस्थागतवाद दृष्टिकोण अलग था। लेकिन जैसे कि पिछले अनुभाग में चर्चा की गई है, संस्थागत दृष्टिकोण ब्रायस, लोवेल और ओस्ट्रोगोर्स्की के कार्यो के साथ विशिष्ट हो गया।

हर्मन फिनर (आधुनिक सरकारों के सिद्धांत और व्यवहार, 1932) और कार्ल फ्रेडरिक (संवैधानिक सरकार और लोकतंत्र, 1932) द्वारा तुलनात्मक राजनीति में अग्रणी कार्य किया गया था। उदार संवैधानिक सिद्धांत के आधार पर, उन्होंने उनकी शक्तियों और कार्यो पर जोर देने के साथ औपचारिक संस्थागत संरचनाओं का अध्ययन किया। इन कार्यो ने 'तुलनात्मक सरकार' या 'विदेशी संविधानों' को अध्ययन का हिस्सा बनाया और विभिन्न देशों में संस्थाओं के सृजन में अभिजात वर्ग के प्रयासों के लिए प्रांसगिक माना गया। नए स्वतंत्र देशों में, संस्थागत दृष्टिकोण संस्थान सृजन पर जोर देता हुआ प्रतीत हुआ और इसने प्रमुखता हासिल कर ली। संस्थागत दृष्टिकोण का मुख्य केंद्र बिंदु (अर्थात इसकी विषय वस्तु) निम्नवत है :– (क) कानून और संविधान, (ख) सरकार और राज्य का ऐतिहासिक अध्ययन है, यह समझने के लिए कि संप्रभुता, अधिकार क्षेत्र, कानूनी और विधायी साधन अपने विभिन्न रूपों में कैसे विकसित हुए, (ग) सरकार की संरचनाएं कैसे कार्य करती है (सिद्धांत और व्यवहार), जिसमें सत्ता की शक्ति का वितरण शामिल है तथा ये कैसे स्वयं को राष्ट्र और राज्य, केंद्र और स्थानीय सरकार, प्रशासन और नौकरशाही, कानूनी और संवैधानिक प्रथाओं एवं सिद्धांतो के बीच संबंध में प्रकट करते है।संस्थागत दृष्टिकोण की एक अंतर्निहित धारणा लोकतंत्र के विशिष्ट पश्चिमी चरित्र में थी। इसका तात्पर्य है, जैसा कि पहले खंड में कहा गया था कि लोकतंत्र को न केवल अपने मूल में पश्चिमी चरित्र के रूप में देखा गया था, बल्कि इसको कहीं और लागू करने की कल्पना की गई थी एवं इसे केवल उसी रूप में निर्धारित किया गया था। इसने वृहत पैमाने पर पश्चिम–केंद्रित अध्ययन का नेतृत्व किया, अर्थात पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के देशों पर संकेंद्रण रहा। ब्लोंडेल को लगता है कि 1950 के दशक में इस दृष्टिकोण के प्रभाव में गिरावट आई, इसकी वजह इसका 'गैर–पश्चिमी सरकारों', विशेष रूप से पूर्वी यूरोप के मुख्यतः कम्यूनिष्ट देशों और एशिया एवं लैटिन अमेरिका के नए स्वतंत्र देशों को जांच के दायरे में समायोजित करने में असमर्थता रही। इस प्रकार, एक दृष्टिकोण जो स्वयं पर इस बात पर गर्व करता था कि उसने सिद्धांत को व्यवहार से संबद्ध किया था, उसने खुद को उन तथ्यों का अध्ययन करने के लिए जांच के अपने ढांचे को संशोधित करने में असमर्थ पाया, जो उदार संवैधानिक लोकतंत्रो के

अनुरूप नहीं थे। 1950 के दशक में संस्थागत दृष्टिकोण में गिरावट कुछ हद तक पहले भी देखी गई थी, जो कि प्रणालीगत सिद्धांतकारों द्वारा सिद्धांतो के सृजन में तथ्यों से उत्पन्न निष्कर्ष के बजाए आगनात्मक सामान्यीकरण पर ध्यान दिया गया।

व्यवहारवादी क्रांति ने अध्ययन को राजनीतिक संस्थानों या सरकार के रूपों से व्यक्तियों एवं समूहों के राजनीतिक व्यवहार की ओर स्थानांतरित कर दिया। राजनीति विज्ञान में कई क्षेत्रों में व्यक्तिगत व्यवहार का अध्ययन एक विषय बन गया, दूसरी ओर तुलनात्मक राजनीति ने संस्थानो पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखा। उन्नीस सौ साठ और सत्तर के दशक में कुछ महत्वपूर्ण तुलनात्मक कार्य हुए राजनीतिक दलों (जैसे—सार्तोरीज़ की कृति पार्टीज़ एंड पार्टी सिस्टम,1976, बुडगे और एच.केमन की कृति पार्टीज़ एंड डेमोक्रेसी, 1990), दबाव समूहों (फ्रेंकल्स कास्टल्स की कृति प्रेशर ग्रुप्स एंड पॉलिटिकल कल्चर, 1967), न्यायपालिका (जी.शूबर्ट, ज्यूडिशियल बिहेवियर, 1964), विधायिका (एम.एल.मेजी, कम्परेटिव लेजिस्लेज़र, 1979, ए.कोर्नबर्ग, लेजिस्लेज़र इन कम्परेटिव प्रस्प्रेक्टिव, 1973, जे.बलोनडै 1, कम्परेटिव लेजिस्लेज़र 1973, डब्लू.एच.अगोर, लैटिन अमेरिकन लेजिस्लेज़र, 1971) और सैन्य (एस.ई.फीनर, मैन ऑन होर्सबैक,1962) पर हुए थे।

उन्नीस सौ अस्सी के दशक में, संस्थागत दृष्टिकोण उस रूप में फिर से विकसित हुआ जिसे 'नूतन संस्थावाद' कहा जाता है। सत्तर के दशक के उत्तरार्ध से संस्थानों हेतु सामाजिक वैज्ञानिकों के बीच रूचि बढ़ गई। कई लोगों के लिए, संस्थागत कारक इस बात की बेहतर व्याख्या करते प्रतीत हुए कि क्यों विभिन्न देश सामान्य आर्थिक चुनौतियों (जैसे तेल संकट) के लिए अलग—अलग प्रतिक्रियाएं देते हैं। इसके अलावा, राजनीति विज्ञान के अध्ययन के विषय के अंतर्गत व्यवहारवाद में रूचि कम होने लगी थी। इन परिस्थितियों में, उनके मार्ग में महत्वपूर्ण कार्य हुआ :— 'द न्यू इंसटिट्यूशंलिज्म : ऑर्गेनाइजेशनल फैक्टरस् इन पॉलिटिकल लाइफ, मार्च एंड ऑलसेन (1984) ने राजनीतिक वैज्ञानिकों को राजनीतिक संस्थानों अंतर्गत व्यक्तिगत राजनीतिक अभिनेताओं के व्यवहार को बेहतर ढ़ग से समझने के लिए संस्थागत विश्लेषण को पुनः परिभाषित करने के लिए कहा। इससे जो नूतन संस्थावाद उभर कर सामने आया, वह व्यक्तिगत राजनीतिक अभिनेताओ के कार्यो की जांच करने पर व्यवहारवादी विद्वानों के ध्यान के साथ औपचारिक संस्थागत नियमों और संरचनाओं के अध्ययन करने में पारंपरिक विद्वानो के हितो को जोड़ता है। नूतन संस्थावाद को इसलिए उत्तर. —व्यवहारवाद की पद्धति के रूप में देखा जा सकता है(जिसके बारे में हमने इकाई—1 में चर्चा की थी)।

नूतन संस्थावाद राजनीतिक विज्ञान में प्रमुख दृष्टिकोणों में से एक बन गया है, जिसका उपयोग तुलनात्मक राजनीति के साथ—साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में कई विद्वानों द्वारा किया जाता है।

नूतन दृष्टिकोण पूर्व के संस्थागत दृष्टिकोण से इन बिंदुओ पर भिन्न है— (क) संस्थानों के अर्थ को व्यापक बनाने के लिए न केवल औपचारिक नियमों और संरचनाओं को शामिल किया, बल्कि राजनीतिक आचरण को आकार देने वाले अनौपचारिक प्रथाओं और गठबंधनों को भी शामिल किया। (ख) जिस तरह से

राजनीतिक संस्थाएं, मूल्यों और शक्ति संबंधों को मूर्त रूप देती है, इसका आलोचनात्मक मूल्यांकन किया, और (ग) पहले के दृष्टिकोण के नियतिवाद को अस्वीकार किया और संस्थाएं व्यक्तिगत आचरण में बाधा डाल सकती है इसे स्वीकार किया, वे भी मानव रचनाएं है जो अभिनेताओं की एजेसी के माध्यम से परिवर्तित और विकसित होती है।(लोन्डेस एंड रॉबर्टस्,2013, पृष्ठ 29)।

अमेरिका की राजनति का अध्ययन करने के लिए उक्त दृष्टिकोण का वृहत पैमाने पर उपयोग किया गया है (उदारणार्थ, वीवर एंड रॉकमैन द्वारा संपादित कृति 'डू इंस्टीट्यूशंस मैटर ? गवर्नमेंट कैपाबिलिटीस् इन द यूनाइटेड स्टेट्स एंड अब्राड्,' 1993)।

इसका उपयोग विभिन्न सार्वजनिक नीतियों जैसे स्वास्थ्य, कल्याणकारी और औद्योगिक विकास के अध्ययन के लिए भी किया गया है,(स्टाइमो, थेलेन एंड लॉन्गस्ट्रेथ, स्ट्रक्चरिंग पॉलिटिक्सः हिस्टोरिक्ल इंस्टीट्यूशनलिज्म इन कम्परेटिव एनालिसिस)। कुछ ने इस दृष्टिकोण का अधिकांशतः सामान्य तरीके से उपयोग अर्थव्यवस्था में सरकारी संस्थानों की भूमिका का अध्ययन करने के लिए किया है (अवलोकन करें, जैसे हॉल, 1986)। अन्य लोगों ने राज्य क्षमता की कई महत्वपूर्ण संस्थागत आधारो पर ध्यान केंद्रित किया है (वीस,एल 1988), द मिथ ऑफ द पॉवरलेस स्टेट एंड इवांस, पृष्ठ 1995, इम्बेडेड आटोनॉमी : स्टेटस् एंड इंडस्ट्रीयल ट्रांसफारमेशन)।

हालांकि, कई अध्ययनों में नूतन दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है, लेकिन नूतन संस्थावाद के गठन की कोई सटीक परिभाषा नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि नूतन संस्थावाद एक छतरी की तरह है जिसमें विभिन्न प्रकार की धाराएं शामिल है (नीचे का बॉक्स देखें)। हालांकि, तीन धाराएं— मानकीय संस्थावाद, तर्कसंगम विकल्पवादी संस्थावाद और ऐतिहासिक संस्थावाद, तुलनात्मक राजनीति में लोकप्रिय हैं, कुछ विद्वान कई धाराओं से विचारों और अवधारणाओं को उद्धृत करते हैं। एक बात जो उन सभी को एकजुट करती है, वह है कि ''वे संस्थानों को गंभीरता से लेते है क्योंकि उन्हें लगता है कि राजनीतिक संस्थागत लोग व्यक्तिगत राजनीतिक अभिनेताओं की रूचियों में अवरोध उत्पन्न करते है।''(मिलर, 2011, पृष्ठ 24)।

नूतन संस्थावाद के विभिन्न पहलू

- मानकीय संस्थागत विशेषज्ञ अध्ययन करते है कि कैसे राजनीतिक संस्थानों में निहित मानदंड और मूल्य व्यक्तियों के व्यवहार को आकार देते हैं।
- तर्कसंगत विकल्पवादी संस्थागतवादियों का तर्क है कि राजनीतिक संस्थान नियमों और प्रलोभनों की प्रणाली है जिनके अंतर्गत व्यक्ति अपनी उपयोगिताओं को अधिकतम करने का प्रयास करते है।
- ऐतिहासिक संस्थागत विशेषज्ञ इस बात का अवलोकन करते है कि सरकारी प्रणालियों के संस्थागत डिजाइन के बारे में विकल्प लोगों के भविष्य के लिए निर्णय लेने को कैसे प्रभावित करते हैं।

- अनुभवजन्य संस्थागतवादी, जो सबसे अधिक 'पारंपरिक' दृष्टिकोण से मिलते–जुलते है, विभिन्न संस्थागत प्रकारों को वर्गीकृत करते है और सरकारी प्रदर्शन पर उनके व्यावहारिक प्रभावों का विश्लेषण करते है।
- अंतर्राष्ट्रीय संस्थागत विशेषज्ञ बताते है कि राज्यों का व्यवहार अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन की संरचनात्मक बाधाओं (औपचारिक और अनौपचारिक) द्वारा संचालित होते है।
- समाजशास्त्रीय संस्थागत विशेषज्ञ उस तरीके का अध्ययन करते है जिसमें संस्थान व्यक्तियों के लिए प्रयोजन का सृजन करते है, एवं राजनीति विज्ञान के अंतर्गत मानकीय संस्थागतवाद हेतु महत्वपूर्ण सैद्धांतिक भवन खंड प्रदान करते है।
- नेटवर्क संबंधी संस्थावादी बताते है कि व्यक्तियों और समूहों के बीच बातचीत के स्वरूप कैसे नियमित लेकिन अक्सर अनौपचारिक होते है एवं ये उनके राजनीतिक व्यवहार को आकार देते है।
- रचनात्मक या तार्किक संस्थावादी, संस्थानों को प्रयोजन के ढ़ांचे के माध्यम से व्यवहार को आकार देने के रूप में देखते है। संस्थानों के प्रयोजन के ढ़ांचे से तात्पर्य है कि राजनीतिक कार्रवाई को समझाने, विचार करने या वैध ठहराने के लिए उपयोग किए जाने वाले विचार और कथन। उत्तर–संरचनात्मक संस्थागतवादी इस बात पर बहस करते हुए आगे जाकर कहते है कि संस्थान वास्तव में राजनीतिक व्यक्तिपरकता और पहचान का सृजन करते है।
- नारी अधिकारो से संबंधित संस्थावादी यह अध्ययन करते है कि संस्थानों के अंतर्गत लिंग मानदंड कैसे संचालित होते है और संस्थागत प्रक्रियाएं लिंग शक्ति गतिविद्या का सृजन और अनुरक्षण कैसे करती हैं।

(विवियन लोन्डेस् और मार्क रॉबर्ट्स, 2013, पृष्ठ 34)

बोध प्रश्न 3

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) व्यवहारवादी और संस्थागतवादी विद्वानों के बीच अंतर का पाटने के लिए नूतन संस्थावाद ने क्या किया ?

....

....

....

....

....

....

....

3.5 सारांश

संस्थागत दृष्टिकोण अपने विभिन्न रूपों में तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण घटक रहा है। शासन के संस्थानों का अध्ययन राजनीतिक विश्लेषण के मूल में था, यह प्लेटो के 'रिपब्लिक' के आदर्श राज्य या अरस्तू की 'पालिटिक्स' में उनके द्वारा प्रस्तावित राज्यों की प्रणालियों की खोज में दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन और प्रांरभिक रूपों में, संस्थागत दृष्टिकोण अधिक दार्शनिक और कल्पनावादी था, जो आदर्श विशिष्ट राज्यों के संबंधित था एवं आदर्श शासन के मानदंडो का निर्धारन करता था। मोंटेस्क्यू और उनके उत्तराधिकारियों के साथ, कानूनी–संवैधानिक ढ़ांचे या लोकतंत्रों की संरचनाओं के साथ दृष्टिकोण की पूर्वसंलग्नता से उसका प्रसार हो गया। हालांकि, उदार संवैधानिक लोकतंत्रों के सस्थानों में विश्वास ने शासन के कार्य करने के तरीके का अध्ययन नहीं किया। प्रायः, कम से कम उन्नीसवी सदी के अंत तक कानूनी. –संवैधानिक संरचनाओं की पेचीदगियों या शासन के सैद्धांतिक ढ़ांचे ने राजनीतिक वैज्ञानिकों और कानूनी विशेषज्ञों का ध्यान आकर्षित करना जारी रखा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उक्त दृष्टिकोण को सरकार के गठन और कानूनी–औपचारिक संस्थानों एवं उदार लोकतंत्र के मानकीय मूल्यों के साथ एक पूर्वसंलग्नता से चित्रित किया गया है। इस दृष्टिकोण को पूर्ववर्ती उपनिवेशों में यूरोपीय उदारवादी मूल्यों को लोकप्रिय बनाने के लिए औपनिवेशिक शासन द्वारा भी प्रचारित किया गया था। विभिन्न देशों में संस्थाओं के सृजन में अभिजात वर्ग के प्रयासों के लिए संस्थावादियों के कार्य भी अत्यंत प्रांसगिक थे।

हालांकि, केवल उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के शुरूआत तक में ब्रायस, लोवेल और ओस्ट्रोगोस्की जैसे विद्वानों ने संस्थानों के अध्ययन में नए आयाम निम्नवत दिए।

(क) सैद्धांतिक–कानूनी–संवैधानिक ढ़ांचे के अध्ययन को उनके कामकाज के बारे में तथ्यों के साथ जोड़कर और (ख) अन्य देशों में भी संस्थानों के अध्ययन के कार्य को सम्मिलित करके तुलनात्मक आधार दिया। इस प्रकार, कहा जा सकता है कि यह दृष्टिकोण बीसवीं सदीं की पहली तिमाही तक एक सीमित तुलनात्मक चरित्र और कठोरता हासिल किए रहा। हालांकि, उन्नीस सौ पचास के दशक में इस दृष्टिकोण पर ईस्टन और मैक्रिडिस जैसे प्रणालीवादी सिद्धांतकारों ने आक्षेप किए और बाद में निम्नवत आलोचना की–

(क) तथ्यों पर अत्यधिक जोर, (ख) सैद्धांतिक सूत्रीकरण का अभाव, यदि ऐसा न होता तो उसे आमतौर पर अन्य देशों के संस्थानों में लागू किया जा सकता था। और (ग) तुलनात्मक चरित्र का अभाव।

इन सिद्धांतकारों ने अपनी ओर से 'समग्र' या 'वैश्विक' माड्ल या प्रणाली का सृजन करने को प्राथमिकता दी, जिससे दुनिया भर के देशों में संस्थानों के कामकाज की व्याख्या कर सकें। संस्थागत दृष्टिकोण के पेशेवरों के विरूद्ध एक महत्वपूर्ण आलोचना यह है कि ये 'पश्चिम केंद्रित' दृष्टिकोण है अर्थात तीसरी दुनिया और पूर्वी यूरोप के कम्यूनिस्ट देशों के संस्थानों के अध्ययन में वे विफल रहे। इन देशों का अध्ययन करने में विफलता ने इस दृष्टिकोण के मानकीय ढ़ांचे को प्रभाव में लाया, जो पश्चिमी उदारवादी–संवैधानिक लोकतंत्रों के केवल

सैद्धांतिक प्रतिमानों को समायोजित कर सकता था। विकासशील और साम्यवादी दुनिया के अन्य देशों में संस्थानों को समझने के लिए साधन की कमी के परिणामस्वरूप इस दृष्टिकोण के प्रभाव का एक अस्थायी विनाश हुआ। हालांकि, यह उन्नीस सौ अस्सी के दशक में, एक ऐसे रूप में पुनः प्रस्फुटित हुआ, जिसनें तथ्यों पर अपना जोर बरकरार रखते हुए, सामान्यकृत सैद्धांतिक बयान देने से पीछे नहीं हटा।

नूतन संस्थावाद यह समझने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करता है कि एक राजनीतिक संस्थान के अंतर्गत मानदंड, नियम, संस्कृतियां एवं संरचनाएं कैसे व्यक्तियों को बाधित और प्रभावित करती है।

3.6 संदर्भ

एप्टर, डेविड ई.(1996). 'कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स, ओल्ड एंड न्यू' इन रॉबर्ट ई. गूडिन एंड हैंस क्लिंगमैन, एडस्ए न्यू हैंडबुक ऑफ पालिटिकल साइंस, ऑक्सफोर्ड, ऑक्सफोड युनिवर्सिटि प्रेस।

ब्लोंडल, जीन.(1999). 'दएन एंड नाओः कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स'. पॉलिटिकल स्टडीज़. वोल्यूम.XLVII, पेज 152–160।

————————————. (1981). दी डिसिप्लिन ऑफ पॉलिटिक्स, बटरवर्थस्, लंदन, बटरवर्थस्।

कोलबल, टी.ए. (1995). ' दी न्यू इन्स्टिट्यूशनलिज़म् इन पॉलिटिकल साइंस एंड सोशिओलोजी', कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स, 27, पेज. 221–244।

मिलर सी मार्क. (2011). 'नीओ– इन्स्टिट्यूशनलिज़म्' इन जॉन टी इशियामा एंड म्रिजक ब्रेउनिंग, एड. 21 सेंचुरी पॉलिटिकल साइंस – ए रैफ्रेंस हैंडबुक. कैलिफोर्निया सेज पब्लिकेशनस्।

रौथस्टिन, बी. (1996). 'पॉलिटिकल इन्स्टिट्यूशनस्ः एन ओवरव्यू' इन आर.गुडिन एंड के.हैंस–डाइटर. (एडस्). ' न्यू हैंडबुक ऑफ पालिटिकल साइंस. ऑक्सफोर्ड, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटि प्रेस।

विवियन लौंडिस् एंड मार्क रॉबर्टस्. (2013) वाए इंस्टिट्यूशनस् मैटर – दी न्यू इन्स्टिट्यूशनलिज़म इन पॉलिटिकल साइंस. लंदन, पॉलग्रेव मैकमिलन।

विरदा, जे होवर्ड. (1985). न्यू डायरेक्शनस् इन कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स्, बोल्डर, वेस्टव्यू प्रेस।

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) दृष्टिकोण एक दूसरे की तुलना में विभिन्न संस्थानों के अध्ययन पर आधारित है। यह समान संस्थानों जैसे कार्यकारी, विधायिका आदि की संरचना और कार्यों में समानता और अंतर की तुलना करता है और निष्कर्ष निकालने की कोशिश करता है।

2) समान संस्थानों की तुलनाः उनकी उत्पत्ति, विकास और काम करने का संदर्भ; निष्कर्ष निकालना; निष्कर्ष के आधार पर परिवर्तन या सुधार के लिए सुझाव देना।

बोध प्रश्न 2

1) खंड 3.3 देखें।

2) ब्लोंड ने संरचनात्मक–कार्यात्मक दृष्टिकोण की सीमाओं को इंगित किया और अभी तक भी संस्थानों के बारे में पर्याप्त जानकारी का आभाव है। उन्होंने संस्थानों और कानूनी ढ़ांचे के महत्व पर भी जोर दिया।

बोध प्रश्न 3

1) नए संस्थात्मक संस्थान उसमें अंतर्निहित व्यक्तिगत व्यवहारों का अध्ययन करना चाहते हैं, इस प्रकार पारंपरिक और व्यवहारिक दृष्टिकोणों के बीच अंतर को कम करता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 4 प्रणाली दृष्टिकोण

संरचना

4.0 उद्देश्य
4.1 परिचय
4.2 प्रणाली दृष्टिकोण
  4.2.1 प्रणाली दृष्टिकोण की उत्पत्ति
  4.2.2 ऐतिहासिक संदर्भ
4.3 सामान्य प्रणाली एवं प्रणाली दृष्टिकोण
  4.3.1 सामान्य प्रणाली एवं प्रणाली दृष्टिकोण : अंतर
  4.3.2 प्रणाली विश्लेषण : लक्षण की विशेषताएं
  4.3.3 प्रणाली दृष्टिकोण : चिंता और उद्देश्य
4.4 प्रणाली विश्लेषण का व्युत्पन्न
  4.4.1 राजनीतिक प्रणाली व्युत्पन्न :आगत–निर्गत व्युत्पन्न
  4.4.2 संरचनात्मक–कार्यात्मक व्युत्पन्न
  4.4.3 साइबरनोटिक्स व्युत्पन्न
4.5 प्रणाली सिद्धांत : एक मूल्यांकन
  4.5.1 प्रणाली दृष्टिकोण की सीमाएं
  4.5.2 प्रणाली दृष्टिकोण की शक्ति
4.6 सारांश
4.7 संदर्भ
4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

यह इकाई तुलनात्मक सरकार और राजनीति, का प्रणाली दृष्टिकोण के माध्यम् से अध्ययन आधुनिक दृष्टिकोणों मे से एक है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपको निम्न को करने में सक्षम होना चाहिएः–

- प्रणाली दृष्टिकोण के अर्थ और विकास की व्याख्या करने में,
- एक प्रणाली का परिभाषित करने में।
- प्रणाली दृष्टिकोण के उद्देश्यों, विशेषताओं और तत्वों की व्याख्या करने में।
- राजनीतिक प्रणाली को अन्य सामाजिक प्रणालियों से अलग करने में।
- प्रणाली सिद्धांत को उसके उचित परिपेक्ष्य में मूल्यांकन करने में।

4.1 परिचय

तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में, राजनीतिक वैज्ञानिक राजनीतिक घटनाओं को समझाने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों और तरीको को अपनाते हैं। तुलनात्मक राजनीतिक के अध्ययन में उपयोग किए जाने वाले दृष्टिकोणो को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है,—पांरपरिक दृष्टिकोण और आधुनिक दृष्टिकोण। पारंपरिक दृष्टिकोण जिसमें विभिन्न राजनीतिक प्रणालियो में विद्यमान औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं, संरचनाओं या एजेंसियों जैसे कि न्यायपालिका, विधायिका, नौकरशाही, राजनीतिक दलों, दबाव समूहों या किसी अन्य संस्था के अध्ययन पर जोर दिया जाता है, जो कि राजनीति में लगातार संलग्न रहते है। पांरपरिक दृष्टिकोण के प्रस्तावकों में प्राचीन और आधुनिक दोनों राजनीतिक चिंतक शामिल है जैसे — प्लेटो, अरस्तू, जेम्स ब्रायस, बेंटले, वाल्टर बैजहाट, हेराल्ड लास्की आदि। राजनीति के अध्ययन के लिए अन्य पारंपरिक दृष्टिकोण है, जिनमें दार्शनिक (जिसकी प्लेटो, अरस्तू आदि द्वारा वकालत की गई) ऐतिहासिक (जिसे मैकियावेली, सबाइन, मांटेस्क्यू, टोकेविले आदि द्वारा अपनाया गया), वैधानिक (जिसकी वकालत कॉलेरो, जीन बोडिन, थॉमस हॉब्स, जेरमी बेंथम, जॉन आस्टिन आदि ने की) और संस्थागत दृष्टिकोण शामिल है।

हालांकि, पारंपरिक दृष्टिकोणों में उनकी अंतर्निहित कमजोरी और सीमाएं है। वे इस अर्थ में भी मानकवादी और आदर्शवादी हैं कि उनके विश्लेषण में राजनीति के मूल्यों और मानदंडो पर अधिक जोर दिया गया। पारंपरिक दृष्टिकोण को भी संकीर्ण माना जाता है क्योंकि उनके विश्लेषण और विवरण मुख्य रूप से पश्चिमी राजनीतिक संस्थाओं और प्रणालियों के अध्ययन तक ही सीमित है। लेकिन, अपनी सीमाओं के बावजूद, ये दृष्टिकोण बीसवी सदी के मध्य तक काफी लोकप्रिय रहे। इस पृष्ठभूमि में, पारंपरिक दृष्टिकोणों की अंर्तनिहित कमजोरी को दूर करने के उद्देश्य से राजनीति के अध्ययन के विभिन्न आधुनिक दृष्टिकोण विकसित किए गए थे। ये आधुनिक दृष्टिकोण, जिसमें व्यवहारवादी व उत्तर—व्यवहारवादी दृष्टिकोण, प्रणाली दृष्टिकोण, संचार दृष्टिकोण आदि शामिल हो सकते है, इसके माध्यम् से राजनीति के वैज्ञानिक, यथार्थवादी और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया जा सकता है। इस संबंध में, कहा जाता है कि आधुनिक दृष्टिकोणों के विकास ने तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है, जो कि अल्मांड और पॉवेल के अनुसार इस प्रकार था— (अ) अधिक व्यापक दायरे की खोज (ब) यथार्थवाद की खोज (स) सुस्पष्टता की खोज (द) सैद्धांतिक क्रम की खोज।

पिछली इकाई में, आपने 'संस्थागत दृष्टिकोण' नामक राजनीतिक अन्वेषण के एक बहुत पुराने और महत्वपूर्ण पांरपरिक दृष्टिकोण के उपयोग का अध्ययन किया है, जिसने सरकार और राज्य के औपचारिक राजनीतिक संस्थानों एवं एजेंसियों के अध्ययन पर जोर दिया। इस इकाई में, तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के लिए एक लोकप्रिय आधुनिक दृष्टिकोण का अध्ययन, समीक्षा और अन्वेषण करने का प्रयास किया जाएगा, जिसे 'प्रणाली दृष्टिकोण' कहा जाता है, जिसे प्रणाली विश्लेषण भी कहा जाता है, जो औपचारिक संस्थानों से परे राजनीति का अध्ययन करना चाहता है और संरचनाएं एवं राजनीति के अन्य पहलुओं जैसे कार्यो, प्रक्रियाओं और व्यवहारों का अवलोकन करता है। यह

इकाई विकास, ऐतिहासिक संदर्भ, विशेषताओं, शक्तियों और कमजोरियों एवं प्रणाली दृष्टिकोण के विभिन्न अन्य पहलुओं से सरोकार रखेगी।

4.2 प्रणाली दृष्टिकोण

प्रणाली दृष्टिकोण एक प्रणाली को निर्मित करने वाले अंतर–संबंधित चर का अध्ययन है, जो कई तथ्यो और परस्पर क्रिया पर आधारित तत्वों का एक समूह है। यह दृष्टिकोण मानता है कि प्रणाली में विवेकी, नियमित और आंतरिक रूप से सुसंगत प्रतिरूप होते हैं। प्रत्येक एक दूसरे के साथ परस्पर क्रिया करते है और सम्पूर्ण की एक स्व–विनियमन क्रम की तस्वीर पेश करते है। इस प्रकार, यह वृहत प्रणाली के अन्तर्गत और अभी तक विश्लेषणात्मक रूप से अलग होने वाली परस्पर क्रिया के एक समूह का अध्ययन है। प्रणाली सिद्धांत मानता है :

- संपूर्ण का अस्तित्व अपनी योग्यता के आधार पर,
- सम्पूर्ण भागों से मिलकर,
- अन्य सम्पूर्णो से अलग सम्पूर्ण का अस्तित्व,
- प्रत्येक संपूर्ण पूर्णतः दूसरे को प्रभावित करता है और बदले में स्वयं भी प्रभावित होता है,
- सम्पूर्ण के हिस्से न केवल अंतर–संबंधित है, बल्कि एक दूसरे के साथ परस्पर क्रिया भी करते है, जिससे एक स्व–विकसित कार्य होता है।

प्रणाली सिद्धांत का जोर प्रणाली और उसके घटकों एवं उनके व्यवहारों के संयोजन पर है, जिसके माध्यम से समल के साथ स्वयं को बनाए रखता है।

4.2.1 प्रणाली सिद्धांत की उत्पत्ति

प्रणाली दृष्टिकोण की उत्पत्ति का पता जर्मन जीव विज्ञानी लुडविग वॉन बर्टालांफी के कार्यो से लगाया जा सकता है, जिन्होंने 1930 के दशक में जीव विज्ञान के अध्ययन में सामान्य प्रणाली सिद्धांत का उपयोग प्रारम्भ किया। जैसा कि बर्टालांफी द्वारा परिभाषित किया गया है, एक प्रणाली 'पारस्परिक विचार–विमर्श से निर्मित तत्वों का एक समूह है'। यह अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि एक समूह के भीतर के तत्व किसी न किसी तरह से एक दूसरे से संबंधित है और प्रतिक्रिया में, कुछ अन्य समरूप प्रक्रियाओं के आधार पर एक दूसरे के साथ परस्पर विचार करते है। इस सामान्य प्रणालियों के सिद्धांत से सामाजिक वैज्ञाननिकों ने विचार लिया और जिसका उपयोग द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की सामाजिक घटनाओं को समझाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप मे किया। 1960 के दशक के बाद से, प्रणाली सिद्धांत या प्रणाली विश्लेषण राजनीति विज्ञान के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण तत्व बन गया। डेविड ईस्टन राजनीतिक विश्लेषण में प्रणाली दृष्टिकोण निरूपित करने वाले राजनीतिक वैज्ञानिकों में सर्वप्रथम थे। अपनी पुस्तक 'ए सिस्टम् एनालिसिस ऑफ पॉलिटिकल लाइफ (1965) में, ईस्टन ने एक राजनीतिक प्रणाली को उस 'व्यवहार या परस्पर विचार–विमर्श के समुच्चय के रूप में परिभाषित किया, जिसके माध्यम से आधिकारिक आवंटन समाज के लिए किए और लागू किए जाते है।' राजनीति विज्ञान में प्रणाली दृष्टिकोण को लागू करते हुए, उन्होंने तर्क

दिया कि कैनवास (चित्रफलक) का प्रत्येक भाग अकेले खड़ा नहीं होता है, बल्कि अन्य भागों से संबंधित होता है तथा सम्पूर्ण प्रणाली के संचालन के संदर्भ को पूर्णतः समझे बिना एक भाग के संचालन को पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है'। अन्य प्रमुख विद्ववान जिन्होने राजनीतिक विश्लेषण में प्रणाली दृष्टिकोण की वकालत की, वे ग्रेबियल आलमंड (कम्परेटिव पालिटिक्स : ए डेवल्पमेंट एपरोच, 1978), डेविड एप्टर (इन्ट्रोडक्शन टू पॉलिटिकल एनालिसिस, 1978), कार्ल डॅयूस्च (नेशन एंड वर्ल्ड : कंटेम्परेरी पॅालिटकल साइंस, 1967), मॉर्टन कपलान (सिस्टम एंड प्रोसेस इन इंटरनेशनल पॉलिटिक्स, 1957), हेराल्ड लास्वेल (पावर एंड सोसाइटी, 1950) आदि।

4.2.2 ऐतिहासिक संदर्भ

प्रणाली दृष्टिकोण, किसी भी अन्य आधुनिक दृष्टिकोण की तरह, एक ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में विकसित हुआ है। जैसा कि तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के लिए पांरपरिक दृष्टिकोण निरर्थक साबित हुए, वैज्ञानिक तरीके से इसे समझने की आवश्यकता अधिक महत्वपूर्ण हो गई। अन्य विषयों के प्रभाव, दोनों प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान और उनके पारस्परिक अंतर निर्भरता ने इन विषयों का अवलोकन करने के लिए एक नई प्रेरणा दी, तुलनात्मक राजनीति ने नया विचार दिया और इस विचार को सामने लाया कि वैज्ञानिक विश्लेषण राजनीति को समझने का एकमात्र तरीका है। जैसे–जैसे समय बीतता गया, राजनीतिक प्रणालियों का अध्ययन, संविधान और सरकारों के अध्ययन से अधिक महत्वपूर्ण हो गया, राजनीतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन की तुलना में अधिक शिक्षाप्रद माने जाने लगा। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि में विशेष रूप से यूएसए में देखी गई कि कई अमेरिकी विद्ववानों के लेखन में एक मौलिक परिवर्तन आया जब उन्होंने अन्य सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञानों से बहुत कुछ लिया ताकि राजनीतिक अध्ययनों को नया अनुभवजन्य अभिविन्यास दिया जा सके, जिससे अतंतः कई अवधारणाओं का अन्वेषण करने में मद्द मिली, इस प्रक्रिया में अपने निष्कर्षो को समृद्ध किया। सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (यूएसए) ने एक वातावरण प्रदान करने में बहुत योगदान दिया, जिसमें तुलनात्मक राजनीति में वैज्ञानिक विश्लेषण किया जा सकता है। कुछ अन्य अमेरिकी फाउंडेशन जैसे कि फोर्ड फाउंडेशन, रॉकफेलर फाउंडेशन और कार्नेगी फाउंडेशन ने तुलनात्मक राजनीति में अध्ययन के लिए उदारता से ध्यान प्रदान किया। इस प्रकार, तुलनात्मक राजनीति में नए दृष्टिकोण, नई परिभाषाएं, नए अनुसंधानिक साधन पेश करना संभव हुआ। इस सब के कारण सुविधाजनक रूप से कहा जा सकता है 'विषय के अध्ययन में क्रांति : अपने लक्ष्य, समस्याओं और तरीकों की परिभाषा में एक क्रांति।' (संदर्भ देखे माइकल रश और फिलिप अल्थॉफ की किताब 'एन इंट्रोडक्शन टू पोलिटिकल सोशयालोजी')। प्रणाली विश्लेषण का परिचय, अन्य आधुनिक दृष्टिकोण की तरह, ईस्टन, अल्मांड, कपलान जैसे लेखकों द्वारा तुलनात्मक राजनीति में, वास्तव में एकात्मक प्रवृत्ति जो प्रक्रिया को बाधित करती है के विरूद्ध एक प्रतिक्रिया थी। वैज्ञानिक विश्लेषण के समरूप सभी ज्ञान के एकीकरण को संभव बनाते हैं। प्रणाली दृष्टिकोण आधुनिक दृष्टिकोणों में से एक है जो राजनीतिक गतिविधि और राजनीतिक व्यवहार को पहले की तुलना में अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मद्द करता है। यह सामाजिक घटनाओं को परस्पर संबंधों के एक समूह के

रूप में देखता है। इसलिए माना जाता है कि प्रणाली विश्लेषण न केवल राजनीति विज्ञान बल्कि लगभग सभी सामाजिक विज्ञानों तक अपनी पहुंच बनाता है।

बोध प्रश्न 1

नोटः 1) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

2) इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) प्रणाली विश्लेषण का जोर इस पर है–

....

....

....

....

....

2) पारंपरिक दृष्टिकोणों की सक्षिप्त में कमियां बताएं।

....

....

....

....

....

4.3 सामान्य प्रणाली सिद्धांत और प्रणाली सिद्धांत

4.3.1 सामान्य प्रणालीयों और प्रणाली दृश्टिकोणो के बीच अंतर

प्रणाली विश्लेषण सामान्य प्रणाली सिद्धांत से निर्गत हुआ हो सकता है, लेकिन दोनों कई मामलों में अलग है। पहले क्रम की दार्शनिक त्रुटि हेतु सामान्य प्रणाली सिद्धांत परिमाण के साथ प्रणाली सिद्धांत की पहचान करता है। जबकि सामान्य प्रणाली सिद्धांत एक प्रणाली की धारणा देता है, जो मानव शरीर के भागों के समान एकीकृत है, प्रणाली सिद्धांत भागों के अलग अस्तित्व को मान्यता देता है। इसका क्या तात्पर्य है कि सामान्य प्रणाली सिद्धांत प्रणाली की एकता की वकालत करता है, जबकि प्रणाली सिद्धांत विविधता में एकता की बात करता है। यह एक कारण है कि सामान्य प्रणाली सिद्धांत को संभावित और सामाजिक घटनाओं के विश्लेषण के लिए शायद ही कभी लागू किया गया है, जबकि प्रणाली सिद्धांत को राजनीतिक विश्लेषण में सफलतापूर्वक लागू किया गया है। उदाहरणार्थ, डेविड ईस्टन ने प्रणाली सिद्धांत को राजनीति में लागू किया है। प्रोफेसर काप्लान ने सामान्य प्रणाली सिद्धांत और प्रणाली सिद्धांत के बीच के अंतर को सामने लाया है। वह कहते है, ''...प्रणाली सिद्धांत सभी प्रणालियों का एक सामान्य सिद्धांत नहीं है। हालांकि सामान्य प्रणाली सिद्धांत विभिन्न प्रकार की प्रणालियों को अलग करने और एक ढ़ाचा स्थापित करने का प्रयास करता है

जिसके अन्तर्गत विषय वस्तु के मतभेदों के बावजूद प्रणालियों के बीच समानता के आह्वान को पहचाना जाता है, विभिन्न प्रकार की प्रणालियों को व्याख्यात्मक उद्देश्यो के लिए विभिन्न सिद्धांतो की आवश्यकता होती है। प्रणाली सिद्धांत न केवल सामान्य सिद्धांत दृष्टिकोण के हटकर प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि यह भी बताता है कि ऐसे प्रयासों के असफल होने की संभावना क्यों है। इस प्रकार राजनीति के लिए प्रणाली सिद्धांत का सही अनुप्रयोग सामान्य सिद्धांत से तुलनात्मक सिद्धांत से हटकर होगा।'' इसके अलावा, सामाजिक विज्ञान जैसे राजनीतिक विज्ञान में सामान्य प्रणाली सिद्धांत की अवधारणाओं का उपयोग करना संभव नहीं है, जबकि प्रणाली सिद्धांत अवधारणाओं को प्रदान करने में सक्षम है (जैसे आगत–निर्गत, स्थिरता, संतुलन, प्रतिक्रिया) जिसे अच्छी तरह से अनुभवजन्य राजनीतिक वैज्ञानिको द्वारा मान्यता प्राप्त है।

4.3.2 प्रणाली विश्लेषण

लक्षण की विषेशताएं

प्रणाली विश्लेषण का तात्पर्य है कि प्रणाली परस्पर सम्बधों का एक सम्मुचय के रूप में। ओ. आर.यंग के अनुसार, यह ''उद्देश्यों का एक समूह है, साथ में उद्देश्यों के बीच और उनकी विशेषताओं के बीच संबंध''। यह कहने हेतु एक प्रणाली मौजूद है यह कहना है कि यह अपने तत्वों के माध्यम से अस्तित्व में है, उद्देश्य और इसके तत्वों (वस्तुएं) में परस्पर प्रभाव पड़ता है और वे एक समरूपता के अन्तर्गत प्रतिलिप है। एक प्रणाली के विश्लेषक अंतर–संबंधित और वेब–जैसे उद्देश्यों को मानते है और उनके बीच हमेशा मौजूदा संबंधों की तलाश करते है। ओ.आर. यंग ने उद्देश्यों के बीच एक परस्पर संबंधों की वकालत की है। उनकी मुख्य चिंताएं है– 1) प्रणाली के उद्देश्यों के बीच प्रतिरूप वाले व्यवहार पर जोर देना, 2) उन कारकों के बीच परस्पर संवादत्मक व्यवहार की व्याख्या करना, 3) उन कारकों की खोज करना जो प्रणाली को बनाए रखने में मद्द करते है। प्रणाली विश्लेषण प्रणाली को समझने हेतु विस्तृत और अवधारणाओं का एक समुच्चय होता है। इसमें प्रणाली, उप–प्रणाली, पर्यावरण, आगत, निर्गत, रूपांतरण प्रक्रिया, प्रतिपुष्टि (फीड्बैक) आदि शामिल है। प्रणाली का अर्थ है संबंधों को बनाए रखना, व्यवहार के प्रतिरूप का प्रदर्शन करना, इसके कई हिस्सों के बीच जैसे उद्देश्यों और पहचानों में। एक प्रणाली जो एक बड़ी प्रणाली के एक तत्व का गठन करती है उसे उप–प्रणाली कहा जाता है। वह समुच्चय जिसके अन्तर्गत कोई प्रणाली होती है या काम करती है, पर्यावरण कहलाता है। प्रणाली को उसके वातापरण से अलग करने वाली रेखा को सीमा के रूप में जाना जाता है। प्रणाली, प्रणाली पर मांगो के रूप में पर्यावरण से आगत प्राप्त करती है और इसके कामकाज के लिए समर्थन करता है। जैसे ही प्रणाली संचालित होती है, आगत को रूपांतरण प्रक्रिया कहा जा सकता है और यह प्रणाली के निर्गत नियमों को लागू करने के लिए करती है या नीतियों को लागू किया जाता है। जब प्रणाली निर्गत–आगत को परिवर्तित या संशोधित करने के लिए वातावरण को प्रभावित करता है, तो प्रतिक्रिया होती है। इसलिए. प्रणाली दृष्टिकोण की अपनी विशेषताएं है, जिसे निम्नवत् अभिव्यक्त किया जा सकता है–

- एक सामाजिक घटना पृथकरूप से मौजूद नही होती है, लेकिन कई भागों ने मिलकर एक संपूर्ण निर्मित किया है। यह एक इकाई है, यह अस्तित्व और अपने स्वयं के लक्ष्य के साथ एक जीवंत इकाई है।
- इसके भाग एक साथ नहीं हो सकते है और मूलतः एक साथ संबंधित नहीं है, लेकिन वे इस अर्थ में एक संपूर्ण का निर्माण करते है कि वे परस्पर मिलते है और अंतर–संबंधित है। विशिष्ट व्यवहार संबंध उन्हें एक जीवंत प्रणाली में परिवर्तित करते हैं।
- यह आगत और निर्गत के एक तंत्र के माध्यम् से एवं एक पर्यावरण के अर्न्तगत/जो इसे प्रभावित करता है तथा जो बदले में में पर्यावरण के लिए प्रतिक्रिया प्रदान करता है, इस माध्यम से संचालित होता है।
- इसकी मुख्य चिंता यह है कि यह स्वयं को कितना बेहतर रखता है और क्षय एवं गिरावट की चुनौतियों का सामना करता है।
- यह इसके कई हिस्सों के बीच प्रतिमान संबंधों को दर्शाता है, उनके सापेक्ष व्यवहार और भूमिका की व्याख्या करते हुए उनसे प्रदर्शन करने की अपेक्षा की जाती है।

4.3.3 प्रणाली दृष्टिकोण : चिंता और उद्देश्य

प्रणाली विश्लेषण कुछ उद्देश्यों से संबंधित है। इसकी प्रमुख चिंताओं में से एक है 'प्रणाली की समग्रता को बनाए रखना', जो वेल्श के अनुसार व्यवस्था बनाए रखने की क्षमता पर निर्भर करता है। यह प्रणाली एक 'नियमित प्रक्रिया' विकसित करती है जिसके द्वारा समाज में संसाधनों का वितरण किया जाता है, ताकि प्रणाली में सदस्य प्रणाली को अराजकता और पतन से बचाने के लिए पर्याप्त रूप से संतुष्ट होकर कार्य करें।

प्रणाली दृष्टिकोण की दूसरी चिंता यह है कि प्रणाली अपने वातावरण में परिवर्तन की चुनौती का सामना कैसे करती है। वेल्श ने तर्क दिया कि वातावरण में परिवर्तन स्वाभाविक है, वातावरण के लिए प्रणाली को प्रभावित करना स्वाभाविक है और प्रणाली को वातावरणीय परिवर्तनों की वास्तविकताओं के अनुकूल बनाना होगा। प्रणाली दृष्टिकोण परिवर्तनों की प्रतिक्रया देने की प्रणालियों की आवश्यकता और पहले से ही प्रदत्त परिवर्तनो के बीच संघर्ष की पहचान करता हैं जैसा कि वातावरण द्वारा प्रदान किया गया है, तथा यह संघर्ष को हटाने की क्षमता भी रखता है। प्रणाली दृष्टिकोण का तीसरा उद्देश्य वह महत्व है जो प्रणाली के परिपेक्ष्य में 'लक्ष्य–प्राप्ति' को देता है। कुछ विशिष्ट पहचान योग्य लक्ष्यों का निर्धारित किए और आगे बढ़ाएं बिना कोई भी प्रणाली एक समयावधि के पश्चात् अस्तित्व में नहीं रह सकती है। वेल्श के अनुसार, इन लक्ष्यों का अनुसरण, प्रणाली दृष्टिकोण में ध्यान देने का एक महत्वपूर्ण केंद्र है।

बोध प्रश्न 2

नोटः अ) अपने उत्तर के लिए, नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ब) इस इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) सामान्य प्रणाली सिद्धांत और प्रणाली सिद्धांत के बीच मुख्य अंतर को पहचानें।

....

....

....

....

....

2) प्रणाली दृष्टिकोण के दो विशिष्ट लक्षण बताएं।

....

....

....

....

....

4.4 प्रणालियों के विश्लेषण के व्युत्पन्न शब्द

4.4.1 राजनीतिक प्रणाली के व्युत्पन्न शब्द : आगत–निर्गत व्युत्पन्न शब्द

राजनीतिक प्रणाली या आगत–निर्गत दृष्टिकोण डेविड ईस्टन द्वारा प्रतिस्थापित किए गए प्रणाली विश्लेषण का एक व्युत्पन्न शब्द है। उन्होंने सिद्धांत के स्तर पर 'नए और उपयोगी तरीके से राजनीतिक घटनाओं की व्याख्या करने के लिए अवधारणाओं का एक मूल समुच्चय प्रदान किया' (डेविस एंड लुईस : मॉडलस् ऑफ पॉलिटिकल सिस्टम्)। ईस्टन राजनीतिक प्रणाली को विश्लेषण की मूल इकाई के रूप में चुनता है और विभिन्न प्रणालियों के अन्तर्वती–प्रणाली व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करता है। वह राजनीतिक प्रणाली का इस प्रकार परिभाषित करता है जिसमें 'उन अंतः–क्रियाओं को जिसके माध्यम् से मूल्यों को आधिकारिक रूप से समाज के लिए आंवटित और कार्यान्वित किया जाता है।' यह ईस्टन के राजनीतिक प्रणाली की अवधारणा की कुछ विशेषताओं को उजागर करने के लिए उपयोगी होगा, जिन्हें संक्षिप्त रूप से निम्न्वत् रखा जा सकता हैः–

- राजनीतिक प्रणाली से तात्पर्य है कि परस्पर संबंधों का एक समुच्चय जिसके माध्यम् से मूल्यों को आधिकारिक रूप से आंवटित किया जाता है। इसका अर्थ उन लोगों के निर्णय जो सत्ता में है, और ये निर्णय बाध्यकारी होते है।
- राजनीतिक प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जिसके अन्तर्गत लोगों और संस्थानों के बीच संबंधों के नियमित रूप से लगातार प्रतिरूपण होता है।
- किसी भी प्राकृतिक प्रणाली की तरह राजनीतिक प्रणाली एक स्व–विनियमित प्रणाली है, जो अपनी प्रक्रियाओं और संरचनाओं को स्वयं से परिवर्तित कर सकती है, ठीक कर सकती है या समायोजित कर सकती हैं।

- राजनीतिक प्रणाली इस अर्थ में गतिशील है कि यह प्रतिपुष्टि (फीड्बैक) तंत्र के माध्यम से स्वयं को बनाए रख सकती है। फीड्बैक तंत्र इस प्रणाली से जुड़ी हर चीज के माध्यम से बने रहने में मद्द करता है, जो इसे परिवर्तित कर सकता है यहां तक की मौलिक रूप से भी।
- राजनीतिक प्रणाली वातावरण की अन्य प्रणालियों से भिन्न है, भौतिक, जैविक, सामाजिक, आर्थिक, पारिस्थतिक आदि से।
- मांग और समर्थन के माध्यम से आगत राजनीतिक प्रणाली को कार्यशील रखती है, जबकि नीतियों और निर्णयों के माध्यम् से निर्गत प्रतिपुष्टि के द्वारा स्वीकार न किए जाने वाले को बाहर कर देता है।

ओ.आर.यंग ने ईस्टन की राजनीतिक प्रणाली की अनिवार्यताओं का सार प्रस्तुत किया, ''सभी से ऊपर, राजनीतिक प्रणाली को एक रूपांतरण प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जो एक राजनीतिक प्रणाली और उसके वातावरण के बीच निंरतर आदान–प्रदान सहित प्रक्रिया की गतिशीलता के स्थायित्व के साथ कार्य करती है, निर्गत उत्पन्न करती है और इसके वातावरण को परिवर्तित करती है। साथ ही, प्रणाली दृष्टिकोण राजनीतिक गतिशीलता सहित व्यवस्थित अनुकूलन प्रक्रियाओं और यहाँ तक कि लक्ष्य–परिवर्तन प्रतिपुष्टि के रूप में उद्देश्यपूर्ण पुर्निर्देशन के साथ निपटने के लिए कई अवधारणाएं प्रदान करता है''।

हालांकि, ईस्टन की राजनीतिक प्रणाली दृष्टिकोण आलोचनाओ से मुक्त नहीं है। उदाहरणार्थ, प्रोफेसर एस.पी. वर्मा इसे एक अमूर्त के रूप में मानते है, जिसका अनुभवजन्य राजनीति (जो कि चिरसम्मत है) के साथ संबंध स्थापित करना असंभव है। यूजेन मेहान ने यह भी कहा कि ईस्टन सिद्धांत को कम समझाते है और अवधारणा के ढांचे का अधिक निर्माण करते है। उनके विश्लेषण में यह इंगित किया जा सकता है कि उन्होंने राजनीतिक प्रणाली में शक्ति का पता लगाने और वितरण करने तक अपने को सीमित रखा है। वे राजनीतिक प्रणाली की दृढ़ता और अनुकूलता जैसे सवालों के साथ तनाव, स्थिरता और संतुलन के विनियमन को लेकर अधिक चिंतित रहे है। इस प्रकार वे केवल यथास्थिति की वकालत करते है। अतः ईस्टन के नियमन में राजनीति में गिरावट, व्यवधान और राजनीतिक प्रणाली के विखंडन के बारे में बहुत कम चर्चा की गई है। सभी दावों के बावजूद कि राजनीतिक प्रणाली दृष्टिकोण वृहत–स्तरीय अध्ययन के लिए सृजित किया गया है, ईस्टन के विश्लेषण ने बड़े पैमाने पर पश्चिमी देशों पर ध्यान केंद्रित किया है। ईस्टन के आगत–निर्गत मॉडल की राजनीतिक प्रणाली केवल वर्तमान से संबंधित है और इसलिए इसमें भविष्य का कोई परिपेक्ष्य नहीं है तथा अतीत का अध्ययन कम है।

हांलाकि, आगत–निर्गत या राजनीतिक प्रणाली दृष्टिकोण के गुणों को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। इसने तुलनात्मक विश्लेषण के लिए एक उत्कृष्ट तकनीक प्रदान की है, जिसमें अवधारणाओं और श्रेणियों का एक समुच्चय प्रस्तुत किया है, जिन्होंने तुलनात्मक विश्लेषण को अधिक शिक्षाप्रद बनाया है। ईस्टन का विश्लेषण सभी राजनीतिक विश्लेषण में सबसे अधिक व्यवस्थित दृष्टिकोण है। इसने राजनीति विज्ञान में प्रणाली विश्लेषण की आधारशिला भी रखी जो राजनीति को एक सामान्य कार्यात्मक सिद्धांत प्रदान करता है।

4.4.2 संरचनात्मक–कार्यात्मक व्युत्पन्न

गैब्रियल अलमांड द्वारा अपनाई गई संरचनात्मक–कार्यात्मक विश्लेषण प्रणालियों का एक और व्युत्पन्न है, जो राजनीति विज्ञान में व्यापक रूप से अपनाया गया है, खासकर तुलनात्मक राजनीति में। यह मुख्य रूप से प्रणाली के रखरखाव और विनियमन की घटना से संबंधित है। इस दृष्टिकोण का मूल सैद्धांतिक प्रस्ताव यह है कि सभी प्रणालियां अपनी संरचनाओं के माध्यम से कार्य करने के लिए मौजूद रहती है। प्रणाली दृष्टिकोण के संरचनात्मक–कार्यात्मक व्युत्पन्न की मूल धारणाएं निम्न है:–

- समाज एक परस्पर जुड़ी एकल प्रणाली है जिसमें इसके प्रत्येक तत्व एक विशिष्ट कार्य करते है और जिसका मूल लक्ष्य संतुलन को बनाए रखना है।
- समाज में इसके कई भाग होते है जो परस्पर संबंधित है।
- सामाजिक प्रणाली की प्रमुख प्रवृत्ति स्थिरता ओर है जो इसके अंतर्निहित तंत्र द्वारा बनाए रखी जाती है।
- आंतरिक संघर्षो का समाधान करने की क्षमता आमतौर पर एक स्वीकृत तथ्य है।
- प्रणाली में परिवर्तन स्वाभाविक है, लेकिन वे न तो अचानक आते है और न ही क्रांतिकारी होते है, लेकिन हमेशा क्रमिक और अनुकूलक के साथ–साथ समायोजक भी होते है।
- प्रणाली की अपनी संरचना, उद्देश्य, सिद्धांत और कार्य है। संरचनात्मक–कार्यात्मक व्युत्पन्न राजनीतिक प्रणाली की बात करते है, जो कई संरचनाओ से निर्मित होती है, जो उनके नियत कार्यो के साथ क्रियात्मक और परिणामी संस्थानों के प्रतिरूप के रूप में होती है। इस संदर्भ में एक कृत्य का अर्थ है, 'प्रणाली को बनाए रखना या स्थायीत्वकरण'। तथा एक संरचना का तात्पर्य है कि 'संबंधित भूमिकाओं का कोई समुच्चय है' जिसमें राजनीतिक दलों और विधानसभाओं जैसे ठोस संगठनात्मक ढ़ांचे शामिल है। इसलिए, संरचनात्मक–कार्यात्मक विश्लेषण में जांच के अंतर्गत इस तरह की प्रणाली में आवश्यक या कम से कम आवर्ती कार्यो के समुच्चय की पहचान शामिल है। यह संरचनाओं के प्रकार और उनके अंतर्सबंधों को निर्धारित करने का प्रयास करता है जिसके माध्यम से उन कार्यो को किया जाता है।
- गैब्रियल अल्मांड ने अपनी पुस्तक ' द पालिटिक्स ऑफ द डेवलपिंग एरिया, 1960' मे संरचनात्मक–कार्यात्मक विश्लेषण को मानव अतःक्रियाओ के वैध प्रतिरूप के रूप में अभिव्यक्त किया है जिसके द्वारा क्रम बनाएं रखा जाता है, सभी राजनीतिक संरचनाएं अपने–अपने कार्य करती है, विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों में अलग–अलग परिमाण के साथ।

आगत प्रकार्य में निम्न शामिल है:–

क) राजनीतिक समाजीकरण और भर्ती

ख) हित व्यक्तीकरण

ग) हित एकत्रीकरण

घ) राजनीतिक संवाद

निर्गत प्रकार्य में निम्न शामिल हैः–

अ) नियम बनाना

ब) नियमों को लागू करना

स) नियम अधिनिर्णय।

ग्रैब्रियल अलमांड ने राजनीति पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कम या ज्यादा वैध शारीरिक बल के आधार पर समाज के एकीकृत और अनुकूली कार्यो के रूप में राजनीति को देखा जा सकता है, जो राजनीतिक प्रणाली को ''सभी स्वतंत्र समाजों में पाई जाने वाली पारस्परिक विचार–विमर्श की प्रणाली के रूप में मानती है, जो रोजगार या रोजगार के खतरे के साधनों के आधार पर एकीकरण और अनुकूलन के कार्य करती है, जो समाज में कम या अधिक वैध व्यवस्था बनाए रखने या परिवर्तित करने की व्यवस्था है।'' उन्होंने तर्क दिया कि राजनीतिक और अन्य सामाजिक प्रणालियों में राजनीतिक संरचनाएं समान कार्य करती है, सभी संरचनाएं बहुआयामी है, और ये सभी प्रणालियां अपने वातावरण के अनुकूल होती है जब राजनीतिक संरचनाएं सामान्य या सही तरीके से व्यवहार नहीं करती है।

इस प्रकार, ईस्टन के आगत–निर्गत मॉडल और अलमांड के संरचनात्मक–कार्यात्मक दृष्टिकोण के बीच एक बुनियादी अंतर है। ईस्टन ने राजनीतिक प्रणाली के हिस्सों के परस्पर संपर्क और अतंर्संबंध के पहलुओं पर जोर दिया, वही आलमंड राजनीतिक संरचनाओं और उनके द्वारा किए गए कार्यो पर अधिक ध्यान देते हैं। और यह संभवतः संरचनात्मक–कार्यात्मक विश्लेषण की पहली कमजोरी है जो संरचनाओं के प्रकार्यो के बारे में बात करता है एवं उन परस्पर विचार–विमर्श की उपेक्षा करता है जो राजनीतिक प्रणाली के हिस्सों के रूप में कई संरचनाओं की विशेषताएं है। अलमांड का मॉडल सूक्ष्म–स्तर पर विशलेषणात्मकता से ग्रस्त है, क्योंकि यह पश्चिमी राजनीतिक प्रणाली या अधिक विशिष्ट रूप से अमेरिकी राजनीतिक प्रणाली की व्याख्या करता है। वे राजनीतिक प्रणाली की अपनी व्याख्या में आगत के पहलू को अधिक महत्व देते है और निर्गत को कम, इस प्रक्रिया मे प्रतिपुष्टि तंत्र का केवल संदर्भ देते है। ईस्टन की तरह, अलमांड भी यथास्थितिवादी के रूप में उभरे, क्योंकि उन्होंने ने भी व्यवस्था को बनाए रखने पर जोर दिया। अलमांड के द्वारा दो पदो –'संरचनाओं और 'प्रकार्यो' को अलग–अलग करने के आग्रह पर सरटोरी ने टिप्पणी करते हुए कहा, 'संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक विश्लेषण एक लंगड़ा विद्ववान है जो दो पैरों पर चलने का दावा करता है, लेकिन वास्तव में एक पैर है और वो भी खराब पैर'। वह 'संरचना' और 'प्रकार्य' के मध्य परस्पर क्रिया को समझ नही सके, क्योंकि ये दो शब्द शायद ही कभी अलग हो सकते है, संरचना सम्पूर्ण प्रक्रिया के दौरान स्वतः द्वारा आगत किए गए प्रकार्यात्मक उद्देश्यो के लिए संबंधी भाई की भूमिका में होती है।'' तथा इसके बावजूद, संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक मॉडल की योग्यता को पूर्णतः अनदेखा नही किया जा सकता है। इसने राजनीति विज्ञान में, विशेषकर तुलनात्मक राजनीति में, नए वैचारिक साधनों को सफलतापूर्वक पेश किया है। इसने राजनीतिक वास्तविकताओं में नई अंतर्दृष्टि प्रदान की है। और यह एक कारण है कि इस मॉडल को व्यापक रूप

से अपनाया है, एवं इसका उपयोग एक वर्णनात्मक और आदेशात्मक ढ़ांचे के रूप में किया जा रहा है।

4.4.3 साइबरनेटिक्स (संचार और नियंत्रण संबंधी विज्ञान) व्युत्पन्न

प्रणाली विश्लेषण का एक अन्य महत्वपूर्ण व्युत्पन्न 'संचार दृष्टिकोण' है, जिसे कार्ल डॅयूश्च ने 'साइबरनेटिक्स' कहा। डॅयूश्च ने साइबरनेटिक्स को परिभाषित करते हुए कहा कि ये संचार और नियंत्रण का विज्ञान है। यह सभी प्रकार के संगठनों में संचार और नियंत्रण के व्यवस्थित अध्ययन पर केंद्रित है। साइबरनेटिक्स के विचार से पता चलता है कि सभी संगठन कुछ मूलभूत तरीकों में एक जैसे है और प्रत्येक संगठन को संचार के द्वारा एक साथ रखा जाता है। डॅयूश्च के साइबरनेटिक्स दृष्टिकोण ने 'सरकारों' को उन संगठनों के रूप में देखा, जहां चैनलों के माध्यम से सूचना–प्रक्रियाओं का संचार किया जाता है। साइबरनेटिक्स के अनुसार सूचना, घटनाओं के बीच एक प्रतिमान संबंध है, संचार का तात्पर्य है कि ऐसे प्रतिरूपित संबंधों का हस्तांतरण और चैनल वे मार्ग है जिनके माध्यम से जानकारी स्थानांतरित की जाती है। डॅयूश्च ने ठीक ही कहा है कि उनकी पुस्तक 'द नर्वस ऑफ गवर्नमेंट (1966)' में शरीर रूपी राजनीति की हड्डियों या मांसपेशियों से कम और उसकी नसों से अधिक संबंधित है....अर्थात उसके संचार माध्यमों से संबंधित है। डॅयूश्च के अनुसार, राजनीतिक प्रणाली संचार चैनलों के एक नेटवर्क के रूप में, निर्णय लेने और प्रवर्तन की एक प्रणाली के अलावा कुछ भी नही है। न्यूरोफिजियोलॉजी, मनोविज्ञान और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के विज्ञान से काफी हद तक निष्कर्ष निकालते हुए, डॅयूश्च ने जीवित चीजों, इलेक्ट्रानिक्स मशीनों और सामाजिक संगठनों के बीच प्रक्रियाओं और प्रकार्य आवश्यकताओं में समानताएं मानी। उनके अनुसार, समाज में संगठनों में सूचना को संचारित करने और प्रतिक्रिया देने की क्षमता है (डेविस और लेविस, मॉडल्स ऑफ पॉलिटिकल सिस्टम, 1971)।

प्रणाली विश्लेषण के साइबरनेटिक्स मॉडल की विशिष्ट विशेषताएं, संक्षेप में निम्नवत् बताई जा सकती हैः–

- साइबरनेटिक्स मॉडल में फीडबैक एक प्रमुख अवधारणा है। इसे सहायक तंत्र भी कहा जाता है। फीडबैक का तात्पर्य डॅयूश्च के अनुसार एक संचार नेटवर्क है जो एक आगत की सूचना के जवाब में कार्यवाई करता है।

- राजनीतिक प्रणाली सहित सभी संगठनों की विशेषता फीडबैक तंत्र है। यह फीडबैक है जो गतिशीलता का परिचय देता है अन्यथा यह एक स्थैतिक विश्लेषण हो सकता है।

इस प्रकार, डयूश्च का साइबरनेटिक्स मॉडल संचार, नियंत्रण और चैनलों से संबंधित है, जो ईस्टन के परस्पर क्रिया के आगत–निर्गत मॉडल और अलमांड के संरचना और उसके प्रकार्यो पर आधारित संरचनात्मक–प्रकार्य विश्लेषण के विरूद्ध है। ये सभी प्रणाली के कामकाज की व्याख्या करना चाहते है। इनमें परिवर्तन के बीच स्वयं को अनुकूलित करने की क्षमता है और समय के साथ खुद को बनाए रखने की भी क्षमता है।

- हांलाकि, डयूश्च के साइबरनेटिक्स मॉडल में कई कमियाँ हैं:– यह अनिवार्य रूप से एक इंजीनियरिंग दृष्टिकोण है जो मनुष्य और समकालीन संस्थाओं के प्रदर्शन को समझाता है जैसे कि वे मशीन है। साइबरनेटिक्स 'गुणवत्ता–उन्मुख' के बजाय 'मात्रा–उन्मुख' भी है, जो राजनीतिक घटनाओं की समझ को जटिल बनाता हैं। लेकिन, प्रणाली दृष्टिकोण के व्युत्पन्न के रूप में, साइबरनेटिक्स ने मानव व्यवहार के संबंध में राजनीतिक घटनाओं को समझाने में अपना योगदान दिया। इस अर्थ में, साइबरनेटिक्स मॉडल ने वास्तव में राजनीतिक प्रणाली को समझने में हमारे प्रयास में विस्तार किया है।

बोध प्रश्न 3

नोटः अ) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ब) इस इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) ईस्टन के आगत–निर्गत मॉडल की तीन विशेषताएं बताएं।

....

....

....

....

....

2) डयूश्च के साइबरनेटिक्स सिद्धांत की सीमाएं क्या है?

....

....

....

....

....

4.5 प्रणाली सिद्धांत : एक मूल्यांकन

राजनीतिक अध्ययन में प्रणालियों के दृष्टिकोण की शुरूआत ने न केवल राजनैतिक गतिविधियों, व्यवहार, किसी दी गई राजनीतिक प्रणाली की प्रक्रिया को समझने में मद्द करती है, बल्कि वृहत स्तर पर राजनीति की व्यापक और बेहतर समझ प्रदान करती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रणाली दृष्टिकोण राजनीतिक घटनाओं को एक इकाई के रूप में लेता है, जब कि ये अपने आप में एक प्रणाली है, यह न केवल इसके विभिन्न हिस्सों का कुल योग है, बल्कि परस्पर संबंधो में सभी भाग एक दूसरे के साथ जुडे हैं। प्रणाली सिद्धांतकारों ने जीव विज्ञान और अन्य प्राकृतिक विज्ञानों से बहुत कुछ लिया है तथा सामाजिक प्रणाली को जैविक प्रणाली के समकक्ष लाने का प्रयास किया है। दरअसल, दोनों प्रणालियों के बीच समानताएं है, लेकिन उपमाएं केवल हमेशा उपमाएं ही होती है। तर्क को मिथ्याकरण तक विस्तृत करने का प्रयास किया गया। मानव शरीर

एक हाथ से संबंधित होने के लिए नहीं है, जब हम एक व्यक्ति को समाज या सरकार के कार्यकारी अंग के एक विधानमंडल से संबंधित करते है। प्रणालियों के सिद्धांतकारों ने जैविक सिद्धांत का केवल विस्तारित रूप निरूपित किया है, जिस पर व्यक्तिवादियों ने एक बार तर्क किया था। प्रणाली के निर्माण और उसे कायम रखने के लिए सभी प्रणालियों के सिद्धांतकारों ने खुद को प्रतिबद्ध किया है। उनकी चिंता केवल व्यवस्था जैसी है वैसी ही समझाने की है। इसके अतिरिक्त उन्होंने उन कारणों को बताने का प्रयास किया, जो प्रणाली के अस्तिव को खतरे मे डालते हैं, तथा उन कारकों का बताया जो इसे सुदृढ कर सकते है। वे सबसे अच्छे रूप में, यथास्थितिवादी है, जिन्हें अतीत के बारे में बहुत कम जानकारी है और शायद भविष्य के लिए कोई चिंता नहीं है। सभी अवधारणाएं जो प्रणाली सिद्धांतकारों ने विकसित की है, वे वर्तमान की व्याख्या और समझ से परे नहीं है। संपूर्ण दृष्टिकोण संरक्षण और प्रतिक्रिया में निहित है।(वर्मा, 1966)।

प्रणाली सिद्धांतकारों ने राजनीति विज्ञान में या तुलनात्मक सरकार और राजनीति के क्षेत्र में, राज्य के स्थान पर राजनीतिक प्रणाली को यह तर्क देकर प्रतिस्थापित किया है कि 'राजनीतिक प्रणाली' पद राज्य की तुलना में विस्तृत वर्णन करता है। निसंदेह, यह तर्क व्यापक और स्पष्ट है। लेकिन जब ये सिद्धांतकार राजनीतिक प्रणाली की विशेषताओं को उजागर करते है, तो वे उसे राजनीतिक शक्ति या बल के अधिक नहीं कहते है, जिसके साथ पांरपरिक शब्द 'राज्य' आमतौर पर जुड़ा हुआ है। प्रणाली विश्लेषकों ने जो किया है वह यह है कि उन्होंने राजनैतिक विश्लेषण को वर्णनात्मक, स्थिर और गैर–तुलनात्मक बनाने के लिए पंरपरावादियों की निंदा की है। इसके बावजूद, उन्होंने राजनीति विज्ञान या तुलनात्मक राजनीति में प्राकृतिक और अन्य सामाजिक विज्ञानों से कई अवधारणाओं को पेश किया है ताकि अध्ययन के विषय को अधिक अंतर्विषयक बनाया जा सके। प्रणाली सिद्धांतकारों का दावा कि उन्होंने वैज्ञानिक और अनुभवजन्य शिक्षण विकसित किया, ये अतिवाद है।

4.5.2 प्रणाली दृष्टिकोण की शक्ति

यदि प्रणाली दृष्टिकोण के पीछे का विचार सामाजिक ताने बाने (वेब) को समझने के लिए एक कुंजी के रूप में प्रणाली की अवधारणा को स्पष्ट करना है, तो प्रणाली सिद्धांतकारों के प्रयास बेकार नहीं गए है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्रणाली विश्लेषण का प्रभाव इतना व्यापक रहा है कि अधिकांश तुलनात्मक राजनीति के अनुसंधान कर्त्ताओं ने प्रणाली अवधारणाओं का उपयोग किया है। यह बताना भी महत्वपूर्ण है कि प्रणाली दृष्टिकोण ने स्वयं का अच्छी तरह से संबोधित किया है और कई सार्थक प्रश्नों के लिए अच्छी तरह से निर्देशित किया है, ये प्रश्न इस प्रकार से है– अपने वातावरण से प्रणाली का संबंध, प्रणाली की दृढ़ता और समयोपरिता, प्रणाली की स्थिरता, प्रणाली के संभाग के रूप में संरचनाओं का निर्देशित प्रकार्य, प्रणाली की गतिशीलता और यंत्र।

प्रोफेसर एस.एन.रे ने प्रणाली सिद्धांत की खूबियों को बहुत ही कुशलता से अभिव्यक्त किया है– 'यह (प्रणाली सिद्धांत) हमें स्थूल–विश्लेषणात्मक लोगों के साथ सूक्ष्म–विश्लेषणात्मक अध्ययनों के लिए एक उत्कृष्ट अवसर देता है। इस सिद्धांत द्वारा विकसित अवधारणाएं नए प्रश्न प्रस्तुत करती है और राजनीतिक

प्रक्रियाओं के अंवेषण के लिए नए आयाम का निर्माण करती है। यह अक्सर अर्तंदृष्टि और चीजों को अन्य अध्ययन विषयों के माध्यम से देखने के लिए संचार की सुविधा प्रदान करता है। इसे राजनीति विज्ञान के अंतर्गत एक सैद्धांतकि ढ़ांचे के सृजन के सबसे महत्वाकांक्षी प्रयासों में से एक माना जा सकता है।

4.6 सारांश

प्रणाली दृष्टिकोण राजनीतिक विज्ञान के अध्ययन में अपनाए गए आधुनिक तरीकों में से एक है, विशेष रूप से तुलनात्मक सरकारों और राजनीति में। यह राजनीतिक व्यवस्था को व्यक्तियों और संस्थानों के बीच बातचीत, अंतर्संबंधों, प्रतिरूपित व्यवहार के रूप में देखता है, संरचनाओं का एक दल जो अपने संबंधित कार्यों में लिप्त है तथा वह जो निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है और अपने आप को होने वाले परिवर्तनों में लिप्त रखने को प्रयास करता है।

हालांकि, प्रणाली दृष्टिकोण व्यवस्था का जो गतिशील विश्लेषण प्रदान करने का दावा करता है, वह इसके रखरखाव तक ही सीमित है। यह एक अनुभवजन्य अनुसंधान करने का दावा करता है, लेकिन जाँच के लिए पर्याप्त वैचारिक साधन प्रदान करने में विफल रहा है। यह राज्य की तुलना में विशेष रूप से राजनीतिक प्रणाली की व्यवस्था को व्यक्त करने में सक्षम नहीं हैं। जहाँ तक यथापूर्व स्थिति की बात है, यह दृष्टिकोण कमोबेश रूढ़िवादी है।

फिर भी कई तरीकों से प्रणाली दृष्टिकोण अद्वितीय है। इसने सामाजिक व्यवहार और सामाजिक अंतःक्रिया को समझने और विश्लेषण करने में एक व्यापक विषय–क्षेत्र प्रदान किया है। इसने प्राकृतिक विज्ञान से बहुत कुछ सीखा और पाया है तथा सामाजिक विज्ञान में अपनी अवधारणाओं का सफलतापूर्वक उपयोग किया है। यह राजनीति विज्ञान शास्त्र को कई प्रकार की कार्यप्रणाली प्रदान करने में सक्षम है।

4.7 संदर्भ

एल्मंड. जी. ए. एंड पॉवल, जीबी. (1978), कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स : ए डेवलप्मेंट अप्रोच, लिटिल ब्राउन, बॉस्टन।

एप्टर, डेविड ई. (1977), इंट्रोडक्शन टू पॉलिटिकल एनालिसिस. मास्सः कैम्ब्रिज।

क्लिआरल्स्वर्थ. जे,(ईडी). (1996), कंटैम्परेरी पॉलिटिकल एनालिसिस. फ्री प्रेस, न्यूयार्क।

डाह्ल, रॉबर्ट ए (1979). मॉडर्न पॉलिटिकल एनालिसिस, एंगलवुड क्लिफ्स्।

डेविस एम.आर. एंड ल्यूविस, वी.ए. (1971), मॉडल्स् ऑफ पॉलिटिकल सिस्टमस्, मैक्मिलन, लंड़न।

डयूश्च, कार्ल (1963). दी नर्वस् ऑफ गवर्नमेंट, दी फ्री प्रेस ऑफ ग्लैनको, न्यूयार्क।

ईस्टन, डेविड (1965). एसिस्टम एनालिसिस ऑफ पॉलिटिकल लाइफ, जॉन विले, शिकागो।

मैक्रिडिस्, आर.सी. एंड़ वार्ड, आर.ई. (1964), मॉडर्न पॉलिटिकल सिस्टमस्, प्रेंटिस हॉल, न्यू जरसी।

रे, एस.एन. (1999). मॉडर्न कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स. प्रेंटिस हॉल ऑफ इंड़िया प्राइवेट लिमिटिड, नई दिल्ली।

वर्मा. एस.पी. (1975), मॉडर्न पॉलिटिकल थ्योरी. विकास पब्लिशरस्, नई दिल्ली।

यंग, ओरान, आर. (1966), सिस्टम्स् ऑफ पॉलिटिकल साइंस. प्रेंटिस हॉल, एंग्लवुड क्लिफ्स्।

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. प्रणाली दृष्टिकोण प्राथमिक रूप से (अ) प्रणाली की अभिव्यक्ति (ब) प्रणाली के घटकों की संधि–योजन (स) व्यवहार, जिसके माध्यम से प्रणाली स्वयं को बनाए रखने में सक्षम है, को महत्व देता है।

2. पारंपरिक दृष्टिकोण व्यापक रूप से ऐतिहासिक और वर्णनात्मक हैं। वे निर्देशात्मक और आदर्शवादी भी हैं। उनके पास व्याख्यात्मक शक्ति का अभाव रहता है।

बोध प्रश्न 2

1. सामान्य प्रणालियों के सिद्धांत को सामाजिक विज्ञान में शायद ही कभी लागू किया गया हो जबकि प्रणाली सिद्धांत को सफलतापूर्वक लागू किया गया है (ब) सामान्य प्रणाली सिद्धांत, जिसे प्राकृतिक विज्ञान(विशेषरूप से जीव विज्ञान) के रूप में विकसित किया गया, वो प्रणाली से कमोबेश अंदर से जैविक रूप से एकीकृत जैसा बर्ताव करता है जबकि प्रणाली सिद्धांत प्रणाली के तत्वों के अंतःक्रियात्मक पहलू को महत्व देता है।

2. प्रणाली दृष्टिकोण की विशेषताएँ : (अ) इसने सामाजिक घटनाओं को एक इकाई के रूप में देखा, (ब) इसने प्रणाली को विभिन्न तत्वों के बीच बातचीत को वर्ग के रूप में माना।

बोध प्रश्न 3

1. ईस्टन के आगत–निर्गत सिद्धांत ने तुलनात्मक राजनीति के लिए एक उत्कृष्ट तकनीक प्रदान की। इसका महत्व यह है कि इसने अवधारणाओं और श्रेणियों का एक समूह प्रदान किया जिसने प्रणाली को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद की।

2. इसका व्यवहारिक दृष्टिकोण समाज और व्यक्तियों को मशीनों के समान मानता है। इसके अतिरिक्त, इसकी चिंता का विषय, इसके संचार की गुणवत्ता के बजाय मात्रा राजनीतिक घटनाओं को समझने के लिए एक चुनौती बन गया है।

इकाई 5 राजनीतिक आर्थिक दृष्टिकोण

संरचना

5.0 उद्देश्य
5.1 परिचय
5.2 आधुनिकीकरण के रूप में विकास
5.3 अल्पविकास और निर्भरता के रूप में विकास
5.4 विश्व–प्रणाली का विश्लेषण
5.5 उत्पादन दृष्टिकोण के प्रकार की अभिव्यक्ति
5.6 वर्ग विश्लेषण और राजनीतिक सत्ताएं
5.7 राज्य केंद्रित दृष्टिकोण
5.8 वैश्वीकरण और नवउदारवादी दृष्टिकोण
5.9 सारांश
5.10 प्रमुख शब्द
5.11 संदर्भ
5.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के लिए राजनीतिक अर्थव्यवस्था का दृष्टिकोण इस बात की पुष्टि करता है कि राजनीति और अर्थशास्त्र के बीच एक संबंध मौजूद है तथा यह रिश्ता काम करता हैं एवं स्वयं को कई तरीकों से प्रकट करता हैं। यह दृष्टिकोण सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं के बीच संबंधों एवं स्पष्टीकरण के अध्ययन का सूत्र प्रदान करता हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद, आपको निम्न में सक्षम होना चाहिए :–

- अवधारणा के रूप में राजनीतिक अर्थव्यवस्था की विभिन्न विशेषताओं का वर्णन करें,
- समझाएं कि तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के लिए अवधारणा कैसे प्रासंगिक हो गई हैं, तथा
- राजनीतिक अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण के विकास का पता लगाने और
- राजनीतिक अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत विभिन्न सैद्धांतिक आयामों की पहचान करें; जो विगत कुछ वर्षो में देशों और सामाजिक एवं राजनीतिक घटनाओं के मध्य संबंधों के अध्ययन का आधार बना।

5.1 परिचय

राजनीतिक अर्थव्यवस्था, सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं को समझने के एक विशिष्ट तरीके को संदर्भित करती हैं; जिसके तहत अर्थव्यवस्था तथा राजनीति को अलग–अलग प्रक्षेत्र के रूप में नहीं देखा जाता हैं। यह (अ) दोनों

के बीच संबंध और (ब) धारणा जो इस संबंध को बहुविध तरीके से सामने लाती है। इन धारणाओं में महत्वपूर्ण व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्क ढ़ाचे का गठन किया गया हैं, जिसके अन्तर्गत सामाजिक और राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन किया जा सकता हैं। यह कहने के पश्चात्, यह इंगित करना महत्वपूर्ण है कि जब राजनीतिक अर्थव्यवस्था की अवधारणा एक संबंध की ओर संकेत करती है, तो इसका कोई एक अर्थ नहीं है जिसे अवधारणा के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता हों। अवधारणा का विशिष्ट अर्थ सैद्धांतिक, वैचारिक पंरपरा पर निर्भर करता हैं। जैसे– उदारवादी या मार्क्सवादी, जिसके अंतर्गत इसे रखा गया हैं, तथा इस स्थिति के आधार पर, विशिष्ट तरीके जिसमें अर्थशास्त्र और राजनीति को स्वयं समझा जाता हैं।

दिलचस्प है कि अर्थशास्त्र और राजनीति की अलग–अलग प्रक्षेत्र के रूप में उपस्थिति अपने आप में एक आधुनिक घटना हैं। अरस्तू के समय से लेकर मध्य युग तक, अर्थशास्त्र की अवधारणा स्व–विनियमन के भिन्न क्षेत्र के रूप में अज्ञात थी। 'अर्थव्यवस्था' शब्द का ग्रीक में 'घरेलू प्रबधंन की कला' का प्रतीक है। जैसा कि ग्रीस में राजनीतिक विकास ने अनुक्रम का पालन किया :– घरेलू–गांव–शहर–राज्य। घर के प्रबंधन का अध्ययन 'राजनीति' के अध्ययन के तहत हुआ, एवं अरस्तू ने अपनी राजनीति की पहली पुस्तक में आर्थिक प्रश्नों पर विचार किया। शास्त्रीय राजनीतिक अर्थशास्त्री के बीच, एडम स्मिथ ने राजनीतिक अर्थव्यवस्था को 'राजनेता या विधायक के विज्ञान की एक शाखा' माना। जहां तक मार्क्सवादी स्थिति की बात हैं, मार्क्स (1818–1883) ने स्वयं, आमतौर पर 'राजनीतिक अर्थव्यवस्था' के बारे में नहीं कहा था, बल्कि 'राजनीतिक अवधारणा को आलोचानात्मकता' के रूप में प्रस्तुत किया, जहां अभिव्यक्ति का उपयोग मुख्य रूप से शास्त्रीय लेखकों के संदर्भ में किया गया था। मार्क्स ने कभी भी राजनीतिक अर्थव्यवस्था को परिभाषित नहीं किया, लेकिन एंगेल्स ने किया। राजनीतिक अर्थव्यवस्था, उत्तरार्द्ध के अनुसार 'उत्पादन और विनिमय को नियंत्रित करने वाले कानूनों के अध्ययन का तात्पर्य जीवनयापन का साधन'(एंगेल्स, एंटी–डुहरिंग)। सोवियत आर्थिक सिद्धांतकार और इतिहासकार इस्साक इलिच रूबिन ने राजनीतिक अर्थव्यवस्था की निम्नलिखित परिभाषा का सुझाव दियाः– राजनीतिक अर्थव्यवस्था मानव कार्य गतिविधि से संबंधित है, न कि इसके तकनीकी तरीकों और श्रम के उपकरणों के दृष्टिकोण से, बल्कि इसके सामाजिक स्वरूप के दृष्टिकोण से संबंधित है। यह उन उत्पादन संबंधों से संबंधित है जो उत्पादन की प्रक्रिया में लोगों के बीच स्थापित होते हैं'(1928)। इस परिभाषा में, राजनीतिक अर्थव्यवस्था कीमतों या कमी के स्रोतों का अध्ययन नहीं हैं, बल्कि यह है कि, संस्कृति का एक अध्ययन सवालों के जवाब मांगता है, जैसे कि क्यों समाज की उत्पादक शक्तियां एक विशेष सामाजिक रूप में विकसित होती हैं, क्यों मशीनीकरण की प्रक्रिया व्यापार उद्यम के संदर्भ में प्रकट होती है, तथा क्यों औद्योगीकरण पूंजीवादी विकास का रूप ले लेता है। राजनीतिक अर्थव्यवस्था, संक्षेप में, यह पूछती है कि अर्थव्यवस्था के विशिष्ट, ऐतिहासिक रूप में लोगों की कार्य गतिविधि को कैसे विनियमित किया जाता हैं। औपनिवेशीकरण के अतं के बाद के वर्षो में, राष्ट्रों और विशिष्ट राजनीतिक एवं सामाजिक घटनाओं के बीच संबंधों की समझ को विभिन्न दृष्टिकोणों अर्थात संस्थानों, राजनीतिक समाजशास्त्र और राजनीतिक अर्थव्यवस्था द्वारा सूचित किया गया था। ये मुख्य रूप से इस बात की जांच करने के लिए तैयार किए

गए थे कि सामाजिक मूल्यों को कैसे प्रेषित किया गया था और संसाधनों को संरचनाओं के किस माध्यम से वितरित किया गया था। ये सभी अंततः आधार या मानक निर्मित करेगें, जिनके साथ विभिन्न देशों और संस्कृतियों को विकास के श्रेणीबद्ध पैमाने पर वर्गीकृत किया जा सकता है, तथा विकास और परिवर्तन के प्रक्षेप पथ के रूप में देखा जा सकता है। कई सिद्धांतों को संरचना के रूप में उन्नत किया गया था जिसके भीतर इस परिवर्तन को समझा जा सकता था। इसके अतिरिक्त यह आधुनिकीकरण सिद्धांत था, जो ऐतिहासिक संदर्भ में जापानी और यूरोपीय साम्राज्यों के अंत के एवं शीत युद्ध के आरम्भ के रूप में उभरा।

5.2 आधुनिकीकरण सिद्धांतः आधुनिकीकरण के रूप में विकास

आधुनिकीकरण का सिद्धांत प्रथम विश्व के द्वारा तीसरी दुनिया के 'नए राज्यों' की सामाजिक वास्तविकता को समझाने का एक प्रयास था। यह सिद्धांत 'पारंपरिक' और 'आधुनिक' समाजों के बीच अलगाव या द्वैवतवाद पर आधारित है। 'पारंपरिक' और 'आधुनिक' समाजों के बीच अंतर को मैक्स वेबर से टैल्कॉट पार्सन्स के माध्यम से व्युत्पन्न किया गया था। एक ऐसा समाज जिसमें ज्यादातर रिश्ते 'सार्वभौमिक' के बजाय 'विशेषवादी' थे (उदाहरणार्थ– जो विशेष लोगों से संबंधों पर आधारित हों, जैसे कि परिजन न कि सामान्य मानदंड पर जो कि व्यक्तियों के सम्पूर्ण वर्ग को दर्शाता है) जिसमें जन्म ('आरोपण') न कि 'उपलब्धि' नौकरी या कार्यालय में काम करने का सामान्य आधार थी। जिसमें निष्पक्षता के बजाय भावनाओं ने सभी प्रकार के संबंधों को नियंत्रित किया ('प्रभावकारिता' और 'तटस्थता' के बीच अंतर)। और जिसमें भूमिकाओं को अलग नहीं किया गया था– उदाहरण के लिए शाही घराना भी राज्य तंत्र था ('भूमिका की व्यापकता' बनाम 'भूमिका की विशिष्टता') जो 'पारंपरिक' कहलाता था। आमतौर पर पारंपरिक समाजों की विशेषता के रूप में देखी जाने वाली अन्य विशेषताएं थी– निम्नस्तर का श्रम, कृषि पर निर्भरता, उत्पादन की कम दर, विनिमय के स्थानीय नेटवर्क की प्रबलता और प्रतिबंधित प्रशासनिक क्षमता जैसी बातें शामिल थीं। दूसरी ओर, एक 'आधुनिक' समाज, जिसमें विपरीत विशेषताओं को प्रदर्शित करने के रूप में देखा जाता है। आधुनिक समाज को उपलब्धि, सार्वभौमिकता और व्यक्तिवाद, वैश्विक सामाजिक गतिशीलता, समान अवसर, कानून का शासन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधारित सामाजिक व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया गया था। दो श्रेणियों के इस 'विरोध' के पश्चात्, 'आधुनिकीकरण' ने सामाजिक संगठन के पारंपरिक से आधुनिक सिद्धांतों तक के संक्रमण की प्रक्रिया को संदर्भित किया। संक्रमण की इस प्रक्रिया को न केवल वास्तविकता में एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के नए स्वतंत्र देशों में देखा जा सकता था, बल्कि यह भी दृष्टिगोचर किया गया था कि इन देशों ने इसे स्वयं प्राप्त करने के लिए लक्ष्य के रूप में निर्धारित किया था। दूसरे शब्दों में, आधुनिकीकरण सिद्धांत का उद्देश्य पारंपरिक समाज से आधुनिक समाज में संक्रमण को समझना और बढ़ावा देना था। आधुनिकीकरण सिद्धांत ने तर्क दिया कि इस परिवर्तन को आधुनिक दुनिया के साथ पारंपरिक समाजों को 'पकड़ने' की एक प्रक्रिया के रूप में माना जाना चाहिए। आधुनिकीकरण के सिद्धांत का

डब्लू. डब्लू. रोस्टो (द स्टेज ऑफ इकोनामी ग्रोथ : ए नान–कम्युनिष्ट घोषणा पत्र, 1960) के लेखन में सर्वोत्तम रूप से विस्तार से बताया गया था, जिन्होंने तर्क दिया कि सभी समाज विकास के पांच चरणों से गुजरते थे। ये चरण थे :– (1) पारंपरिक मंच, (2) टेक–ऑफ के लिए पूर्व शर्त (3) टेक–ऑफ (4) अभियान परिपक्वता और और (5) उच्च आम खपत।

तीसरी दुनिया के समाजों को पारंपरिक माना जाता था, इसलिए उन्हें दूसरे चरण की ओर विकसित करने की आवश्यकता थी, एवं इसलिए टेक–ऑफ के लिए पूर्व शर्त स्थापित की। रोस्टो ने इन पूर्व शर्तो को व्यापार के विकास, तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक विचारों की शुरूआत और अभिजात वर्ग के उद्भव जो कि अपने धन का अपव्यय करने के बजाय निवेश करता हैं। इस सिद्धांत ने तर्क दिया कि इस प्रक्रिया को पश्चिमी निवेश और विचारों के प्रोत्साहन एवं प्रसार से तेज किया जा सकता हैं। इस परंपरा के विद्ववानों ने तर्क भी दिया कि औद्योगिकीकरण व्यक्तिवाद के पश्चिमी विचारों, अवसर की समानता और साझा मूल्यों को बढ़ावा देगा, जो बदले में सामाजिक अशांति एवं वर्ग संघर्ष को कम करेगा। जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, कि शीत युद्ध के संदर्भ में आधुनिकीकरण सिद्धांत विकसित हुआ और उस समय यह कई बार स्पष्ट नहीं करता है कि (क) आधुनिकीकरण सिद्धांत एक विश्लेषणात्मक या निर्देशात्मक विधि था, (ख) क्या आधुनिकीकरण हो रहा था या क्या इसे होना चाहिए था, एवं (ग) क्या आधुनिकीकरण को बढ़ावा देने वालों का उद्देश्य गरीबी से राहत दिलाना था या साम्यवाद के खिलाफ एक बड़ा कदम उठाना था ? दो कारक जुड़े हुए हैं, लेकिन रोस्टो की पुस्तक –'ए नॉन–कम्युनिस्टो मेनिफेस्टो' के उपशीर्षक से पता चलता है कि बाद को पूर्व की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण माना जा सकता हैं। निष्कर्ष में, हम कह सकते है कि आधुनिकीकरण सिद्धांत विकासवाद–संबंधी एक विकासवादी मॉडल पर आधारित था, जिससे सभी राष्ट्र–राज्य विकास के व्यापक रूप से समान चरणों से गुजरते थे। युद्ध के बाद की दुनिया के संदर्भ में, यह अनिवार्य माना जाता था कि आधुनिक पश्चिमी दुनिया के देशों को पारंपरिक तीसरी दुनिया के देशों में आधुनिकता के लिए परिवर्तन का बढ़ावा देने हेतु मद्द करनी चाहिए।

5.3 विकास अल्पविकास और निर्भरता के रूप में

आधुनिकीकरण के नजरिए से विस्तारित आलोचना के रूप में 1950 के दशक के अंत में निर्भरता सिद्धांत का प्रादुर्भाव हुआ। विचार को यह संप्रदाय मुख्य रूप से आंद्रे गुंडर फैंक के कार्य से संबंधित है, लेकिन पॉल बारन (द पोलिटकल इकोनामी ऑफ ग्रोथ 1957) का प्रभाव भी बहुत महत्वपूर्ण है। बारन ने तर्क दिया कि पश्चिमी यूरोप (और बाद में जापान एवं संयुक्त राज्य अमेरिका) तथा शेष दुनिया के बीच मौजूद आर्थिक संबंध संघर्ष और शोषण पर आधारित थे। पूर्व ने 'एकमुश्त लूट या लूट में भाग लिया, उनकी पैठ ने वृहत स्तर पर धन को व्यापार के रूप में कब्जा कर लिया और जबरदस्त तरीके से धन की निकासी की' (बारन 1957ः पेज़ 141–2)। इसके परिणामस्वरूप बाद वाले से पूर्व वाले को धन का हस्तांतरण हुआ। 1960 के दशक में, फ्रैंक ने तीसरी दुनिया के देशों को करीब से परखा, और द्वैतवादी मान्यता(आधुनिकीकरण संप्रदाय का) की आलोचना की, जिसने 'आधुनिक' और 'पारंपरिक' राज्यों को अलग–थलग कर

दिया और तर्क दिया कि दोनों निकट से जुड़े हुए थे(लैटिन अमेरिकाः अल्पविकसित या क्रांति, 1969)। उन्होंने अपनी आलोचना को आधुनिकीकरण सिद्धांत और रूढिवादी मार्क्सवाद दोनों पर लागू किया, उनके द्वैतवाद को एक सिद्धांत द्वारा प्रतिस्थापित किया गया, जिसमें तर्क दिया गया कि दुनिया सोलहवीं शताब्दी के बाद से पूंजीवादी रही है, जिसमें विश्व प्रणाली में शामिल सभी क्षेत्र बाजार के लिए उत्पादन पर आधारित थे। प्रभुत्व और निर्भरता के संबंध, फ्रैंक का तर्क है कि वैश्विक पूंजीवादी प्रणाली में एक श्रृंखला की तरह फैशन में चलत है, महानगरो के अधिशेष को विनियोजित करने के साथए उनके कस्बों के अधिशेष से अधिशेष को विस्थापित करते हुए, इसी क्रमबद्धता के साथ। फ्रैंक का केंद्रीय तर्क यह है कि 'प्रथम' दुनिया (उन्नत पूंजीवादी समाज) और 'तीसरी' दुनिया (अनुगामी) का निर्माण उसी प्रक्रिया (दुनिया भर में पूंजीवादी विस्तार) का एक परिणाम हैं। निर्भरता के दृष्टिकोण के अनुसार, समकालीन विकसित पूंजीवादी देश (महानगर) कभी भी तीसरी दुनिया (अनुगामी) के रूप में अल्पविकसित नहीं थे, बल्कि अविकसित थे।

अविकसित्ता, तीसरी दुनिया के देशों की अजीब सामाजिक—आर्थिक संरचनाओं के कारण होने के बजाय, अविकसित अनुगामी और विकसित महानगरों के बीच प्राप्त संबंधो (साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के संबंधों) का ऐतिहासिक उत्पाद हैं। संक्षेप में, विकास और अविकसित्ता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, एक ही प्रक्रिया के दो ध्रुव विश्व स्तर पर महानगरीय पूंजीवादी विकास तीसरी दुनिया में 'अविकसित्ता के विकास' का निर्माण करता हैं। फ्रैंक के अनुसार, लैटिन अमेरिका के सबसे पिछड़े क्षेत्र (जैसे—उत्तर—पूर्वी ब्राजील) ठीक उन क्षेत्रों में थे जो कभी महानगर से सबसे मजबूती से जुड़े थे। वृक्षारोपण और हयसेंडस (स्पेनिश भूमि सम्पदा) जैसी संस्थाएं, चाहे उनकी आंतरिक उपस्थिति कुछ भी हो, विजय के बाद से उत्पादन का पूंजीवादी रूप महानगर के बाजार से जुड़े हुए हैं। फ्रैंक के अनुसार, आर्थिक विकास, लैटिन अमेरिका में केवल उस समय में अनुभव किया गया था जब महानगरीय संपर्क कमजोर हो गए थे— नेपोलियन के युद्ध, 1930 के दशक की मंदी और बीसवीं शताब्दी के दो विश्व युद्ध— और यह ठीक उस समय समाप्त हुआ था जब महानगर ने इन व्यवधानों से उबरकर, तीसरी दुनिया से पुनः अपना संपर्क स्थापित किया। निर्भरता सिद्धांत वास्तव में आधुनिकीकरण सिद्धांत का एक शक्तिशाली उन्नत रूप था, लेकिन यह स्वयं की कमजोरियों से ग्रस्त था। सर्वप्रथम, इसे एक निश्चित एतिहासिक चरित्र का सामना करना पड़ा, इसकी अभिन्न निर्भरता की स्थिति के परिणामस्वरूप तीसरी दुनिया के देशों में आन्तरिक परितर्वन देखे गए। जैसा कि कॉलिन लेयस ने कहा था कि निर्भरता सिद्धांत '' साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के हाथों में अविकसित देशों के साथ क्या होता है, इस पर ध्यान केंद्रित करता है, न कि इसमें शामिल पूर्ण ऐतिहासिक प्र्क्रिया में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरूद्ध संघर्ष के विभिन्न रूप शामिल है, जिनमें अल्पविकास की स्थितियों के कारण वृद्धि होती है''(द अन्डरडेवलपमेंट ऑफ केन्या, 1975, पेज 20)। दूसरे, निर्भरता सिद्धांत अर्थशास्त्रीय हो जाता है। सामाजिक वर्ग, राज्य और राजनीति आर्थिक बलों एवं तंत्र के व्युत्पन्न के रूप में दृष्टिगोचर होते है और अक्सर बहुत कम ध्यान आकर्षित करते हैं। वर्ग, वर्ग परियोजनाएं और वर्ग संघर्ष न तो ऐतिहासिक परिवर्तन के प्रमुख कारक के रूप में दिखाई देते है और न ही विश्लेषणात्क ध्यान के प्रमुख केंद्र के रूप में। तीसरा, आलोचको का आरोप है

कि विकास की अवधारणा निर्भरता सिद्धांत में अस्पष्ट हैं। यह देखते हुए अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि 'विकास' तीसरी दुनिया में तब होता है, जब महानगरीय अनुगामी संबंध कमजोर हो जाते है, तो क्या 'विकास' का तात्पर्य निरंकुशता है ? चूंकि 'विकास' महानगरों में पूंजीवादी विकास का एक गुण है, क्या इस मार्ग को दोहराने की तीसरी दुनिया की क्षमता के बारे में फिर से अंतिम विश्लेषण में बहस है ? अतं में, निर्भरता सिद्धांत की धारणाएं तीसरी दुनिया के विभिन्न तथाकथित 'आर्थिक चमत्कार' का स्पष्टीकरण प्रदान करने में विफल रहती है। इस प्रकार, आधुनिकीकरण के मिथकों से परे एक उन्नत स्थिति इंगित करते समय, निर्भरता सिद्धांत पूरी तरह से इसकी छाप से बच नहीं पाया। हालांकि आधुनिकीकरण सिद्धांत ने तर्क दिया कि 'प्रसार' ने विकास लाया है, निर्भरता सिद्धांत एक समान तरीके से बहस करता है जो स्थिरता लाती हैं।

5.4 वैश्विक प्रणाली का विश्लेषण

इमैनुअल वालरस्टीन ने अपने 'वैश्विक प्रणाली विश्लेषण' में वैश्विक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के विचार को और विकसित किया। वालरस्टीन ने तर्क दिया कि सोलहवीं शताब्दी के शुरूआत में यूरोप के विस्तार ने वैश्विक पूंजीवादी बाजार के अन्तर्गत शामिल तीसरी दुनिया के उन क्षेत्रों में उत्पादन के पूर्व–पूंजीवादी तरीकों के अंत का संकेत दिया। इस सिद्धांत के अनुसार, द्वैतवाद या सामंतवाद तीसरी दुनिया में मौजूद नहीं है। आधुनिक विश्व–व्यवस्था इसमें एकात्मक है कि यह उत्पादन की पूंजीवादी विधा का पर्यायवाची है, फिर भी इसमें असमानता है और इसे स्तरों में विभाजित किया गया है ये है– अन्तर्भाग(केंद्र), अर्ध–परिधि, परिधि, जो पूर्ण व्यवस्था के भीतर कार्यात्मक रूप से विशिष्ट भूमिका का निर्वहन करते है। वैश्विक प्रणाली का सिद्धांत व्यवस्था के बहुपक्षीय संबंधों पर एक नया जोर देता है (अन्तर्भाग–अन्तर्भाग और परिधि–परिधि के रूप में विश्लेषण करने में महत्वपूर्ण हो जाते है जैसे कि अन्तर्भाग–परिधि ने किया), बजाय महानगरीय प्रणाली के एकपक्षीय संबंध और निर्भरता सिद्धांत की अनुगामी विशेषता पर। वालरस्टीन का मूल तर्क था कि सोलहवीं शताब्दी में वैश्विक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का निर्माण इतिहास की एक नई समयावधि की वजह से हुआ, जो स्थिर उपभोग के बजाय विस्तारित संचय पर आधारित थी। यह तीन प्रमुख कारकों के उद्भव के लिए जिम्मेदार था:– (1) विवाद के विषय में विश्व के भौगोलिक आकार का विस्तार (निगमन के माध्यम से) (2) विभिन्न उत्पादों और वैश्विक अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के लिए श्रम नियंत्रण के विभिन्न माध्यमों का विकास (विशिष्टीकरण) एवं (3)इस पूंजीवादी वैश्विक अर्थव्यवस्था के केंद्र राज्यों में अपेक्षाकृत सुदृढ़ राज्य मशीनरी का निर्माण (अधिशेष को केंद्र को स्थानांतरित करने का आश्वासन देना)।

वैश्विक अर्थव्यवस्था के गठन में, केंद्रीय क्षेत्र उन देशों के रूप में सामने आते हैं, जहां पूंजीपति मजबूत हुए और जमींदार कमजोर हुए। महत्वपूर्ण संबंध जो यह निर्धारित करता है कि किसी देश को परिधि का एक मूल या हिस्सा होना है या नहीं, यह उस राज्य की ताकत पर निर्भर करता है। वालरस्टीन के अनुसार, वे देश 'राज्य नियंत्रण वाद' की प्रक्रिया को प्राप्त कर सकते थे, अर्थात केंद्रीय प्राधिकरण में शक्ति का संकेंद्रण, जो कि वैश्विक अर्थव्यवस्था के प्रमुख देश बन गए। दूसरी ओर, राज्य मशीनरी की ताकत 'उस समय की वैश्विक अर्थव्यवस्था

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

में देश की संरचनात्मक भूमिका निभाने' के संदर्भ में बताई गई हैं। एक सुदृढ़ राज्य देश को पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था के अधिशेष का हिस्सा साझा करने के लिए एक इकाई के रूप में सक्षम बनाता हैं। वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था की स्थिरता तीन कारकों की वजह से बनी हुई हैः (1) प्रमुख ताकतों के हाथों में सैन्य ताकत का संकेद्रण (2) संपूर्ण रूप से प्रणाली के लिए एक वैचारिक प्रतिबद्धता की व्यापकता, एवं (3) बहुमत का विभाजन एक बड़े निचले तबके और छोटे स्तर में।

अर्ध–परिधि के अस्तित्व का तात्पर्य है कि ऊपरी स्तर (मूल) का सामना अन्य सभी के एकीकृत विरोध से नहीं होता है क्योंकि मध्य स्तर (अर्ध–परिधि) शोषित और शोषक दोनों हैं। अर्ध–परिधि, हालांकि परिवर्तन के लिए एक स्थान बनाती हैं। नए मूल राज्य अर्ध–परिधि से उभर सकते है, एवं यह गिरावट वाले लोगों के लिए एक गंतव्य है। यद्यपि वैश्विक प्रणाली के सिद्धांत को ओलिवर कॉक्स, समीर अमीन और जियोवन्नी अरिघी जैसे कई विचारकों द्वारा आगे बढ़ाया गया है, लेकिन इसके द्वारा 'प्रणाली अनिवार्यता' को प्राथमिक केंद्र–बिंदु बनाए जाने की व्यापक रूप से आलोचना की गई हैं। इस प्रकार, इस सिद्धांत में, सभी घटनाओं, प्रक्रियाओं, समूह–पहचान, वर्ग और राज्य परियोजनाओं को समग्र से प्रणाली के संदर्भ में समझाया गया हैं। इस तरह के एक संदर्भ बिंदु का तात्पर्य है कि उपर्युक्त सभी कर्त्ताओं को प्रणाली के अन्तर्गत इस तरह से अंतर्निहित माना जाता है कि वे अपने तात्कालिक मूर्त हितों में कार्य नहीं करते हैं, लेकिन हमेशा प्रणाली के नुस्खे या आदेश के अनुसार कार्य करते है। आलोचकों ने यह भी कहा कि यह सिद्धांत समकालीन पूंजीवादी दुनिया को अपर्याप्त रूप से समझता है, क्योंकि यह बाजार पर ध्यान केंद्रित करता हैं, उत्पादन की प्रक्रियाओं पर ध्यान में रखने में विफल रहा।

बोध प्रश्न 1

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) आधुनिकीकरण सिद्धांत की मुख्य विशेषताएं क्या है?

....

....

....

....

2) उपरोक्त विश्लेषण से, क्या आप उन पंक्तियों का विश्लेषण कर सकते है जिनके साथ वालेरस्टीन ने आधुनिकीकरण सिद्धांत की आलोचना की थी ?

....

....

....

5.5 उत्पादन के तरीके का वर्गीकरण

1960 के दशक के उत्तरार्ध से तीसरी दुनिया में संक्रमण प्रक्रिया के लिए मार्क्सवादी दृष्टिकोण के एक निश्चित प्रकार को पुनः जीवित करने का प्रयास किया गया, जिसमें उत्पादन का तरीका निर्धारण की अवधारणा थी। विकास के इस संप्रदाय से संबंधित सिद्धांतकारों ने तर्क दिया कि तीसरी दुनिया के सामाजिक निर्माण उत्पादन के कई तरीकों को शामिल करते है और यह पूंजीवादी उत्पादन के पूर्व–पूंजीवादी तरीकों के साथ हावी एवं कलात्मक होता है। इन सिद्धांतकारों ने सामाजिक गठन एवं उत्पादन के तरीको के बीच अंतर किया। सामाजिक गठन आर्थिक, राजनीतिक और वैचारिक प्रथाओं या 'स्तरों' के संयोजन को संदर्भित करता है। उत्पादन का तरीका आर्थिक स्तर को संदर्भित करता है जो यह निर्धारित करता है कि सामाजिक गठन का निर्माण करने वाली 'संरचित समग्रता' में कौन से विभिन्न स्तर प्रमुख है। आर्थिक स्तर अन्य स्तरों पर सीमा निर्धारित करता है, जो उन कार्यो को करता है जो उत्पादन के (आर्थिक) तरीके को पुनः प्रस्तुत करते है। इसलिए, ये गैर–आर्थिक स्तर उत्पादन के तरीके का केवल एक सापेक्ष स्वायत्तता का प्रयोग लेते है। उत्पादन का तरीका या 'आर्थिक' स्तर इसके 'उत्पादन के संबंधों' से परिभाषित होता है, अर्थात अधिशेष के सन्निकट निर्माता और इसके सन्निकट विनियोगकर्त्ता के बीच सीधा संबंध। प्रत्येक समूह, दास–स्वामी, कृषक दास–जमींदार, मुक्त मजदूर–पूंजीवादी एक अलग उत्पादन के तरीके को परिभाषित करते है। उत्पादन के तरीके का परिपेक्ष्य अधिशेष उत्पाद के उत्पादन के प्रस्थान के बिंदु के रूप में लेता है एवं इसलिए व्यापार संबंधों के बजाय उत्पादन के तरीकों के आधार पर केंद्र और परिधि के बीच दुनिया के विभाजन की व्याख्या करने के लिए सक्षम हैं। इसलिए केंद्र दुनिया के पूंजीवादी क्षेत्रों के साथ मेल खाता है, जो मोटेतौर पर मुक्त मजदूरी पर आधारित है। दूसरी ओर, परिधि को उत्पादन के मुक्त संबंधों (अर्थात उत्पादन के गैर–पूंजीवादी तरीके) के आधार पर वैश्विक अर्थव्यवस्था में शामिल किया गया था, जिसने पूंजी के अभूतपूर्व संचय को रोक दिया था। असमान व्यापारिक संबंध अतः उत्पादन के असमान संबंधों का प्रतिबिंब थे। इन कारणों की वजह से 'उन्नत' पूंजीवादी' देश दुनिया के अन्य क्षेत्रों पर हावी होने में सक्षम थे, जहां उत्पादन के गैर–पूंजीवादी तरीके मौजूद थे। इस पक्ष से, उत्पादन के दृष्टिकोण का तरीका आधुनिकीकरण सिद्धांत के क्षेत्रीय (आधुनिक और पारंपरिक) विश्लेषण के लिए कम से कम आंशिक वापसी का गठन करता प्रतीत होता हैं। हालांकि, महत्वपूर्ण अंतर यह है कि द्वैतवादी व्याख्याओं के विपरीत, यहां जोर उत्पादन के साधनों के पारस्परिक संबंध पर हैं। यह तर्क दिया जाता है कि सोलहवीं शताब्दी में पश्चिम के पूंजीवादी विस्तार ने तीसरी दुनिया में उत्पादन के पूर्व–पूंजीवादी तौर–तरीकों का सामना किया, जो इसे परिवर्तित या तिरस्कृत नहीं कर सकता था, बल्कि जो इसे एक साथ संरक्षित या नष्ट कर रहा था।

उत्पादन के पूंजीवादी तरीके और उत्पादन के पूर्व–पूंजीवादी तरीके के मध्य संबंध, हालांकि स्थिर नहीं रहा है एवं उत्पादन के पूंजीवादी संबंध परिधि में उभरे हैं। परिधि में पूंजीवाद एक विशिष्ट प्रकार का है, जो मूल देशों में अपने रूप से गुणात्मक रूप से भिन्न हैं। परिधि में पूंजीवाद की चिह्नित विशेषता गैर–पूंजीवादी उत्पादन के साथ इसका संयोजन है– दूसरे शब्दों में, पूंजीवाद

उत्पादन के गैर–पूंजीवादी तरीकों के साथ सहअस्तित्व या जुड़ा होता है। साम्राज्यवादी (जोकि 'मूल–पूंजीवादी') पैठ द्वारा गैर–पूंजीवादी उत्पादन का पुर्नगठन किया जा सकता हैं, लेकिन यह इसके 'संरक्षण' द्वारा भी अधीनस्थ है। हालांकि उत्पादन सिद्धांत के तरीके को एक कार्यात्मक पद्धतिवादी दृष्टिकोण से कमजोर किया गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह सिद्धांत पूंजीवाद के आवश्यक तर्क के रूप में सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या करता है। इसके परिणामस्वरूप वृत्तीय तर्क होता हैं। यदि उत्पादन का पूर्व–पूंजीवादी तरीका अस्तित्व मे रहता है तो यह पूंजीवाद के लिए इसकी कार्यक्षमता का प्रमाण है और यदि पूर्व–पूंजीवादी तरीका टूट जाता है, तो यह भी पूंजीवाद की कार्यात्मक आवश्यकता का प्रमाण है। इस दृष्टिकोण की आलोचना भी की गई है क्योंकि यह मानव को संरचना के अधीन करता है, और यह मानता है कि सामाजिक घटनाओं को पूंजीवाद के लिए उनकी कार्यक्षमता द्वारा समझाया जाता है, न कि स्वयं मनुष्यों के कार्यो और संघर्षो द्वारा।

5.6 वर्ग विश्लेषण और राजनीतिक शासन पद्धति

1970 के दशक की शुरूआत में, तीसरी दुनिया के देशों में हो रहे सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तनों को समझाने के लिए एक अन्य दृष्टिकोण मार्क्सवादी विद्ववानों का उभरा। इसमें प्रमुख योगदान कोलिन लेयस (अन्डरडेवल्पमेंट इन केन्या, 1975) और जेम्स पेट्रास (क्रिटीक्ल प्रस्पेक्टिव ऑन इम्पेरीलिज़म एंड शोसल क्लासेज़ इन द थर्ड वर्ल्ड, 1978) ने किया, जिन्होंने विकासशील देशों में संक्रमण की प्रक्रिया को विश्व की अनिवार्यता या उत्पादन के तरीकों की अभिव्यक्ति के रूप में नहीं समझाया, बल्कि इतिहास की संचालकता को मूलतः वर्गो के संदर्भ में बताया। यहां केंद्रीय बिंदु विकास अर्थात संवृद्धि, बनाम स्थिरता पर नहीं है। पेट्रास और लेयर्स ने इन प्रश्नों पर विचार व्यक्त किएः– विकास किसके लिए है? पेट्रास विश्व–प्रणाली विश्लेषण के 'वाह्य' संबंधों और उत्पादन विश्लेषण के तरीकों के 'आंतरिक' संबंधों में भिन्नता मानते है। उनके अनुसार, तीसरी दुनिया के समाजों की मुख्य विशेषता विधि पूर्वक वाह्य और आंतरिक वर्ग संरचना एक दूसरे को पार करने और वर्ग सहजीवियों के विभिन्न संयोजनों को सही करना और तरीके से मिलाना है। वैश्विक स्तर पर पूंजीवादी विस्तार ने तीसरी दुनिया में सहयोगात्मक स्तर के अस्तित्व का विस्तार किया है, जो न केवल वाह्य रूप से उत्पादन को उन्नत करता है बल्कि आंतरिक रूप से भी शोषण करता है। उपनिवेशों की स्वतंत्रता ने स्वदेशी राज्य के साधन और विभिन्न आंतरिक और बाहरी वर्ग गठबंधनों के आधार पर कई विकासात्मक रणनीतियों तक इन लोगों की पहुंच का मार्ग प्रशस्त किया। विकास की रणनीतियों के विभिन्न प्रतिरूपों की व्याख्या करने के लिए, पेट्रास ने जांच की (अ) उन परिस्थितियों की जिनके जहत संचय होता है, जिसमें शामिल हैः–(1) राज्य की प्रकृति (और राज्य नीति), (2) वर्ग संबंध (अधिशेष निष्कर्षण की प्रक्रिया, शोषण की तीव्रता, वर्ग संघर्ष का स्तर, कार्यबल का सकेंद्रण), तथा (ब) वर्ग संरचना पर पूंजी संचय का प्रभाव, जिसमें ये समझ शामिल हैः– (1) वर्ग गठन/रूपांतरण (छोटे मालिक से सर्वहारा या कुलक, जमींदार से व्यापारी, व्यापारी से उद्योगपति आदि), (2) आय वितरण (सकेंद्रण, पुनर्वितरण, आय का पुनर्गठन), (3) सामाजिक संबंधः श्रम बाजार संबंध (मुक्त मजदूरी, व्यापार संघ

सौदेबजी), अर्द्ध–प्रतिरोधिता (बाजार और राजनीतिक/सामाजिक नियंत्रण), प्रतिरोधिता (गुलाम, ऋण दासता)।

वृहत स्तर पर, पेट्रास का सुझाव है कि स्वतंत्रता के पश्चात् विकासशील देशों में राष्ट्रीय सत्ता पूंजी संचय के लिए तीन रणनीतियां या वर्ग गठबंधनों के प्रकार मे से चुनाव कर सकती है। सर्वप्रथम, नव–औपनिवेशिक रणनीति है जिसमें राष्ट्रीय सत्ता केंद्रीय पूंजीपति वर्ग के साथ स्वदेशी श्रम शक्ति के शोषण में सहभागी होती है। नव–औपनिवेशिक शासन के तहत धन और शक्ति विदेशी पूंजी के हाथों में केंद्रित होती है। दूसरे, राष्ट्रीय सत्ता स्वदेशी श्रम बल के शोषण और साम्राज्यवादी फर्मो को जाने वाले हिस्से की सीमा या उन्मूलन के आधार पर राष्ट्रीय विकास की रणनीति को निर्मित कर सकती है।

आय वितरण के प्रतिरूप के संदर्भ में, प्रमुख हिस्सा मध्यवर्ती स्तर (परिधि के शासी अभिजात वर्ग के रूप में) में जाता है। तीसरा, शासन स्वदेशी श्रम बल के साथ सहयोगी हो सकता है, विदेशी या यहां तक कि स्वदेशी उद्यम का राष्ट्रीयकरण कर सकता है, आय का पुनर्वितरण कर सकता है तथा आमतौर पर केंद्रीय पूंजी के खिलाफ राष्ट्रीय लोकलुभावन रणनीति बना सकता है। आय वितरण अधिक विविधतापूर्ण है, एवं नीचे की ओर प्रसारित हो रहा है। यद्यपि हम यहां विस्तृत विवरण में नहीं जा सकते है, पेट्रास के पास इन रणनीतियों के बीच संबंधों और नव–औपनिवेशिक शासन को समाप्त करने और अन्य को क्षीण करने में साम्राज्यवादी राज्य की भूमिका के बारे में बहुत कुछ है।

5.7 राज्य केंद्रीयकृत दृष्टिकोण

तुलनात्मक राजनीतिक अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में, 1960 के दशक के अंत में और सत्ता की अवधारणा को पुनर्जीवित करने के बाद 1970 के दशक के प्रारंभ में विकासवाद के विरूद्ध एक संघर्ष हुआ। राज्य के सिद्धांत में योगदान मुख्य रूप मार्क्सवादी विद्वानों ने किया। मार्क्स, एंजेल्य और लेनिन ने राज्य की अवधारणा को समाज में मौजूद वर्ग विभाजन के साथ स्व–संबंधो पर आधारित किया। हांलाकि, यह इस संबंध की प्रकृति है, जो मार्क्सवादियों के बीच बहस का विषय बना हुआ है। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रचलित एक परंपरा, सामुदायिक अध्ययनों से निकली है जो स्थिति और प्रतिष्ठा की रेखाओं के साथ शक्ति की पहचान करती है, जो जी.डब्लू डोमहॉफ (हू रूल्स अमेरिका? 1967, द पावर्स दैट बी 1979) के कार्यो से जुडी है। डोमहॉफ का मुख्य शोध यह है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में न केवल एक उच्च वर्ग (कॉरपोरेट पूंजीपति) मौजूद है, बल्कि यह भी कि यह वर्ग एक शासी वर्ग भी है। डोमहॉफ के योगदान को मार्क्सवाद के अन्तर्गत साधनवादी परंपरा के एक हिस्से के रूप में देखा गया है, जिसमें राज्य को शासक या प्रमुख वर्ग के साधन के रूप में देखा जाता हैं। यह परिप्रेक्ष्य मार्क्स और एंगेल्स की कम्युनिष्ट मैनिफेस्टो में व्यक्त की गई चिंता से निर्देशित है कि राज्य की कार्यकारी है ''लेकिन सम्पूर्ण पूंजीपति वर्ग के सामान्य मामलों के प्रबंधन के लिए एक समिति है''। हालांकि, डोमहॉफ के कामों को ध्यान से पढ़ने से पता चलता है कि वे साधनवादी दृष्टिकोण से सहमत नहीं और संयुक्त राज्य अमेरिका में राज्य को कारपोरेट वर्ग के हितों का प्रतिनिधित्व करते हुए देखा जाता है, जबकि एक ही समय में व्यक्तिगत पूंजीवादियों या

व्यापारिक अभिजात वर्ग के एक हिस्से के हितों का विरोध किया जाता है। एक दूसरी पंरपरा जो राज्य के संरचनात्मक दृष्टिकोण के रूप में वर्णित की गई है, के चारों ओर घूमती है और फ्रांसीसी मार्क्सवादियों के लेखन में पाई जाती है, विशेष रूप से निकोस पॉलंट्ज़स के लेखन में। पॉलंट्जस ने अपने प्रारंभिक कार्य ('पॉलिटिकल पावर एंड सोशल क्लासेस') में तर्क दिया कि पूंजीवाद में राज्य के कार्य मोटे तौर पर समाज की संरचनाओं द्वारा निर्धारित किए जाते हैं, न कि राज्य के पदों पर काबिज लोगों के द्वारा। विभाजित पूँजीपतियों द्वारा सदैव पूँजीवादी संरचना बनाये रखने तथा श्रामिक वर्ग की एकता के संयुक्त खतरे का मुकाबला करने के लिए राज्य अवेक्षाकृत स्वायत तरीके से कार्य करता है। पॉलंट्ज़स ने अपने बाद के काम (स्टेट, पावर एंड शोसलिज़म, 1980) में तर्क दिया कि पूंजीवादी राज्य स्वयं वर्ग संघर्ष का एक क्षेत्र है और जबकि यह राज्य सामाजिक–वर्ग संबंधों से मूर्त रूप लेता है, यह विवादास्पद भी है तथा इसलिए यह राज्य अंतर्गत वर्ग संघर्ष का उत्पाद है। राजनीति केवल राज्य के माध्यम से प्रभावशाली पूंजीपति वर्ग द्वारा वर्ग शक्ति का संगठन नहीं है और जो अधीनस्थ समूहों को संचालित करने और दबाने के लिए शक्ति का उपयोग करता है, यह राज्य की नीतियों को प्रभावित करने और राज्य के उपकरणों पर नियंत्रण के लिए बड़े सामाजिक आंदोलनों द्वारा संगठित संघर्ष का स्थल भी है।

पश्चिमी वैचारिक धरातल में राज्य सिद्धांत पर एक दिलचस्प बहस 1969–70 में न्यू लेफ्ट रिव्यू के पन्नों में हुई, जो राल्फ मिलिबैंड और पॉलंट्ज़स के बीच विचारों के आदान–प्रदान के रूप में हुई। जैसा कि पॉलंट्ज़स के दृष्टिकोण पर पहले ही ऊपर चर्चा की जा चुकी है, अब हम राल्फ मिलिबैंड के योगदान की संक्षिप्त परीक्षण करेगें। न्यू लेफ्ट रिव्यू में बहस मिलिबैंड की पुस्तक ''द स्टेट इन कैपिलिस्ट सोसाइटी : एन एनालिसिस ऑफ द वेस्टर्न सिस्टम ऑफ पॉवर (1969)'' के इर्द–गिर्द केंद्रित रही, जिसमें उन्होंने तर्क दिया कि शासक वर्ग की ओर से राज्य मार्क्सवादी तरीकों से कार्य कर सकता है, परन्तु वह स्वतः से कार्य नहीं करता है। राज्य एक वर्ग राज्य है, लेकिन इसके पास एक उच्च श्रेणी की स्वायत्तता और स्वतंत्रता होनी चाहिए यदि यह एक वर्ग राज्य के रूप में कार्य करता है। मिलिबैंड के काम में मुख्य तर्क यह है कि राज्य पूंजीवादी के हितों में कार्य कर सकता है, लेकिन हमेशा उनकी आज्ञा का पालन करें ये जरूरी नहीं। जबकि उपर्युक्त बहस मुख्य रूप से राज्य के पूंजीवादी समाजों की प्रकृति पर केंद्रित थी, जिसने कालांतर में विकासशील देशों में राज्य की प्रकृति पर बहस में जीवंत योगदान दिया। हमजा अलवी (द स्टेट इन पोस्ट कोलोनियल सोसाइटी : पाकिस्तान और बांग्लादेश, 1972) ने पाकिस्तान और बांग्लादेश में उपनिवेशवाद की बाद की स्थिति को 'अतिविकसित' के रूप में बताया (क्योंकि इसमे महानगरीय शक्तियों के निर्माण में स्वदेशी समर्थन की कमी थी) जो प्रभावी वर्गो से अपेक्षाकृत स्वायत्त बनी रही। 'नौकरशाही–सैन्य कुलीनतंत्र' द्वारा नियंत्रित राज्य, तीन उचित वर्गो के प्रतिस्पर्धी हितों के बीच मध्यस्थता करता है, अर्थात महानगरीय पूंजीपति, स्वदेशी पूंजीपति और भूमि वर्ग, जबकि एक ही समय में उन सभी की ओर सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कार्य करते है। जिसमें उनके हित अंतर्निहित है, अर्थात निजी संपत्ति की संस्था और उत्पादन के प्रभावी तरीके के रूप में पूंजीवादी प्रणाली। सापेक्ष स्वायत्तता का यह विषय बाद में प्रणव बर्धन (द पोलिटकल इकोनॉमी ऑफ डेवल्पमेंट, 1986) ने भारतीय राज्य के अपने विश्लेषण में लिया था, जहां राज्य

पूंजीवादी, जमीदारों और पेशेवरों द्वारा गठित प्रभावी गठबंधन से अपेक्षाकृत स्वायत्त है। हांलाकि, बर्धन के विचार में राज्य एक प्रमुख कर्त्ता है, जो 'विकल्पशील लक्ष्य निर्माण, एजेंडा निश्चित करने और नीति निष्पादन मे' मुख्य भूमिका का निर्वहन करता है। औपनिवेशिक काल के पश्चात् राज्य के विकास के विचार और अफ्रीकी समाजों के संदर्भ में राज्य एवं वर्ग के बीच संबंध के संदर्भ में सापेक्ष स्वायत्तता की अवधारणा को जॉन साऊन के काम मे ले जाया गया था, (द स्टेट इन पोस्ट–कोलिनियल सोसाइटीज़सः तंजानिया, 1974)।

इस्सा जी शिवजी ('क्लास स्ट्रगल इन तंजानिया', 1976) के काम में एक अन्य परिप्रेक्ष्य सामने आया, जिन्होंनं तर्क दिया कि राज्य तंत्र के कार्मिक स्वयं प्रमुख वर्ग के रूप में उभरते है क्योंकि वे अपने स्वयं के विशिष्ट वर्ग के हित को विकसित करते है और खुद को 'नौकरशाही पूंजीपति वर्ग' में परिवर्तित करते है। राज्य की प्रकृति और भूमिका पर बहस इन पत्रिकाओं (जनरलस्) में जारी रही– रिव्यू ऑफ अफ्रीकन पोलिटकल इकोनॉमी, जनरल ऑफ कंटेम्पोर्री एशिया, लैटिन अमेरिकन प्रस्पेक्टिव एंड द एनुअल वालूम ऑफ शोसलिस्ट में जारी रही, जो अर्थव्यवस्था, सामाजिक वर्गो और राजनीतिक ताकतों के रूप में हो रहे परिवर्तनों के प्रकाश में है।

5.8 वैश्वीकरण और नव-उदारवादी दृष्टिकोण

वैश्वीकरण के संदर्भ में, 'नव–उदारवादी' आधुनिकीकरण का दृष्टिकोण एक प्रभावी प्रतिमान के रूप में उभरा, जिसने परिधीय राज्यों में अल्पविकास का विश्लेषण और इससे निजात के उपायों की व्याख्या की। नव–उदारवादी प्रतिमान का प्रस्ताव है कि तीसरी दुनिया के परिधीय राज्यों का अल्पविकास मुख्यतः राज्य के नेतृत्व वाली विकास रणनीतियों की विफलता के कारण है, विशेष रूप से आयात–प्रतिस्थापन औद्योगीकरण। यह दृष्टिकोण मानता है कि ये देश राज्य नियंत्रण से मुक्त होकर खुली दुनिया की अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त कर सकते है। नव–उदारवादी दृष्टिकोण के केंद्र में राज्य और बाजार के बीच अलगाव या द्वंदवादद की धारणा निहित हैं। प्रतिमान राज्य की भूमिका को सीमित करता है जो सुशासन करने की परिस्थितियां 'प्रदान' करता है, जिसमें बाजार की ताकतें बिना किसी अवरोध के पनप सकती है। राज्य की इस समर्थकारी भूमिका में कानून और व्यवस्था का संरक्षण, निजी संपत्ति एवं अनुबंध की गांरटी और 'सार्वजनिक वस्तुओं का प्रावधान सन्निहित है। राज्य और बाजार के बीच एक प्राकृतिक द्वंदवाद की इस धारणा की आलोचना करते हुए, रे किले (शोयलोजी एंड डेवलप्मेंट : इम्पासेस एंड बियॉन्ड, 1995) बताते है कि दोनों के बीच अलगाव को प्राकृतिक रूप से नही लिया जा सकता है लेकिन यह ऐतिहासिक एवं सामाजिक रूप से निर्मित हुआ है। अलग–अलग राजनीतिक और आर्थिक रिक्त स्थान की उपस्थिति के बारे में बताते हुए वे कहते है कि पूंजीवादी सामाजिक संबंध अद्वितीय है, जो इंग्लैंड में उभरे और इसलिए इसे शेष 'उन्नत' पूंजीवादी दुनिया या विकासशील दुनिया के लिए सामान्यकृत नहीं किया जा सकता है। हांलाकि, विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) जैसी संस्थाओं ने अपनी संरचनात्मक और सुशासन की नीतियों के साथ समायोजित करने हेतु विकासशील दुनिया पर इस एक ऐतिहासिक नव–उदारवादी मॉडल को लागू करने के लिए आगे बढ़े। उदाहरणार्थ, विश्व

बैंक, यह दावा करता है कि विकासशील दुनिया की आर्थिक समस्याओं के लिए 'बहुत अधिक सरकार'(सरकार की आर्थिक नीतियों में अधिक दखलंदाजी) और बाजार की ताकतों की स्वतंत्र रूप से संचालन में विफलता को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। अतः, प्रस्तावित उपाय निजी क्षेत्र का प्रोत्साहन करना और 'राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं' का उदारीकरण करना है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, तीन प्रमुख नीति प्रस्तावों की सिफारिश की जाती हैः—(1) मुद्रा का अवमूल्यन (2) सीमित सरकार और निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन एवं (3) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का उदारीकरण। हांलाकि ये संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम, विशिष्ट देशों की सामाजिक—आर्थिक वास्तविकताओं और सामाजिक न्याय प्रदान करने में राज्य द्वारा निभाई जा रही भूमिका की अनदेखी करते है। इस भूमिका से राज्य की वापसी का तात्पर्य है कि बाजार की ताकतों को पूर्ण स्वतंत्रता, यानि की इस स्थिति में अब राज्य से संसाधनों के असमान वितरण को संतुलित करने की भूमिका निभाने की उम्मीद नहीं रह जाती है। इसके पश्चात् देशों के अन्तर्गत मौजूद पदानुक्रमों और गहरे हो जाते है एवं कमजोर वर्गो, विशेषकर महिलाओं और/या कामगार वर्ग के शोषण में वृद्धि हो जाती है। इसी प्रकार, अतंराष्ट्रीय सहायता देने वाली संस्थाएं 'सुशासन' की धारणा के तहत एवं नवउदारवादी एजेंडे के अन्तर्गत ऐसी शर्ते लगाती है जिसमें बाजार की शक्तियां फले—फूले, जिसको संदेहास्पद रूप से देखा जाता हैं। उदाहरणार्थ, किले बताते है कि उप—सहारन अफ्रीका में संरचनात्मक समायोजन की विफलता को विश्व बैंक ने वहां सुशासन की कमी के रूप में, 'सार्वजनिक जवाबदेही', 'बहुलवाद' और 'कानून के शासन' को निर्दिष्ट करने में विफल रहने को बताया। ये सभी वजहों को विश्व बैंक (गवर्नेसं एंड डेवलप्मेंट, वर्ल्ड डेवलप्मेंट, 1992) द्वारा उद्धृत किया गया है, विश्व बैंक का मानना है कि 'सुशासन' के महत्वपूर्ण घटक को समाज के निचले वर्गो की भागीदारी के बिना प्राप्त किया जा सकता है। नवउदारवादी एजेंडे के अन्तर्गत सुशासन की अवधारणा एक ऐसी स्थिति की परिकल्पना करती है जहां लोकतंत्र और स्वतंत्रता को एक दूसरे के विरोधी के रूप में देखा जाता है। स्वतंत्रता के तहत निजी संपत्ति का संरक्षण, मुक्त बाजार और नकारात्मक स्वतंत्रता के प्रावधान जैसे बोलने, संघ बनाने और स्वतंत्र रूप से विचरण करने के अधिकार शामिल होने चाहिए, जो दूसरे शब्दों में, बाजार अर्थव्यवस्था को संरक्षित करते हैं। दूसरी ओर, लोकंत्र को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है, क्योंकि ये राजनीतिक क्षेत्र से संबंधित हैं जहां भागीदारी और संसाधनों के वितरण की मांग की जाती है। बाद में, यह आशंका व्यक्त की गई कि आर्थिक क्षेत्र को ताकत देने हेतु आवश्यक स्वतंत्रता को खतरे में डाला जा सकता है। लोकतंत्र पर स्वतंत्रता को प्राथमिकता देना, जैसा कि नव—उदारवादी प्रतिमान द्वारा निर्धारित किया गया है, इस प्रकार यह लोगों की विकास संबंधी जरूरतों को पूरा करने में विफल हो जाता हैं।

बोध प्रश्न 2

नोटः क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) उत्पादन की विधि से क्या अभिप्राय है? उत्पादन सिद्धांत की विधा की अभिव्यक्ति के अनुसार तीसरी दुनिया में सामाजिक–आर्थिक प्रकृति की वास्तविकता क्या है?

....

....

....

....

....

....

2) नव–उदारवादी दृष्टिकोण के प्रमुख तत्व क्या है?

....

....

....

....

....

....

5.9 सारांश

राजनीतिक अर्थव्यवस्था का दृष्टिकोण राष्ट्रों और सामाजिक–राजनीतिक घटनाओं के बीच के संबंधों को समझने और समझाने के लिए एक विघटन के रूप में उभरकर आया। इस दृष्टिकोण का आधार राजनीति और अर्थशास्त्र के कार्यक्षेत्र के बीच के संबंध की धारणा थी। पिछले कुछ दशकों में उभरने वाले विभिन्न व्याख्यात्मक ढ़ांचों में प्रमुख हैं, आधुनिकीकरण, अल्पविकास और निर्भरता, वैश्विक प्रणालियाँ, उत्पादन के तौर–तरीकों का निरूपण, वर्ग विश्लेषण, राज्य केन्द्रित विश्लेषण और नवउदारवादी विश्लेषण। हालांकि, इन सभी रूपरेखाओं के विश्लेषणात्मक उपकरणों में विविधता है, लगभग सभी के पास 'विकास' उनकी महत्वपूर्ण समस्या है। तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में इस समस्या के बारे अधिक जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया में, उन्होंने अनिवार्य रूप से विश्व को एक पदानुक्रमित समभाग के रूप में देखा है। वे, हालांकि, आर्थिक शक्तियों और अर्थव्यवस्था तथा राजनीति के सहजीवन में जिस प्रकार से बाहरी ताकतों के संबंध में काम करते हैं, वे जटिलताओं में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

5.10 प्रमुख शब्द

वर्ग राज्य (क्लास स्टेट): – एक राज्य जो एक विशेष वर्ग के हितों की रक्षा के लिए कार्य करता है। मार्क्सवादी शब्दावली में, इसका उपयोग वर्तमान उदारवादी राज्यों की व्याख्या करने के लिए किया जाता है, जोकि पूंजीवादी वर्ग केहितों की रक्षा करते हैं।

संरचनात्मक समायोजन :– अर्थशास्त्र में सुधार जैसे मुद्रा अवमूल्यन, निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन, अतर्राष्ट्रीय व्यापार का उदारीकरण आदि।

उत्पादन का तरीका:– यह उस तरीके को संदर्भित करता है जिस तरीके से एक समाज में सामान का उत्पादन और वितरण किया जाता है। इसमें मुख्यतः दो पहलू शामिल हैं : उत्पादन की शक्तियाँ और उत्पादन के संबंध। उत्पादन की शक्तियों में वे सभी तत्व शामिल होते हैं जो उत्पादन में एक साथ लाए जाते हैं – भूमि या स्थान, कच्चा माल, और ईंधन से लेकर मानव कौशल और श्रम से लेकर मशीन, औजार और कारखाने तक। उत्पादन के संबंध में, लोगों और लोगों के बीच के रिश्तों और उत्पादन की शक्तियों से लोगों के रिश्ते शामिल होते हैं, जिसके माध्यम से यह निर्णय किया जाता है कि उत्पादों का क्या करना है।

5.11 संदर्भ

चट्टोपाध्याय, परेश. (1974). 'पॉलिटिकल इकोनॉमी : वहॉट इज़ इन नेम?', मंथली रिव्यू, अप्रैल।

चिलकोते, एच रोनाल्ड़. (1994). थ्योरीज़ ऑफ कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स, वेस्टव्यू प्रेस, 1994।

चिलकोते, एच रोनाल्ड़.(1989). 'ऑल्टरनेटिव अप्रोचिज़ टू कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स' इन हॉवर्ड जे. विर्दा(एड), न्यू डायरेक्शनस् इन कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स, वेस्टव्यू प्रेस, बोल्डर एंड लंडन।

केली, रे. (1995). साशिओलोजी एंड डेवलप्मेंट, यूसीएल प्रेस, लंडन।

लिमक्यूको, पीटर एंड ब्रूस मैक्फारलेन. (1983). नीओ–मार्कस्सिट थ्योरीज़ ऑफ डेवलप्मेंट. क्रूम हेल्म एंड सेंट मार्टिन प्रेस, लंड़न।

5.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) यह संवर्धन के एक विकासपरक मॉडल पर आधारित है; जहाँ पारंपरिक संमाज विकास के विभिन्न चरणों से गुज़रता है। विकास के ये चरण मोटे तौर पर सभी राष्ट्रों–राज्यों के समान है। युद्ध के बाद के विश्वके संदर्भ में, यह अनिवार्य माना जाता था कि आधुनिक पश्चिम को पारंपरिक तीसरी दुनिया में आधुनिकता के अवस्थांतरण को बढ़ावा देने में मदद करनी चाहिए।

2) चूंकि वालरस्टीन ने विश्व व्यवस्था पर ध्यान केंद्रित किया, वह विश्लेषण के एकमात्र इकाई के रूप में राष्ट्र–राज्य पर ध्यान कंद्रित करने के लिए आधुनिकीकरण सिद्धांत की आलोचना करता है क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय संरचनाओं की भूमिका, जो स्थानीय और राष्ट्रीय विकास को बाधित करती है, उनकी अवहेलना कर रहे हैं। वह आधुनिकीकरण सिद्धांत की मूल धारणा को भी खारिज करता है जोकि सभी देशों केलिए विकासपरक विकास का एकमात्र रास्ता है।

बोध प्रश्न 2

1) उत्पादन की विधि का अर्थ है कि कैसे एक समाज में माल का उत्पादन और वितरणकिया जाता है। यह उस आर्थिक स्तर को भी संदर्भित करता है जो यह निर्धारित करता हैं कि सामाजिक गठन करने वाले विभिन्न संरचित संपूर्णता में से कौन सा स्तर प्रमुख है। विकासशील देशों में आम तौर पर उत्पादन की पूंजीवादी विधि के साथ पूर्व–पूंजीवादी विधि समकालीन होती है।

2) नव–उदारवादी दृष्टिकोण अवधारणाओं के अध्ययन और मूल्यांकन पर आधारित है जैसे सुशासन, संरचनात्मक समायोजन, राज्य की वापसी, वैश्वीकरण इत्यादी।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY